हाटकेश्वरी

वार्षिक पत्रिका 2022-23 अंक 34

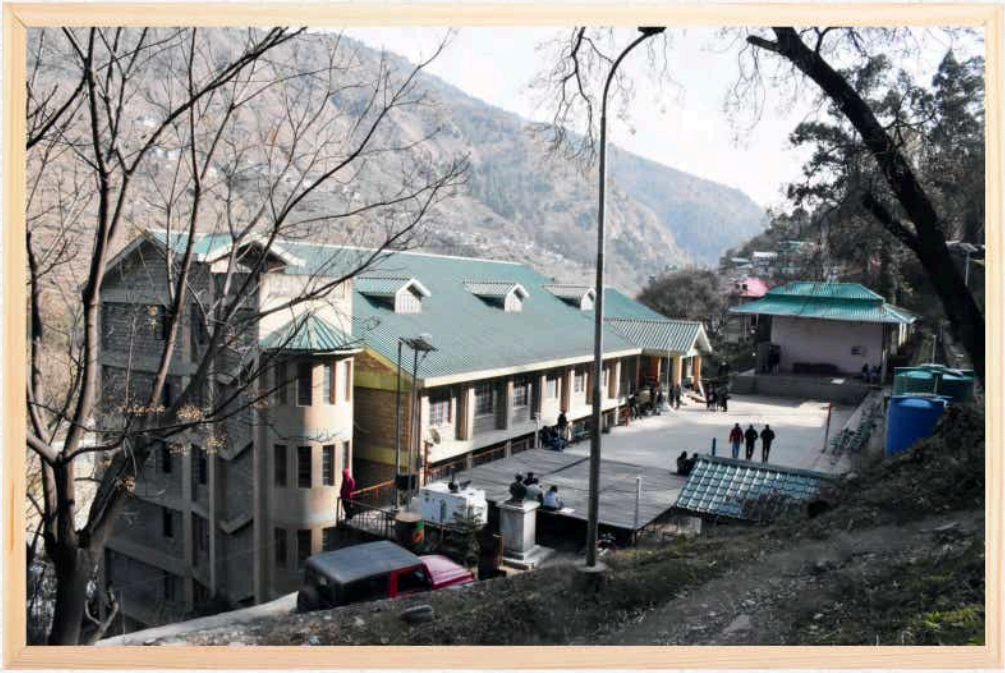

लाल बहादुर शास्त्री राजकीय महाविद्यालय

सरस्वती नगर (शिमला)

Http://www.lbsgcsnagar.edu.in

gcsnagar25@rediffmail.com

माननीय शिक्षा मंत्री के साथ प्राचार्य महोदय और शिक्षक व गैर-शिक्षक वर्ग

पारितोषिक वितरण समारोह के अवसर पर लिया गया शिक्षक-वर्ग का एक छायाचित्र

प्राचार्य की कलम से

अत्यंत हर्ष के साथ महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'हाटकेश्वरी' का सत्र 2022-23 का अंक प्रस्तुत किया जा रहा है। पिछले अंकों की भाँति इस अंक को भी विद्यार्थियों की उत्कृष्ट रचनाओं से सज्जित करके संग्रहणीय बनाने का पूरा प्रयास किया गया है।

साहित्य का मानव सभ्यता से बहुत गहरा संबंध है। प्राचीन समय में जब लिपि और लेखन कला का विकास नहीं हो पाया था, तो साहित्यिक रचनाओं को बड़ी तत्परता से याद किया जाता था और अगली पीढ़ी को भी मौखिक रूप से हस्तांतरित किया जाता था। मानव-सभ्यता के विकास के साथ-साथ लिपि और लेखन-कला का भी विकास हुआ और साहित्यिक रचनाओं को लिख कर संरक्षित किया जाने लगा।

साहित्यिक रचनाएँ न केवल मानव-मन के द्वंद्वों, संघर्षों, अनुभूतियों और कल्पनाओं को अभिव्यक्ति देती हैं, बल्कि इनसे तत्कालीन इतिहास, भूगोल, मनुष्यों की जीवन शैली, रीति-रिवाज़ों और परंपराओं पर भी प्रकाश पड़ता है। पुराने समय में एक कवि अथवा लेखक को सम्मान देते हुए उसे प्रजापति कहा जाता था, क्योंकि वो भी प्रजापति ब्रह्मा की तरह कुछ नया रचता है और समाज को समर्पित करता है। भारतभूमि ने महाकवि कालिदास, रवींद्रनाथ टैगोर, तुलसीदास, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, शरतचंद्र, भारतेंदु हरिश्चंद्र, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे नामचीन साहित्यकारों को जन्म दिया है, जिनका देश और विदेश में बहुत सम्मान है। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर को तो 'विश्वकवि' कहा जाता है।

वर्तमान समय में भी अच्छा साहित्य रचा जा रहा है, हालाँकि उसका परिमाण कम है। मोबाइल, कंप्यूटर, टीवी, इंटरनेट आदि के हावी हो जाने के कारण साहित्यिक रचनाओं के गंभीर लेखक और पाठक दिनोंदिन कम होते जा रहे हैं। ऐसे में साहित्यिक गतिविधियों को विभिन्न स्तरों पर संचालित करने की बहुत आवश्यकता है। एक विद्यार्थी को अच्छा पाठक होना चाहिए और उसे भाषा तथा साहित्य की समझ भी होनी चाहिए। इस हेतु हम सभी को मिल कर अपेक्षित प्रयास करने चाहिए। महाविद्यालय की 'हाटकेश्वरी' पत्रिका ऐसे ही प्रयास को बल प्रदान करने वाला एक उपक्रम है, जिसमें विद्यार्थियों की छोटी-बड़ी और परिपक्व-अपरिपक्व सभी रचनाओं को स्थान दिया जाता है और उनके भीतर साहित्यिक अभिरुचि जागृत करने की कोशिश की जाती है।

अंत में मैं पत्रिका के इस अंक के मुख्य संपादक, विभिन्न अनुभागों के शिक्षक -संपादकों व छात्र संपादकों और विभिन्न रचनाकारों को साधुवाद देता हूँ कि उनके सार्थक प्रयासों से हाटकेश्वरी के इस नवीन अंक का प्रकाशन समय पर संभव हो पाया और पाठकों तक पहुँच सका।

डॉ० प्रेम प्रकाश चौहान

प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय महाविद्यालय

सरस्वती नगर, शिमला हि०प्र०

सम्पादकीय

महाविद्यालय परिवार के लिए ये हर्ष का विषय है कि 'हाटकेश्वरी' पत्रिका का 34वां अंक प्रकाशित हो रहा है। इस अंक में भी पिछले अंकों की तरह विद्यार्थियों द्वारा रचित साहित्यिक रचनाओं को स्थान दिया जा रहा है। साहित्य की अलग-अलग विधाओं की रचनाओं जैसे - लेख, निबंध, कविता, संस्मरण, यात्रा-वृत्तान्त, पहेलियाँ, चुटकुले आदि को इस अंक में संकलित किया गया है और ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित तथ्यों और उपयोगी जानकारियों को भी इसमें सम्मिलित किया गया है।

वर्तमान युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है। ऐसे में नयी-पुरानी साहित्यिक रचनाएँ ई-बुक और पीडीएफ आदि रूपों में सरलता से उपलब्ध हैं और ऑनलाइन खरीददारी के माध्यम से थोड़ी सी कोशिश करके डाक और कूरियर सेवा द्वारा भी पुस्तकें मँगवाई जा सकती हैं। आधुनिक यंत्रों के आ जाने से मुद्रणालय पहले की अपेक्षा अधिक विकसित हो गए हैं और पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों का प्रकाशन भी सुगम हो गया है। पहले से कहीं अधिक तेज़ी से और पहले से कहीं अधिक आकर्षक पाठ्य-सामग्री अब उपलब्ध है। लेखकों के लिए भी अपनी रचनाओं के प्रकाशन के लिए अनेक ऑनलाइन और ऑफलाइन पटल और उपक्रम विद्यमान हैं।

इन सब सुविधाओं के होते हुए भी विडंबना ये है कि अच्छे स्तर का साहित्य बहुत कम प्रकाशित हो रहा है और अच्छे साहित्य के पाठक निरंतर कम होते जा रहे हैं। इसका कारण है भाषा के प्रति सजगता का अभाव, संवेदनशीलता का घटता स्तर, प्रकृति के सान्निध्य की कमी, भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में चिंतन-मनन के लिए समय न मिल पाना आदि। इसके साथ-साथ इंटरनेट और टीवी के माध्यम से परोसे जाने वाले अमर्यादित और स्तरहीन कार्यक्रम भी रचनात्मकता के विनाश का कारण बनते जा रहे हैं। इन सबके कारण साहित्यिक विधाओं के प्रति युवाओं का ज्ञान, रुझान और गम्भीरता संकट में पड़ गई है। हालाँकि अनेक स्तरों पर विभिन्न आयोजनों, कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवाओं में साहित्यिक अभिरुचि जागृत करने के प्रयास किए जा रहे हैं, किंतु वे नाकाफ़ी हैं।

प्रस्तुत अंक भी पिछले अंकों की भाँति युवाओं के विचारों और कल्पनाओं और अनुभवों को साझा करने और उनकी रचनाशीलता को मंच प्रदान करने का एक संगठित प्रयास है। इस अंक को स्तरीय बनाने के लिए नवोदित लेखकों और उनके मार्गदर्शक शिक्षकों ने कठिन श्रम किया है। आशा है पाठकों को इस अंक में संकलित रचनाएँ प्रभावित करेंगी और युवा लेखकों को सराहना और साधुवाद मिलेगा।

अंत में मैं प्राचार्य महोदय, शिक्षक संपादकों, छात्र संपादकों, सभी युवा रचनाकारों को इस अंक के सफल संपादन, प्रकाशन और प्रसार के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

प्रो० रवि प्रकाश

मुख्य संपादक

संपादक मंडल

डॉ० प्रेम प्रकाश चौहान

(संरक्षक)

प्रो० रवि प्रकाश

(हिंदी अनुभाग)

डॉ० पूनम चौहान

(विज्ञान अनुभाग)

डॉ० हर्ष भारद्वाज

(अंग्रेज़ी अनुभाग)

डॉ० रोहित मोकटा

(पहाड़ी अनुभाग)

प्रो० संदीप ठाकुर

(वाणिज्य अनुभाग)

श्री चंद्रमोहन

(कंप्यूटर व प्रौद्योगिकी अनुभाग)

केंद्रीय छात्र संघ के पदाधिकारी

तेजस्विनी सिंह (प्रधान)

पल्लवी धृजटा (उप-प्रधान)

प्रिया (सचिव)

तविशी सूद (संयुक्त सचिव)

विशिष्ट उपलब्धियों वाले विद्यार्थी

अंकिता चौहान - 26 जुलाई से 2 अगस्त 2022 तक धर्मशाला में आयोजित थल सेना कैम्प में भाग लिया। 26 जनवरी 2023 को दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया। इसके अलावा गायन और नृत्य से जुड़े विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी सक्रिय रहीं।

सिमरन खेउटा - अटल बिहारी वाजपेयी संस्थान, नारकंडा में 12 सितंबर से 21 सितंबर 2022 तक तक नेशनल एडवेंचर कैम्प में भाग लिया। हुबली धारवाड़, कर्नाटक में 12 जनवरी से 16 जनवरी 2023 तक राष्ट्रीय युवा महोत्सव में भाग लिया।

सौहार्द सोनी - अटल बिहारी वाजपेयी संस्थान, नारकंडा में 12 सितंबर से 21 सितंबर 2022 तक तक नेशनल एडवेंचर कैम्प में भाग लिया।

राहुल सटेटा - हुबली धारवाड़, कर्नाटक में 12 जनवरी से 16 जनवरी 2023 तक राष्ट्रीय युवा महोत्सव में भाग लिया।

अंकिता - 26 जनवरी 2023 को शिमला में राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया।

रंजीता - 26 जनवरी 2023 को शिमला में राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया।

पूनम - जनवरी 2023 में रिवालसर में आयोजित प्री-आरडी कैम्प में भाग लिया।

पल्लवी ठाकुर - कर्नाटक में 21 से 27 दिसंबर तक आयोजित अंतरराष्ट्रीय जम्बूरी कैम्प में भाग लिया।

तुषार शर्मा - कर्नाटक में 21 से 27 दिसंबर तक आयोजित अंतरराष्ट्रीय जम्बूरी कैम्प में भाग लिया।

प्रिंस लूटा - इंटर-कॉलेज बॉक्सिंग प्रतियोगिता में रजत पदक प्राप्त किया।

दिविश - सर्वश्रेष्ठ छात्र एथलीट

आयुषी शर्मा - सर्वश्रेष्ठ छात्रा एथलीट

विभिन्न समितियों/ क्लबों / इकाइयों के प्रतिनिधि

एनसीसी इकाई के प्रतिनिधि / पदाधिकारी

सौरव लाखटा
(सीनियर अंडर ऑफिसर)

अंकिता चौहान
(अंडर ऑफिसर)

धीरज
(अंडर ऑफिसर)

मुस्कान बरौटा
(अंडर ऑफिसर)

एनएसएस इकाई के प्रतिनिधि

सुशील कुमार
(छात्र प्रतिनिधि)

प्रियांशी शकटेट
(छात्रा प्रतिनिधि)

रोवर्स एंड रेंजर्स इकाई के प्रतिनिधि

तुषार शर्मा
(हैड रोवर)

पल्लवी ठाकुर
(हैड रेंजर)

इको क्लब के प्रतिनिधि

उपासना (अध्यक्ष)

विज्ञान सोसायटी के प्रतिनिधि

हेमंत मास्टा (अध्यक्ष)

रेड रिब्बन क्लब के प्रतिनिधि

आस्था फ्रीवांटा (अध्यक्ष)

इंग्लिश साहित्य सोसायटी के प्रतिनिधि

महक शर्मा (अध्यक्ष)

अनिता (उपाध्यक्ष)

रीटा ठाकुर (सचिव)

शैविक शर्मा (कोषाध्यक्ष)

पारुल जेहटा (संयुक्त सचिव)

तमन्ना (अतिरिक्त संयुक्त सचिव)

'दर्शनशास्त्र परिषद' के पदाधिकारी

डॉ0 पूनम मेहता (अध्यक्ष)

शालू (उपाध्यक्ष)

समीक्षा (सचिव)

सलोनी (संयुक्त सचिव)

अगस्त 2022 में हर घर तिरंगा अभियान व विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण और पौधारोपण

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताएँ व अन्य गतिविधियाँ - 18 अगस्त 2022

प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए आयोजित प्राचार्य महोदय का संबोधन सत्र

25 अगस्त 2022

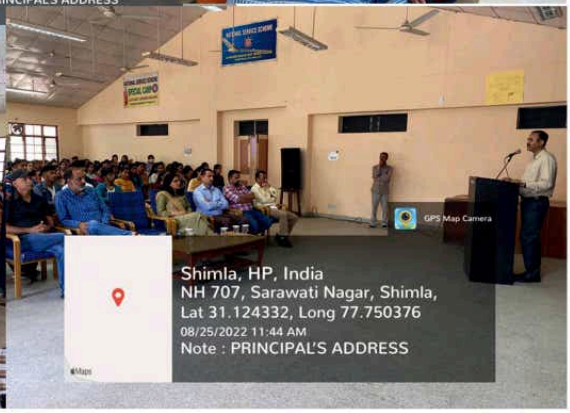

उपमंडल दंडाधिकारी जुब्बल श्री राजीव सांख्यान की विशेष उपस्थिति

27 अगस्त 2022

खेल दिवस पर आयोजित प्रतियोगिताएँ - 29 अगस्त 2022

'शिक्षक दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ

5 सितंबर 2022

महाविद्यालय की अकादमिक कमेटी द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएँ

10 सितंबर 2022

हिंदी दिवस समारोह की झलकियाँ - 14 सितंबर 2022

प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए आयोजित फ्रेशर्स पार्टी की झलकियाँ - 21 सितंबर 2022

एनएसएस स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम व रक्तदान शिविर - 24 सितंबर 2022

एनएसएस द्वारा आयोजित विशेष स्वच्छता अभियान - 1 सितंबर 2022

स्वीप (SVEEP) द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रम - 15 अक्टूबर 2022

रसायन विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित अनुभवात्मक अधिगम कार्यशाला

17 से 20 अक्टूबर 2022

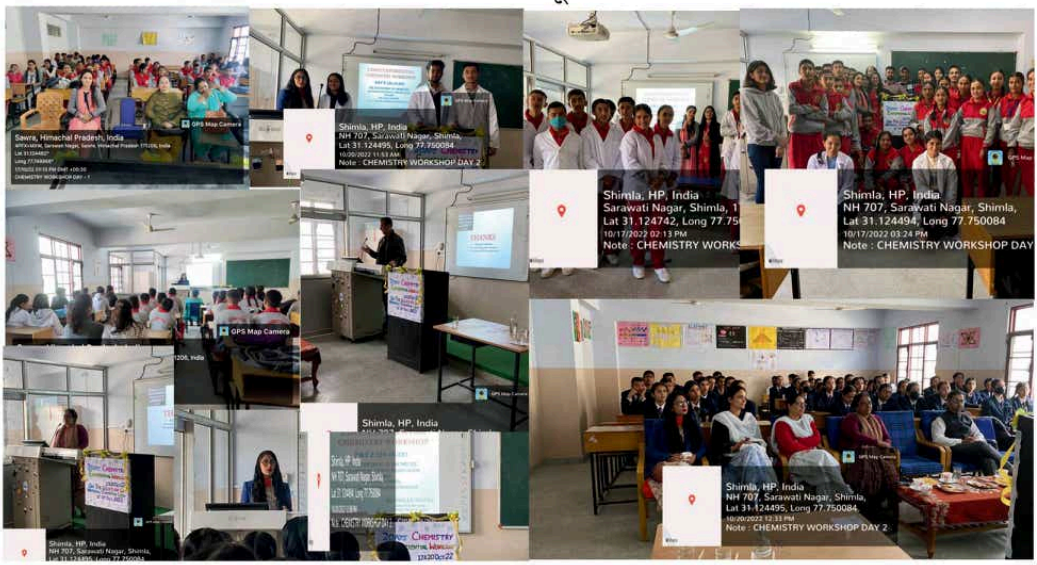

'ग्रीन दीवाली' के प्रति जागरूकता हेतु रैली - 19 अक्टूबर 2022

केंद्रीय छात्र परिषद का शपथ-ग्रहण समारोह - 29 अक्टूबर 2022

'नैक प्रत्यायन टीम' के सदस्यों का दो दिवसीय दौरा - 1 और 2 नवंबर 2022

एनसीसी इकाई का सात दिवसीय शिविर - 8 से 14 नवंबर 2022

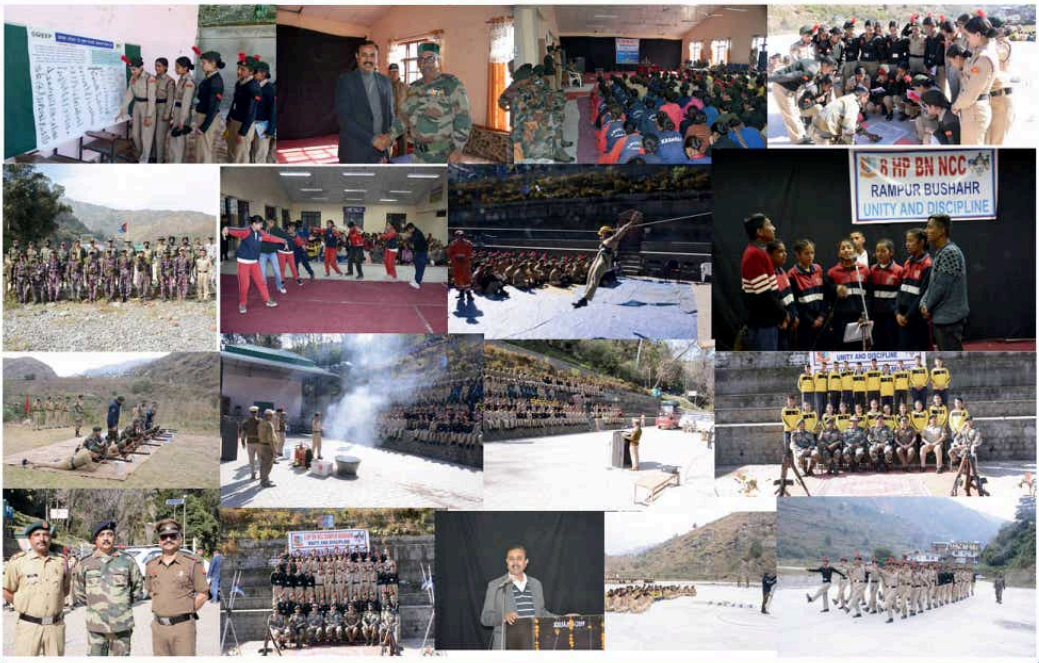

वाणिज्य विभाग द्वारा आयोजित शैक्षणिक भ्रमण - नवंबर 2022

दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित 'दर्शन समागम' - 30 नवंबर 2022

'एड्स दिवस' पर आयोजित विशेष समारोह - 1 दिसंबर 2022

एनडीआरएफ की टीम द्वारा आपदा प्रबंधन से संबंधित विशेष प्रदर्शन - 19 दिसंबर 2022

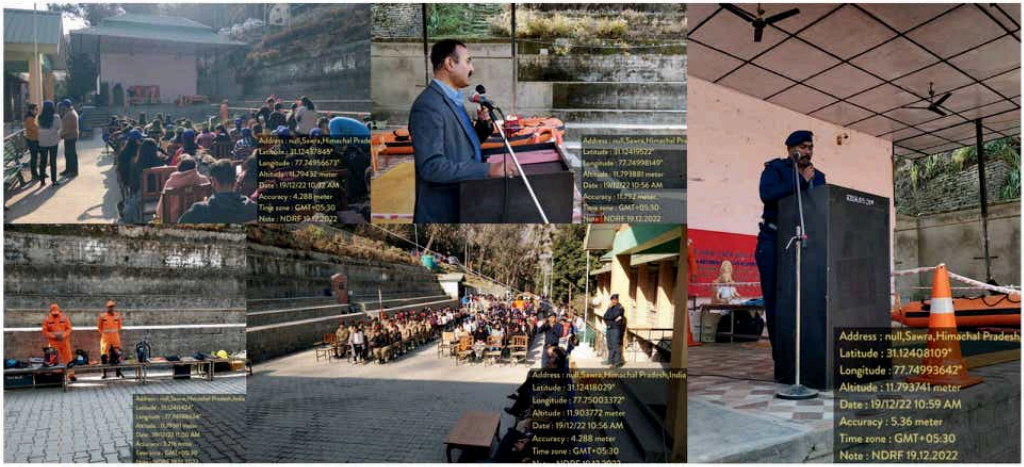

निम्बस अकादमी के प्रतिनिधियों द्वारा आयोजित विशेष सत्र - 20 दिसंबर 2022

एनएसएस इकाई द्वारा आयोजित सात दिवसीय शिविर - 21 से 27 दिसंबर 2022

अंग्रेज़ी विभाग द्वारा आयोजित साहित्य उत्सव - 21 फरवरी 2023

वार्षिक एथलेटिक मीट - 24 फरवरी 2023

विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित विज्ञान उत्सव - 1 मार्च 2023

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस - 8 मार्च 2023

चितकारा विश्वविद्यालय और बद्दी विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों द्वारा आयोजित विशेष प्रेरणा सत्र - मार्च 2023

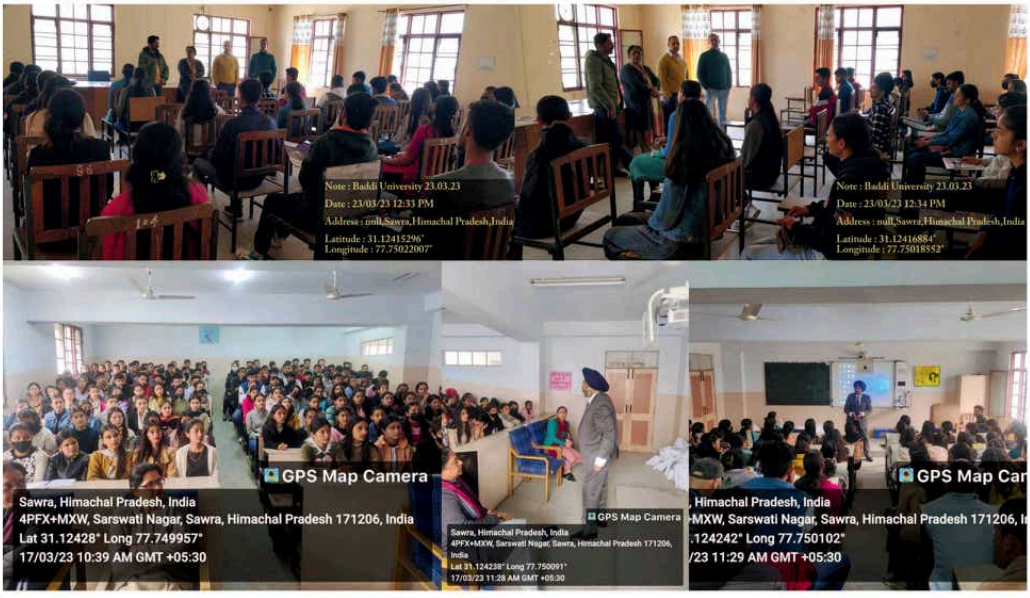

वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह - 10 मार्च 2023

अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए आयोजित विदाई समारोह - 28 मार्च 2023

समाचार-पत्रों में सरस्वती नगर महाविद्यालय

एनएसएस स्वयंसेवियों दिया स्वच्छता का संदेश

सरस्वती नगर को मिलेगा उत्कृष्ट महाविद्यालय का दर्जा

शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर ने बतौर मुख्यातिथि की वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह में शिरकत

कांग्रेस मंडल ने किया स्वागत

EDITION: SHIMLA KESARI, PAGE NO. 4

साक्षी और प्रांजल की टीम रही विजयी

EDITION: SHIMLA KESARI, PAGE NO. 1

एन.सी.सी. छात्रा अकिता गणतंत्र

D,28 DECEMBER 2022
EDITION: SHIMLA KESARI, PAGE NO. 3

सरस्वती नगर महाविद्यालय में एन.एस.एस. शिविर सम्पन्न

...वती नगर कॉलेज में रेड ...ब ने विश्व एड्स दिवस म...

अमर उजाला

आस्था, मृदुल, आदित्य व आर्यन की टीम पहले स्थान पर रही

दिल्ली में गणतंत्र दिवस परेड का हिस्सा बनेगी अंकिता

रोहडू। पीजी कॉलेज सरस्वतीनगर की छात्रा अंकिता दिल्ली में होने वाली गणतंत्र दिवस परेड का हिस्सा बनेगी। अंकिता कॉलेज की पहली छात्रा है, जिसका चयन हुआ है।

अंकिता बीए तृतीय वर्ष की छात्रा है और साथ ही एनसीसी कैडेट भी है। वह मूल रूप से भोलाड़ गांव की रहने वाली है। उसका चयन बतौर एनसीसी कैडेट उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के आधार पर हुआ है। अंकिता का चयन परेड के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए भी हुई है। अंकिता के पिता सुरत सिंह भी बेटी की उपलब्धि से काफी खुश हैं। सरस्वतीनगर कॉलेज के एनसीसी प्रभारी डॉ. रोहित मोक्टा ने बताया कि अंकिता कालेज की पहली छात्रा है...

सरस्वती नगर महाविद्यालय में दर्शन समागम का आयोजन

MON,28 NOVEMBER 2022
EDITION: SHIMLA KESARI, PAGE NO. 2

यू-ट्यूब और ब्लॉगिंग में रोजगार पर विशेष सत्र आयोजित

एन.सी.सी. का 7 दिवसीय शिविर संपन्न, 350 कैडेट्स ने लिया भाग

सरस्वती नगर कॉलेज में प्रथम वर्ष के छात्रों के स्वागत में फ्रेशर्स डे का हुआ आयोजन

दर्शन समागम का आयोजन

THU,17 NOVEMBER 2022
EDITION: SHIMLA KESARI, PAGE NO. 3

सरस्वती नगर महाविद्यालय ने नैक प्रत्यायन में प्राप्त किया बी ग्रेड

SAT,12 NOVEMBER 2022
EDITION: SHIMLA KESARI, PAGE NO. 2

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय सरस्वती नगर में कैंप शुरू

...ती नगर महाविद्यालय में भी लिया सुविधाओं का जायजा

निरीक्षण और मूल्यांकन का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया

जुब्बल के मनजीत सिंह ने पास किया यूजीसी जेआरएफ

सरस्वतीनगर महाविद्यालय में केंद्रीय छात्र संघ ने ली शपथ

SAT,05 NOVEMBER 2022
EDITION: SHIMLA KESARI

रोहडू : लाल बहादुर शास्त्री राजकीय महाविद्यालय सरस्वती नगर में नैक की पीयर टीम और...

350 एनसीसी कैडेट्स को सिखाई फायरिंग

...सरस्वती नगर कॉलेज में शुरू होंगे नए कोर्स

वार्षिक कार्यक्रम में पहुंचे शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर का ऐलान

THU,22 SEPTEMBER 2022
EDITION: SHIMLA KESARI, PAGE NO. 3

THU,22 SEPTEMBER 2022
EDITION: SHIMLA KESARI, PAGE NO. 3

...ल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय में फ्रैशर-डे आयोजि...

...तियोगिताओं में प्रथम वर्ष के 28 विद्यार्थियों ने भाग लिया

...रोहडू, 21 सितम्बर (बशहर): लाल ...दुर शास्त्री राजकीय महाविद्यालय सरस्वती ...में प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के स्वागत के ...फ्रैशर-डे का आयोजन किया गया। इस ...जन में प्राचार्य डा. प्रेम प्रकाश चौहान ने ...मुख्यातिथि शिरकत की। समारोह का ...जन कालेज परिसर में किया गया। प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने इस समारोह ...तीर प्रतिभागी और बतौर दर्शक बढ़-चढ़ ...भाग लिया। इस अवसर पर मिस फ्रैशर- और मिस्टर फ्रैशर-डे प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में प्रथम वर्ष के 28 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों की प्रतिभा और उनके कौशल को परखने के लिए बनाए गए निर्णायक मंडल में प्रोफिसर ललिता रावत, प्रोफेसर पूनम मेहता, प्रोफिसर राजेंद्र कपूर और प्रोफिसर प्रवीन शर्मा शामिल रहे। प्रतियोगिताओं के बीच में समारोह को एकरसता को दूर करने के लिए कुछ सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी रखी गईं।

समारोह में मिस फ्रैशर-डे का खिताब स्नेहल ने जीता। प्रियंका फर्स्ट रनरअप और कशिश सैकेंड रनरअप चुनी गईं। बबुल को मिस ब्यूटीफुल स्माइल और तमन्ना को मिस फैशन क्वीन का टाइटल ...गया। छात्रों में निशांत ने मिस्टर फ्रैशर टाइटल जीता। आयुष फर्स्ट रनरअप और ... सैकेंड रनरअप रहे। समीर राजा को मिस्टर परफैक्ट का ... दिया गया। इस अवसर पर प्राचार्य ... प्रकाश ने सभी प्रतिभागियों के उत्सा... उनकी प्रतिभा की प्रशंसा की। उन्होंने ... जीवन में अनुशासन और विनम्रता के ... पर भी प्रकाश डाला और इस तरह के आ... के लिए शिक्षकों और विद्यार्थिय... बधाई दी। इस समारोह में मंच संचाल... कार्य योगेश्वरी, राधव, मुस्कान और महा... ने किया।

रोहडू : लाल बहादुर शास्त्री राजकीय महाविद्यालय सरस्वती नगर में मिस फ्रैशर और मिस्टर

अंतिम वर्ष की छात्रा प्रियांशी द्वारा बनाए गए कुछ सुंदर चित्र

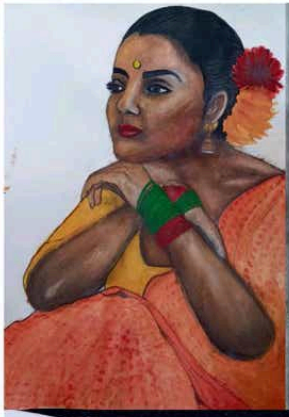

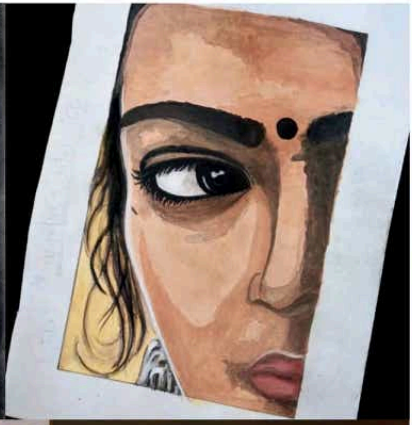

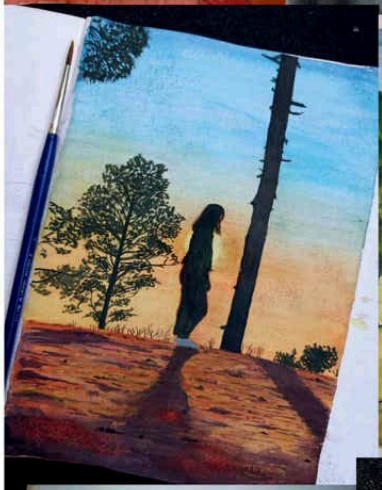

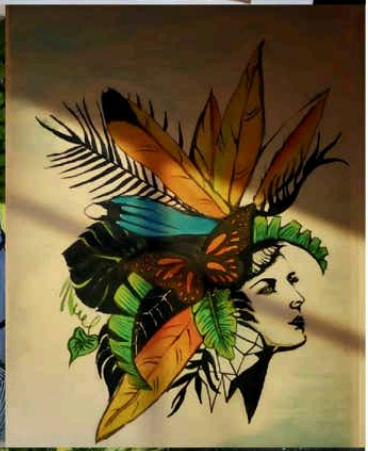

हिंदी अनुभाग

संपादकीय

प्रिय पाठको!

'हाटकेश्वरी' पत्रिका के नवीनतम अंक में 'हिंदी अनुभाग' के अंतर्गत कुछ स्तरीय और पठनीय रचनाओं को प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। इस अनुभाग के अंतर्गत हमने अधिकांशतः विद्यार्थियों द्वारा रचित संस्मरणों को स्थान दिया है। महाविद्यालय में अध्ययनशील विद्यार्थियों की महाविद्यालय से जुड़ी हुई अनेक यादें होती हैं और ये यादें उनके अंतस्तल में और उनके अवचेतन मन में बहुत गहरे प्रभाव छोड़ती हैं और कभी-कभी तो ये यादें आजीवन नहीं भुलाई जातीं। विद्यार्थियों के लिए इन स्मृतियों को लिखना और संस्मरण विधा में ढालना निश्चित रूप से एक रोचक और मनोरंजक अनुभव होता है और निःसंदेह ये लेखन उनके भाषा-कौशल को भी निखारता है। इस अंक को संग्रहणीय बनाने के लिए विद्यार्थियों ने बहुत परिश्रम किया है। आशा है आप सभी को इस अंक में प्रस्तुत रचनाएँ रुचिकर लगेंगीं।

श्री रवि प्रकाश (शिक्षक संपादक)

छात्रा संपादिका का संदेश

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'हाटकेश्वरी' के सत्र 2022-23 के अंक में मुझे 'हिंदी अनुभाग' की छात्रा-संपादिका बनने का अवसर प्रदान किया है। इसके लिए मैं प्राचार्य महोदय और अपने गुरुजनों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। 'हाटकेश्वरी' पत्रिका के कुछ अंक मैंने अपने बचपन में यहाँ-वहाँ पढ़े थे और तभी से मेरे मन में इसके प्रति एक अनजाना सा मोह उत्पन्न हो गया था। मैं सोचा करती थी कि पत्रिका में जिन विद्यार्थियों की रचनाएँ प्रकाशित होती हैं, वो न जाने कितने प्रतिभाशाली और बुद्धिमान होते होंगे। इस अंक से एक लेखिका और संपादिका के तौर पर जुड़ कर मैं स्वयं को सचमुच गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। निश्चित रूप से ये किसी बहुत पुराने और बहुत बड़े सपने के साकार होने जैसा है। 'हिंदी अनुभाग' को बहुत से छात्रों ने अपने लेखन से समृद्ध किया है मैं उनके प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ और हिंदी विभाग के शिक्षकों प्रोफेसर रवि प्रकाश और मैडम सपना तांटा के प्रति भी हार्दिक श्रद्धा व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग और मार्गदर्शन से मुझे और अन्य विद्यार्थियों को अपनी रचनाओं के लेखन में यथोचित सफलता मिल सकी।

नीतिका रमसेठ (छात्रा संपादिका)

कला स्नातक, तृतीय वर्ष

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना	रचनाकार
1	मेरी दिल्ली यात्रा (संस्मरण)	गुंजन खेउटा
2	जीवन में अच्छे और बुरे लोगों की परख (लेख)	नीतिका रमसेठ
3	रक्षाबंधन (कहानी)	हिमांशी रेटका
4	युवा महोत्सव 2022 के यादगार पल (संस्मरण)	पल्लवी धृजटा
5	डोडरा-क्वार का फाग मेला (लेख)	महक नेगी
6	प्रकृति (कविता)	मीनाक्षी रमसेठ
7	महाविद्यालय के पहले वर्ष की अविस्मरणीय यादें (संस्मरण)	दीक्षा
8	महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के कुछ अनुभव (संस्मरण)	चेतन शौहाल
9	महाविद्यालय में मेरा प्रथम वर्ष (संस्मरण)	मीनाक्षी रमसेठ
10	सरस्वती नगर महाविद्यालय के अविस्मरणीय तीन वर्ष (संस्मरण)	पल्लवी धृजटा
11	सरस्वती नगर महाविद्यालय में दो वर्षों का अनुभव (संस्मरण)	महक नेगी
12	कॉलेज के तीन वर्ष : स्मृतियों का एक चित्राधार (संस्मरण)	नीतिका रमसेठ
13	सरस्वतीनगर महाविद्यालय एनएसएस और मैं (संस्मरण)	सिमरन खेउटा
14	कलयुग का आगमन (कविता)	आशा चौहान
15	माँ डाँटती है दिल से कहाँ (कविता)	विकी करासटा
16	महिला सशक्तिकरण (लेख)	प्रिया चाजटा

मेरी दिल्ली यात्रा

मुझे बचपन से ही घूमने-फिरने का बहुत शौक था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि जो ख्वाब मैंने देखा था, जिन सब चीज़ों या जगहों के बारे में मैंने सिर्फ किताबों में पढ़ा था, तस्वीरों में देखा था या सुना था, वर्ष 2023 में वह मेरा सपना पूरा होगा। इस वर्ष मुझे दिल्ली जाने का अवसर प्राप्त हुआ।

मेरी दिल्ली यात्रा की शुरुआत होती है कुछ इस तरह - मैं अपने घर से जुब्बल तक गाड़ी में आई और जुब्बल से दिल्ली तक का सफ़र मैंने बस में किया। एक तरफ मुझे दिल्ली जाने की खुशी भी बहुत थी तो दूसरी ओर अपनों से दूर जाने का दुख भी था। यह सफर स्वयं मेरे द्वारा और मेरी बहन के द्वारा तय किया गया। जैसे ही दिल्ली जाने वाली बस जुब्बल पहुँची तो बस में हमें खिड़की वाली सीट मिली, जिससे मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। जैसे ही बस चलनी शुरू हुई तो हमें देखकर मेरी मम्मी की आँखों में आँसू आ गए जिसे देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। परंतु जाना भी बहुत जरूरी था।

हमारी बस चलते-चलते जुब्बल से थोड़ी दूर जाने के बाद रुक जाती है, क्योंकि बस का पहिया पंचर हो गया था। इसी तरह हमारी यात्रा शुरू होने से पहले ही समाप्त हो जाती है, किंतु ऐसा सिर्फ मुझे लगा। क्योंकि इसी अवस्था में बस के चालक ने अपनी कुशलता का परिचय देते हुए बस को आगे चलाया। लगभग छत्तीस किलोमीटर आगे जाने के बाद गुम्मा पहुँचकर बस रुकी और वहाँ पर बस का पहिया ठीक करने के बाद हमारी यात्रा फिर से शुरू हुई। धीरे-धीरे शाम ढल रही थी। आकाश में तारों का प्रकाश बहुत सुंदर लग रहा था। इसी तरह रात भर यात्रा करने के बाद प्रातः काल छह बजे के आसपास कंडक्टर के द्वारा सीटी बजाई गई और उस कड़ाके की ठंड में बस से उतरते हुए जो दिल्ली जाने का सपना मैंने देखा था वह पूरा हुआ।

मैं और मेरी बहन कश्मीरी गेट पहुँचे तथा वहाँ पहुँच कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। दिल्ली की कालीबाड़ी जगह पर हम अपने मामा जी के घर रुके। वहाँ हमने आराम किया और फिर सुबह दिल्ली की सैर करने के लिए निकल पड़े। दिल्ली में मैंने सबसे पहले निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन देखा, जहाँ से हमने मेरी बहन को कर्नाटक के लिए रवाना किया। रेलवे स्टेशन से वापस आते हुए मुझे मेरे मामा जी ने लोधी गार्डन घुमाया। वहाँ से हम कृषि भवन गए। इसी तरह मैं दिल्ली में बहुत सी प्रसिद्ध जगहों पर घूमी, जैसे मैं 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस परेड देखने इंडिया गेट गई, बंगला साहिब गुरुद्वारा देखा, एक प्रसिद्ध हनुमान मंदिर देखा, सेक्रेड हार्ट कैथेड्रल चर्च गई और जामा मस्जिद भी गई। इससे मुझे विभिन्न धर्मों को जानने और उन्हें निकट से देखने का मौका मिला। इसके अलावा मैं दिल्ली में लाल किला, चाँदनी चौक, तालकटोरा गार्डन, सरोजिनी मार्केट आदि जगहों पर गई और इन जगहों पर घूमना मुझे काफी अच्छा लगा। सुबह से शाम तक हम इन पर्यटन स्थलों की यात्रा करते रहे। वास्तव में मुझे नई चीजों के बारे में जानना, उन्हें देखना, उन्हें अनुभव करना बहुत अच्छा लग रहा था।

इसके अलावा मेरे वहाँ पर कुछ मित्र भी बने, जिनके साथ समय बिताना तथा बातचीत करना, घूमना-फिरना मुझे बहुत अच्छा लगता था। हम सभी शाम के समय पार्क में इकट्ठे होकर गिल मार्केट जाते। वहाँ जाकर टिक्की खाते, रसमलाई और चाट खाते। यह सब मुझे आज भी बहुत याद आता है। इसके अलावा मेरी अविस्मरणीय यादों में से एक है मेरा संसद भवन और राष्ट्रपति भवन जाना, जहाँ जाने के बारे में मैंने कभी नहीं सोचा था। इन दोनों जगहों पर जाना तथा वहाँ का अनुभव - आज भी जब मैं उन पलों को याद करती हूँ तो दिल से बस यही आवाज आती है कि ज़िंदगी बहुत खूबसूरत है। आज तक मैंने अपनी जिंदगी में जितने भी अच्छे कर्म किए हैं, शायद यह सभी उन्हीं अच्छे कर्मों का फल है जो मुझे इन जगहों पर जाना नसीब हुआ। यह मेरी जिंदगी की सबसे खूबसूरत यादें हैं। इसके अलावा कालीबाड़ी में रहना वहाँ पर शाम को सब्जी मंडी का लगना तथा वहाँ जाकर फल खरीदना सब्जियाँ खरीदना - इन सब में भी एक अलग ही आनंद था। इसी के साथ मेरी बहन का कर्नाटक से दिल्ली वापस आना तथा हमारा घर की ओर रवाना होना भी मुझे अच्छी तरह याद है। कहीं न कहीं घर वापस आने की खुशी भी हो रही थी तो उन सब लोगों से बिछड़ने का दुख भी हो रहा था, परंतु इससे मुझे एक बहुत अच्छी चीज़ सीखने को मिली कि ज़िंदगी में कुछ भी स्थायी नहीं होता। ज़िंदगी मूल्यवान होती है और हमें इसकी अहमियत को समझना चाहिए। हमारे मामा जी द्वारा हमारे वापसी घर आने की टिकट करवाई गई तथा मैंने अपने मित्रों और पड़ोसियों आदि को अलविदा कहा।

हम कालीबाड़ी से कश्मीरी गेट बस अड्डे के लिए रवाना हो गए, जहाँ से हमें घर वापस आने के लिए बस मिलनी थी। इसी के साथ मैंने दिल्ली शहर को अलविदा कहा और अपने मामा जी का आशीर्वाद लेकर बस में बैठ गई।

रात भर यात्रा करने के बाद सुबह सात बजे हम जुब्बल पहुँच गए। उन बर्फीली चोटियों, घरों, बर्फ से ढके पेड़ों को देखकर आँखों तथा दिल को एक अलग ही सुकून महसूस हुआ। पापा हमें जुब्बल लेने आए थे और उनके साथ हम अपने घर अपने गाँव पहुँचे। मुझे और मेरी बहन को देखकर जो खुशी हमारे परिवारजनों के चेहरों पर थी, उसका आनंद ही अलग था। उसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। मेरी दिल्ली की यात्रा मंगलमय तथा अविस्मरणीय रही। इसके लिए मैं सदैव अपने परिवार तथा भगवानजी की तहे दिल से आभारी रहूँगी। मैं दिल्ली जल्द से जल्द दोबारा जाना चाहूँगी।

- गुंजन खेउटा

कला स्नातक तृतीय वर्ष।

जीवन में अच्छे और बुरे लोगों की परख

अक्सर हम जीवन में कई बार ऐसे लोगों के बीच आ जाते हैं जहां हम अच्छे और बुरे लोगों में फर्क नहीं समझ पाते। यह जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है। ऐसे में कुछ बुरे लोग हमें भी अपने जैसा बनाने की कोशिश में रहते हैं, जिससे उन्हें आनंद मिलता है। ऐसे लोग न तो खुद आगे बढ़ते हैं और न किसी को आगे बढ़ने देते हैं। अच्छे लोग आपको आगे बढ़ने की सलाह देने के साथ-साथ आप की प्रेरणा के स्रोत भी बनते हैं। अक्सर कई लोग उन लोगों के बीच बैठना पसंद करते हैं, जो सिर्फ उनकी झूठी तारीफ करते हैं। यदि आप उनसे अपने लिए मदद की उम्मीद करेंगे तो आप खुद समझ जाएंगे कि वह आपके हितैषी हैं या नहीं।

नीम कड़वा जरूर होता है, पर ज्यादातर बीमारियों में नीम हकीम है। कुछ लोग नीम की तरह होते हैं, लेकिन वही आपके सच्चे हितैषी भी होते हैं। ऐसे लोगों से हमेशा आपको फायदा ही मिलता है, क्योंकि उनको जब आपकी बुराई करनी होती है तो वह आपके पीठ पीछे नहीं बोलेंगे, बल्कि वह आपके सामने ही आपकी बुराई करेंगे। उनकी बातें बिल्कुल खरी होती हैं।

अब मैं बुरे लोगों की बात करूं तो वह नकारात्मक पहलुओं को तुरंत पकड़ते हैं और जब हम उनके साथ रहना शुरू करते हैं तो हमारे अंदर भी वही नकारात्मक भाव पनपने लगते हैं। हमारी सोच भी उन्हीं के जैसी होने लगती है, क्योंकि एक दूसरे से घुलने-मिलने के लिए हमें भी उनके जैसा ही बनना पड़ता है। यह मानव की प्रकृति है कि वह नकारात्मकता की ओर जल्दी ही आकर्षित हो जाता है, जिसका प्रभाव उसे तब दिखाई देता है, जब कोई उसकी आशाओं को रौंदकर उससे आगे निकल जाता है। कई बार तो इतनी देर हो चुकी होती है कि समस्या का कोई समाधान सूझता ही नहीं। जो लोग मीठा बोलते हैं आपको उनसे सतर्क रहने की जरूरत है। हो सकता है कि वह आपके हितैषी न हों। मैं यह नहीं कहती कि सभी लोग एक जैसे ही होते हैं। कुछ लोग आपकी परवाह करने वाले भी होंगे।

इसी उम्मीद के साथ कि आपको मेरे इस प्रेरणादायक लेख से कुछ सीखने को मिला होगा, विदा!

नीतिका रमसेठ

कला स्नातक तृतीय वर्ष।

रक्षाबंधन

राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में ज्वाला नामक महिला रहती थी। उसी ज़िले में लक्ष्मण सिंह नामक डाकू भी रहता था। वह जिस रास्ते से निकलता, उधर सभी लोग भयभीत रहते और गांव छोड़कर इधर-उधर भागने लगते थे।

श्रावण की पूर्णिमा का दिन था सभी ओर आनंद एवं उत्साह दिखाई दे रहा था। महिलाएँ अपने भाइयों के हाथों में रक्षासूत्र बांध रही थीं। ज्वाला ने यह निर्णय कर लिया था कि वह डाकू लक्ष्मण सिंह को ही राखी बांध देगी। वह उसी मार्ग पर रक्षासूत्र लेकर खड़ी हो गई, जिस मार्ग से लक्ष्मण सिंह आता-जाता था। कुछ समय पश्चात डाकू लक्ष्मण सिंह उस मार्ग से निकला। पहले तो ज्वाला भयभीत हो गई, किंतु फिर धैर्य धारण करते हुए उसने कहा - "भैया मैं तुम्हें राखी बांधना चाहती हूं।" लक्ष्मण सिंह चौक पड़ा। आज तक लोग उसके नाम से भी डरते थे और उसे देखकर घबराहट के मारे लोगों का पसीना छूटने लगता था, मगर यह महिला न केवल उसके सामने निडरता से खड़ी थी, बल्कि उसे अपना भाई बनने की प्रार्थना भी कर रही थी। लक्ष्मण सिंह ने घड़ी भर सोच कर अपना दाहिना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। ज्वाला ने डाकू की कलाई पर राखी बांधी। उसी समय डाकू लक्ष्मण सिंह की आंखों में आंसू आ गए और वह बोला - "बहन आज से पहले किसी ने भी मुझे भाई नहीं कहा। मैं तुम्हारा प्रेम और विश्वास देखकर बहुत संतुष्ट हूं। तुम क्या चाहती हो?" ज्वाला ने कहा -"मैं जो चाहती हूं तुम वह नहीं कर सकते।" लक्ष्मण सिंह बोला - "मैं तुम्हारी इच्छा की पूर्ति अवश्य करूंगा।" ज्वाला ने कहा - "भैया तुम डाका डालते हो और तुम्हारे इस कार्य से सभी भयभीत रहते हैं। तुम इस बुरे कर्म को छोड़ दो मैं यही चाहती हूं।" लक्ष्मण सिंह कुछ विचार कर बोला - "बहन, मैं तुम्हारी यह इच्छा अवश्य पूर्ण करूंगा। मैं आज से ही अपने डकैती के कार्य को छोड़ रहा हूं।"

उस दिन से वह एक सामान्य नागरिक की तरह जीवन जीने लगा। धन्य है वह मेवाड़ी महिला ज्वाला जिसने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से डाकू लक्ष्मण सिंह जैसे क्रूर का हृदय परिवर्तित कर दिया।

हिमांशी रेटका

कला स्नातक, प्रथम वर्ष

युवा महोत्सव 2022 के यादगार पल

मेरा नाम पल्लवी धृजटा है। मैं लालबहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सरस्वती नगर में कला स्नातक तृतीय वर्ष की छात्रा हूँ। वर्ष 2022 में मैंने युवा महोत्सव में ग्रुप तीन मुकाबलों के अंतर्गत आयोजित लोकनृत्य प्रतियोगिता में भाग लिया था। यह आयोजन सरदार पटेल विश्वविद्यालय मंडी में हुआ था। आज मैं सरस्वती नगर से सरदार पटेल विश्वविद्यालय की यात्रा और प्रतियोगिता की यादें और वहां से वापसी के यादगार लम्हों को आपसे साझा कर रही हूं।

यह यादगार सफर 1 दिसंबर 2022 को शुरू होता है। युवा महोत्सव के समूह 3 में भाग लेने के लिए हम ग्यारह लड़कियों और दो लड़कों का समूह दो अध्यापकों सहित सुबह सात बजे मंडी के लिए रवाना हुआ। ट्रैवलर गाड़ी में बैठने के लिए काफी आरामदायक सीटें थीं। हमारा सफर बहुत मनोरंजक रहा। हमने रास्ते में रुक के खाना भी खाया और आसपास के प्राकृतिक दृश्यों तथा रास्ते में आने वाले बाजारों को भी निहारा। हम सरदार पटेल विश्वविद्यालय में शाम साढ़े चार बजे के करीब पहुंचे और हमने वहां पर अपने कॉलेज के पहुंच जाने की उपस्थिति दर्ज की। उसके बाद हमने अपने रहने की व्यवस्था देखी। हमें वहां पर गुरु गोविंद सिंह गुरुद्वारे की सराय में ठहराया गया था। सराय के कमरे बहुत सुंदर एवं हवादार थे। हम सबने अपने सामान को कमरे में सुव्यवस्थित ढंग से रखा। तत्पश्चात हम सभी ने मंडी के बाजार का भ्रमण किया। हम सबने यह निश्चय किया कि हम सभी रात्रि का भोजन गुरुद्वारे में ही करेंगे। हम आठ बजे के करीब गुरुद्वारे पहुंचे और रात्रि-भोजन किया। हमें यह मालूम हो गया था कि अगले दिन यानि 2 दिसंबर को हमारी नृत्य-प्रस्तुति होनी है।

हम सभी लड़कियां नौ बजे अपने कमरे में आ गईं और हमने यह निश्चय किया कि हम जल्द सो जाएंगे, ताकि हम सब सुबह अपनी नृत्य-प्रस्तुति को अच्छी तरह प्रदर्शित कर सकें। अगला दिन अर्थात 2 दिसंबर का दिन हम सभी के युवा महोत्सव का प्रथम दिन था। उस दिन लगभग 6-7 कॉलेजों की लोकेनृत्य प्रस्तुति होनी थी, जिनमें से हमारी टीम भी एक थी। हमारे कॉलेज की प्रस्तुति तीसरे नंबर पर होनी थी। सुबह हम सभी छात्राएं भोजन करने के बाद तैयार होने लगीं। हमने अपनी पोशाक और अपने गहने सुव्यवस्थित ढंग से पहने। हम सभी प्रतिभागी बहुत चिंतित थे कि हमारी नृत्य-प्रस्तुति जाने कैसी होगी क्योंकि वहां पर आए सभी कॉलेज अपनी संस्कृति और अपने लोकनृत्य का बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहे थे, परन्तु हमारे मन में थोड़ा संशय था कि हम बेहतर प्रदर्शन कर पाएंगे या नहीं। हालांकि हमने युवा महोत्सव 2021 में लोकनृत्य प्रस्तुति में प्रथम स्थान प्राप्त किया था, फिर भी मन में थोड़ी घबराहट अवश्य थी। हमने अपनी तैयारी बहुत वक्त देकर और बहुत मेहनत के साथ की थी। हमारे शिक्षक डॉ० रोहित मोकटा ने बहुत मेहनत करवाई थी और हमारा हौसला बढ़ाया था।

साढ़े बारह बजे के आसपास हमारी प्रस्तुति हुई। इसके बाद हमारे मन का बोझ थोड़ा हल्का हुआ। अब हमें इस बात की चिंता थी कि क्या हम इस वर्ष भी विजेता रहेंगे या नहीं। प्रस्तुति के बाद हम सभी अपने कमरे में आए और वस्त्र बदलकर अध्यापकों के साथ मंडी बाजार घूमने चले गए। हमने बहुत सारी फोटोग्राफी की और प्रकृति की सुंदरता को निहारा। रात का खाना हमने मंडी बाजार में ही खाया और वापस कमरे में आ गए। अगले दिन यानि 3 दिसंबर को हम सभी छात्राएं और छात्र अध्यापकों सहित मंडी में प्रसिद्ध रिवालसर झील घूमने गए। यह झील बहुत ही ज्यादा सुंदर थी। वहां जाकर मन को सुकून प्राप्त हुआ। हम वहां पर बने प्रसिद्ध बौद्ध मठ भी गए, जो बहुत ही सुंदर और मनमोहक था। हमने अपना पूरा दिन रिवालसर झील तथा मठ में व्यतीत किया। फिर शाम को पाँच बजे के करीब वापस अपने कमरे में आ गए और रात्रि आठ बजे हम सबने भोजन किया।

अगला दिन अर्थात 4 दिसंबर का दिन हम सभी के लिए चिंतापूर्ण था, क्योंकि उस दिन हमारी प्रस्तुति के परिणाम की घोषणा होनी थी। हम सभी बहुत चिंतित थे। हमारे महाविद्यालय को फिर से हमारे जीतने की आशा थी, लेकिन हर समय या हर परिस्थिति एक सी नहीं होती। इस वर्षा युवा महोत्सव में हमें निराशा मिली। हमने लोकनृत्य में कोई भी स्थान प्राप्त नहीं किया। यह हम सभी के लिए दुख की बात थी। हम सभी निराश होकर मंडी से तीन बजे के करीब वापस घर के लिए चल पड़े। रात बारह बजे हम सभी अपने घर पहुंच गए थे। अगले दिन जब हम महाविद्यालय गए तो हम सभी बहुत निराश थे, परंतु हमारे महाविद्यालय परिवार ने हमें समझाया कि हार जीत तो जीवन के दो पहलू हैं, इनसे निराश न होकर सीख लेनी चाहिए। मेरे लिए यह पल बहुत यादगार थे, क्योंकि इस निराशा से भी मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मेरे दिल के किसी न किसी कोने में यह पल हमेशा जीवित रहेंगे और मुझे ऊर्जा देते रहेंगे। मुझे हमेशा याद रहेगा कि मेहनत और संघर्ष से सफलता अवश्य मिलती है, परंतु हार से कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। हमें सदैव ऊर्जावान होकर सकारात्मकता से अपना कार्य करते रहना चाहिए। इन दिनों में मैंने बहुत सी नयी बातें सीखीं, जो मुझे जीवन में आगे बढ़ाने में सहायक होंगी।

पल्लवी धृजटा

कला स्नातक, तृतीय वर्ष।

डोडरा-क्वार का फाग मेला

हिमाचल प्रदेश को मेलों और त्योहारों की भूमि कहा जाता है। यह मेले-त्यौहार लोगों की संस्कृति, इतिहास, धार्मिक विश्वास, सामाजिक रीति-रिवाज, संगीत-प्रेम एवं नृत्य कला की अभिव्यक्ति करते हैं। गांवों में मेले और त्यौहार लोगों के मनोरंजन के कारण आकर्षण के केंद्र हैं। लोग मेलों में अपने नए तथा रंग-बिरंगे परिधानों में आकर इनकी शोभा बढ़ाते हैं। इन मेलों का सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व बहुत अधिक है। लोग पूरी श्रद्धा और भक्ति से देवी-देवताओं की पूजा-आराधना करते हैं।

पहाड़ी संस्कृति एक विकासशील संस्कृति है। पहाड़ी संस्कृति का जीवंत उदाहरण यहां के देवी देवता और यहाँ के त्यौहार और मेले हैं। प्रसिद्ध फाग मेला हिमाचल प्रदेश में शिमला जिले के छौहारा खंड के डोडरा, जागलिख, पेखा, दीउदी तथा तांगणु क्षेत्रों में प्रतिवर्ष फागुन महीने में मनाया जाता है। यह मेला देवता जाख साहब को समर्पित है।

फाग मेले का समय समीप आते ही क्षेत्रीय निवासी उल्लास की अनुभूति महसूस करते हैं। मेले के तीन-चार दिन पहले से देवता साहब जाख के मंदिर के प्रांगण में ढोल बजाए जाते हैं। फाग मेले के पहले दिन गांव के कुछ स्थानीय लोग जो जेलवान परिवार के होते हैं, वे 'ओइडे' बनते हैं जो 'हिशटोली' यानी बर्फ के गोले लेकर मंदिर के प्रांगण में सांस्कृतिक वाद्ययंत्र और परंपरागत गीत गाकर नृत्य करते हैं। फिर सभी लोग एक दूसरे पर बर्फ के गोले फेंकना शुरू कर देते हैं। उसके बाद ओइडे अपनी खुखरी लेकर बारी बारी नाचना शुरू कर देते हैं। उसके बाद एक पुरुष को देवता का ओइडा चुना जाता है। बाकी लोगों को गांव के अन्य निवासियों यानी नध्यान और बनाटा के घर ओइडा भेजा जाता है। इन ओइडों का बहुत सम्मान किया जाता है। इनका अतिथि की तरह सत्कार किया जाता है। शाम को इन्हें किलटी के साथ इनके घर भेजा जाता है।

ओइडों के जाने के बाद जाख देवता के मंदिर में मेला लगाया जाता है। यह मेला तीन दिन तक दिन-रात लगाया जाता है। इस दिन गांव की महिलाओं ने तथा आसपास के क्षेत्रों से आई महिलाओं ने यहां की परंपरागत वेशभूषा धारण की होती है। उन्होंने ऊन की जुड़की, ऊन का पजामा, टोपी लौकोटी, जुठी आदि पहनी होती हैं, जिससे इन लोगों की और इस मेले की शोभा में चार चांद लग जाते हैं, क्योंकि यह हमारे गांव की पारंपरिक वेशभूषा है।

मेले के दूसरे दिन पुरुष एवं स्त्री मंदिर में मेला लगाते हैं और कई पुरुष एक-दूसरे के घर जाकर शराब पीते हैं। क्योंकि यह शराब जाख देवता के नाम से निकाली जाती है, जिसे मांगने पर मना नहीं किया जा सकता है। मेले के तीसरे दिन सभी लोग देवता के मंदिर में एकत्र होते हैं। पहले मंदिर में आटा गिराया जाता है। हमारे जाख देवता पर आटा उनका माली डालता है, उसके बाद सब लोग एक दूसरे पर आटा डालते हैं और फिर घर-घर जाकर आटा लगाते हैं। बूढ़े, जवान, बच्चे महिलाएँ सभी लोग आटे से खेलते हैं मानो होली खेल रहे हो। पूरे दिन मौजमस्ती करने के बाद शाम को स्नान करने के बाद मंदिर में फिर से मेला शुरू हो जाता है।

इस तरह के मेले और त्योहार हमारी समृद्ध संस्कृति के प्रतीक हैं। यह आपसी प्रेम और मेल मिलाप के साधन है, जो हमें हमारी प्राचीन संस्कृति से अवगत करवाते हैं। संस्कृति को बनाए रखना मानव का परम कर्तव्य है।

महक नेगी
कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

प्रकृति

नीला अम्बर, ऊँचे पहाड़
बहती नदिया और पेड़ों का है हम पर उपकार,
आसमान में छाई सूर्य की किरणें
जो करती प्रकाशमय सारा संसार।

पल-पल बदलता मौसम
तो रिमझिम बारिश आई,
देखो ये सुंदर वादियाँ
चारों तरफ़ है हरियाली छाई।

रंग-बिरंगे प्यारे फूल
महकता जिससे आँगन सारा,
जो भी देखे मोहित हो जाए
ऐसा है इनका नज़ारा।

सारे तत्त्वों से अवगत हमें प्रकृति ने करवाया
हर जीवन को सुखमय भी इसी ने बनाया,
सभी को समान समझा तूने ही
मिलजुल कर रहना भी तूने ही सिखाया।

मीनाक्षी रमसेठ
कला स्नातक, प्रथम वर्ष।

महाविद्यालय के पहले वर्ष की अविस्मरणीय यादें

कॉलेज का पहला दिन या साल सभी छात्र-छात्राओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। कॉलेज का पहला साल मेरे लिए भी अविस्मरणीय था। विद्यालय के बाद कॉलेज जाना मेरे लिए एक नया अनुभव था, क्योंकि विद्यालय में हम नियमों का पालन करते थे और कॉलेज में हमें अधिक स्वतंत्रता होती है। मेरे कॉलेज का नाम लालबहादुर शास्त्री राजकीय महाविद्यालय सरस्वती नगर है। 16 अगस्त 2022 को मेरा कॉलेज का पहला दिन था। कॉलेज के नियम विद्यालय के नियमों से भिन्न थे। मैंने कॉलेज के बारे में अपने भाई-बहनों से सुना था। मेरे लिए कॉलेज का पहला दिन प्रसन्नतापूर्ण था।

कॉलेज के पहले दिन की स्मृतियां मुझे अभी भी याद हैं। पहले दिन कॉलेज के गेट में प्रवेश करते समय मुझे बहुत घबराहट हो रही थी तथा साथ ही साथ कॉलेज में प्रवेश करने के लिए मैं उत्सुक भी थी। कॉलेज में प्रवेश करने के बाद मैंने पूरे कॉलेज का भ्रमण किया। मुझे कॉलेज के पुस्तकालय तथा प्रयोगशालाएँ देख कर खुशी हुई। इसके बाद मैंने नोटिस बोर्ड से अपनी कक्षा की समय-सारणी नोट की। उसके बाद मेरी राजनीति शास्त्र की कक्षा हुई। अध्यापिका ने सभी बच्चों से उनका परिचय पूछा। उन्होंने हमें कॉलेज के अनुशासन तथा नियमों के बारे में बताया। कक्षा समाप्त होने के बाद मेरी हिंदी की कक्षा हुई। मैं दिन भर में एक कक्षा से दूसरी कक्षा में घूमती रही। मेरे कॉलेज के नए सहपाठियों से बातचीत हुई। कुछ ऐसे थे जिनसे मैं परिचित नहीं थी और कुछ ऐसे जिन्हें मैं पहले से जानती थी। कॉलेज में बहुत हलचल थी। कॉलेज का अनुशासन बहुत अच्छा था।

उसके बाद प्रतिदिन हमारी कक्षाएं होने लगीं। कॉलेज में मेरी पढ़ाई की तरफ रुचि और भी अधिक बढ़ने लगी। कॉलेज प्रतिदिन जाने पर मैं वहां के पुस्तकालय में जाया करती थी। पुस्तकालय काफी बड़ा था। वहां अलग-अलग विषयों की किताबें रखी हुई थीं। कॉलेज में कई तरह की पत्रिकाएँ भी थीं और प्रतिदिन अखबार भी आया करते थे। हिंदी के प्राध्यापक हमें हर शनिवार को पुस्तकालय ले जाया करते थे तथा कई कवियों और उनकी कृतियों से परिचित करवाते थे। मेरा कॉलेज में हिंदी विषय के प्रति काफी झुकाव रहा।

कॉलेज में कई तरह की सुविधाएं हमें प्राप्त थीं। हमें हर शनिवार को अनेक गतिविधियां कराई जाती थीं, जैसे कॉलेज के आसपास के क्षेत्रों में सफाई करना इत्यादि। कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई भी थी। लोगों को जागरूक करने के लिए कॉलेज में रैलियां भी निकाली जाती थीं। इन सभी चीज़ों से मुझे बहुत प्रोत्साहन मिला। इसके बाद 5 सितंबर को महाविद्यालय में शिक्षक दिवस मनाया गया। शिक्षक दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा कॉलेज में समारोह आयोजित किया गया। प्रत्येक बच्चा शिक्षकों का बहुत सम्मान और आदर करता है।

कुछ दिनों के बाद कॉलेज में 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया गया। इसमें विद्यार्थियों के लिए भाषण, कविता-पाठ, और निबंध-लेखन की प्रतियोगिताएँ रखी गईं। आपातकालीन परिस्थितियों से सुरक्षा व बचाव के उपाय सिखाने के लिए एनडीआरएफ की टीम भी कॉलेज में आई थी। कुछ दिनों के बाद राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस, संविधान दिवस, दर्शनशास्त्र दिवस आदि कार्यक्रम भी हुए। यह सब समारोह मेरे लिए अविस्मरणीय थे। मुझे इन सब से बहुत कुछ सीखने को मिला, लेकिन मुझे इस बात का पछतावा हुआ कि मैंने किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं लिया। अगर भविष्य में मुझे ऐसा कोई मौका मिला तो मैं अवश्य ही भाग लेना चाहूंगी। इतना समय कॉलेज में गुज़ारने के बाद मुझे कॉलेज की सभी गतिविधियों का पता चल गया था।

उसके बाद साल के अंतिम माह में हमारे माइनर टैस्ट होने जा रहे थे, जिसके कारण पढ़ाई का काफी दबाव बन गया था। परीक्षाओं के दौरान कॉलेज में काफी ठंड हो गई थी। परीक्षाएँ समाप्त होने के बाद कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा सात दिवसीय विशेष शिविर का विधिवत आयोजन किया गया। साल के अंतिम दिनों में कक्षाएँ होनी बंद हो गईं। इसका कारण यह था कि कॉलेज में काफी ठंड हो गई थी। उसके बाद हमारी सर्दियों की छुट्टियाँ पड़ गईं।

इस प्रकार से मेरा कॉलेज के पहले साल का अनुभव बहुत अच्छा रहा। मुझे बहुत ही अच्छी बातें सीखने को मिलीं और मेरे अनुभव में भी वृद्धि हुई।

तो यह था मेरा कॉलेज का पहला साल, जिसकी यादें मैं कभी नहीं भूल सकती। आशा करती हूँ कि मेरा आने वाला समय भी मंगलमय और यादगार होगा।

दीक्षा

कला स्नातक, प्रथम वर्ष।

महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के कुछ अनुभव

वैसे तो मेरे जीवन में बचपन से लेकर बहुत परिवर्तन आए हैं, परंतु 2022 यानी मेरे महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के दौरान आए परिवर्तन विशेष एवं महत्वपूर्ण हैं। इन परिवर्तनों से मेरे विचारों एवं व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव पड़ा है। यह परिवर्तन कुछ इस प्रकार हैं -

बातचीत करने के ढंग में परिवर्तन - इससे अभिप्राय है कि मेरे बातचीत करने के ढंग में परिपक्वता आ गई है। पहले मैं बचकाना बातें करता था और निरर्थक बातें करता रहता था, परंतु अब ऐसा नहीं है। अब मेरे बातचीत करने पर मैं इन दोनों पर ढंग से ध्यान देता हूँ।

विचार करने की क्षमता में वृद्धि - इससे अभिप्राय है उन चीज़ों के बारे में विचार करना, जो मेरे जीवन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्यापक द्वारा दी जाने वाली सलाहें - वैसे तो अध्यापक द्वारा कही गई हर बात अनमोल होती है, परंतु जब अध्यापक अपने जीवन में अनुभव की गई बातों के आधार पर कोई सुझाव देते हैं तो वह सुझाव जीवन में हर कठिन परिस्थिति का सामना करने की प्रेरणा देते हैं और महाविद्यालय आने के पश्चात ऐसे जीवन-परिवर्तन कर देने वाले सुझाव सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने दिए और उनकी कहीं हर बात प्रेरणा से युक्त थी। परंतु जब कोई अध्यापक जीवन में शिक्षा और सफलता के बीच आने वाली समस्याओं के बारे में कोई सुझाव देता है, वह भी अपने जीवन के अनुभव के आधार पर, तो वह सुझाव हमारे अनुभकव में वृद्धि करता है। जहां तक मैंने अनुभव किया है हमारे हिंदी के अध्यापक इस प्रकार की बातें करते हैं, जो उनके खुद के जीवन में घटित हुई हैं और ऐसा प्रतीत होता है मानो वह हमारे ही जीवन के बारे में बात कर रहे हों।

एनसीसी में प्रवेश के पश्चात बदलाव - एनसीसी का सदस्य बनने के बाद भी हमारे जीवन में बहुत बदलाव आए, क्योंकि इस इकाई के अंतर्गत हर विद्यार्थी को अनुशासन का पालन करना पड़ता है। इसलिए ऐसा लगता है कि हम महाविद्यालय के अन्य सभी विद्यार्थियों से भिन्न हैं।

नए दोस्तों का बनना - महाविद्यालय में प्रवेश के पश्चात मेरे सामने एक और चुनौती थी कि मुझे ऐसे मित्रों की खोज करनी थी या ऐसे मित्र बनाने थे, जो नशे से दूर हों और समझदार हों, जिनकी संगति में रहकर मुझे कुछ नया सीखने को मिले। और मैं खुशकिस्मत हूँ कि मुझे ऐसे दोस्त मिल गए।

अपने भविष्य के प्रति सुदृढ़ होना - इस बात से तात्पर्य है अपने अंदर की सभी नकारात्मक बातों और बचकाना हरकतों को छोड़कर एक नए जीवन का आरंभ करके अपने भविष्य को संवार कर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलना।

आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा मिलना - अर्थात अपने ऊपर विश्वास करना, अपने निर्णय स्वयं लेना, हर कार्य को पूरे दृढ़ निश्चय के साथ और अपने बलबूते पर पूर्ण करना।

अपने जीवन की बागडोर अपने हाथ में रखना - इसका मतलब महाविद्यालय आने के पश्चात मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि अब यहां से आगे का जो सफ़र है वह दो रास्तों में बँटा है। एक रास्ता आवारागर्दी करके अपना भविष्य बर्बाद करना था और दूसरा रास्ता थोड़ी मेहनत करके अपने भविष्य को उज्जवल बनाना। मैंने इनमें से दूसरा रास्ता चुना। उपर्युक्त सभी बातों से आपको यह तो पता चल ही गया है कि महाविद्यालय आने के पश्चात मेरे जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए। यह परिवर्तन तो वह परिवर्तन है जो महाविद्यालय में आने के कुछ सप्ताहों में उत्पन्न हुए थे, परंतु पूरे वर्ष के अंतर्गत जो मैंने अनुभव किया वह भी मेरे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चेतन शौहाल
कला स्नातक, प्रथम वर्ष।

महाविद्यालय में मेरा प्रथम वर्ष

जब मैं पहली बार कॉलेज गई तो वहां सभी छात्र एवं छात्राएँ अपनी-अपनी मंडली बनाकर इधर-उधर टहल रहे थे। कुछ छात्र वॉलीबॉल खेल रहे थे, तो कुछ इधर-उधर बैठकर बातचीत कर रहे थे। सभी के चेहरों पर अलग सी खुशी नजर आ रही थी। मैं और मेरी सहेलियाँ जब कॉलेज के अंदर गईं तो वहां हमें एक विशाल सभागार दिखा, जहां कुछ छात्राएँ किसी कार्यक्रम की तैयारी के लिए प्राध्यापक की निगरानी में नृत्य कर रही थीं। उन प्राध्यापक ने हम सभी से हमारा परिचय पूछा और हमारे विषयों के बारे में थोड़ी-बहुत बातचीत की। हमें पता चला कि वे हिंदी भाषा के प्रोफेसर श्री रवि शर्मा हैं।

इसके बाद हम सभी ने पूरे महाविद्यालय का भ्रमण किया और यह जानकारी हासिल की कि कौन सी कक्षा कहां लगेगी। कुछ दिनों बाद हमारी कक्षाएँ नियमित रूप से होने लगी थीं। कभी-कभी मैं और मेरी सहेलियाँ हाटकोटी मंदिर भी जाया करती थीं और इधर-उधर घूम कर थोड़ी मौजमस्ती भी कर लेती थीं। देखते-देखते चार महीने बीत गए।

महाविद्यालय में मेरी अच्छी स्मृतियाँ बहुत सारी हैं। कुछ महीनों के बाद महाविद्यालय में नए विद्यार्थियों के स्वागत के लिए फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया गया, जिसमें बहुत से विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपनी कला तथा प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस आयोजन में हमें बहुत आनंद आया। इसके बाद हिंदी दिवस का आयोजन हुआ, जिसमें मैंने निबंध-लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया, जो कि मेरे लिए बहुत गर्व की बात थी। हिंदी दिवस का आयोजन बहुत भव्य तरीके से किया गया था और उसमें प्राचार्य महोदय भी उपस्थित थे। इस अवसर पर भाषण और कविता‌पाठ जैसी प्रतियोगिताएँ भी हुईं। कुछ विद्यार्थियों ने गीत गाए और नृत्य कला का भी प्रदर्शन किया। यह दिन मेरे लिए बहुत यादगार था।

इसके बाद महाविद्यालय में और भी अनेक कार्यक्रम हुए जिन्हें देखना मुझे बहुत अच्छा लगा। राजनीति विज्ञान विभाग में भी कुछ कार्यक्रम हुए, जिन्हें देखकर मुझे आनंद मिला और बहुत सारी यादें मेरे मस्तिष्क में छप कर रह गईं। हम लोग दोपहर को खाना खाने कॉलेज की कैंटीन में जाते थे और कभी-कभी सरस्वती नगर का बाज़ार भी घूम आते थे।

कुछ बुरी स्मृतियाँ - एक कार्यक्रम के दौरान प्रथम वर्ष के कुछ बच्चों ने सभागार में हुड़दंग मचाया, जिसे देखकर हमारे अध्यापकों और प्राचार्य महोदय को बहुत बुरा लगा। इस घटना के बाद हमारे शिक्षकों ने हमसे थोड़े समय तक बहुत रूखा व्यवहार किया, जिससे हम सभी बहुत दुखी हुए। किंतु समय के साथ सब कुछ ठीक हो गया था। कुछ शिक्षकों ने हमसे इस बात की भी शिकायत की कि हम केवल अपने विषय के शिक्षकों को ही नमस्कार करते हैं, अन्य शिक्षकों को नहीं। यह सुनकर मुझे काफी बुरा लगा था।

कॉलेज में प्रवेश लेने के बाद जीवन में परिवर्तन - कॉलेज के प्रथम वर्ष में मैंने अपने जीवन को लेकर बहुत कुछ सीखा है। मुझे अनुशासन में कैसे रहना है यह पता चला, किसी से कैसे बात की जाती है और किसी को आदर कैसे दिया जाता है, यह भी मैंने महाविद्यालय में सीखा। महाविद्यालय में मुझे नए-नए उत्सवों, दिवसों और प्रतियोगिताओं का भी पता चला और प्रतियोगिताओं में भाग कैसे लिया जाता है यह भी मैंने सीखा। मेरे व्यक्तित्व में आत्मविश्वास और निडरता का भी समावेश हुआ।

महाविद्यालय में एक बहुत बड़ा पुस्तकालय भी है, जिसमें हर विषय से संबंधित पुस्तकें हैं। हिंदी भाषा के प्रोफेसर ने हम सभी को पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित किया और अखबार तथा पत्रिकाएँ आदि पढ़ने की भी सलाह दी। पुस्तकालय में बहुत शांति होती है और बहुत से पढ़ने-लिखने के शौकीन विद्यार्थी वहां बैठते हैं। बार-बार पुस्तकालय जाने के बाद मुझे भी वहां अच्छा महसूस होने लगा और अब पुस्तकालय जाना मेरी आदत में शामिल हो गया है।

निष्कर्ष रूप में मैं कह सकती हूँ कि कॉलेज की ज़िंदगी बहुत अच्छी होती है। इसमें हमें बहुत कुछ ऐसा सीखने को मिलता है जो बाद के वर्षों में हमारे जीवन में मददगार साबित होता है। महाविद्यालय में मेरा व्यक्तित्व पूरी तरह से बदल गया है। एक वर्ष में ही मैंने बहुत कुछ जाना, सोचा-समझा और सीखा, जो निःसंदेह मेरे भावी जीवन में मेरे लिए मददगार होगा। यहां पर मैंने पढ़ाई और मौजमस्ती में संतुलन बनाना सीखा, क्योंकि पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद, घूमना-फिरना, मौजमस्ती करना भी ज़रूरी होता है, क्योंकि जीवन का यह समय बार-बार नहीं आता।

मीनाक्षी रमसेठ, कला स्नातक, प्रथम वर्ष।

सरस्वती नगर महाविद्यालय के अविस्मरणीय तीन वर्ष

मेरा नाम पल्लवी धृजटा है। मैं लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सरस्वती नगर में कला स्नातक तृतीय वर्ष की छात्रा हूं। मेरा कॉलेज का सफ़र शुरू होता है वर्ष 2020 से। कॉलेज में प्रवेश लेने से पहले मेरा मन कॉलेज जाने के लिए बहुत उत्सुक था, पर कहीं न कहीं मन में भय भी था। प्रवेश लेने के बाद जब मैं पहली बार महाविद्यालय पहुंची तो मेरा मन बहुत विचलित था। रोज कॉलेज आना, कक्षाओं में जाना, यह सिलसिला कुछ दिनों तक चलता रहा। कुछ समय बाद देश के साथ-साथ हमारे क्षेत्र में भी कोरोना जैसी भयानक महामारी तेज़ी से फैलनी शुरू हो गई और इसी के कारण हमारा महाविद्यालय बंद हो गया, लेकिन हमारी पढ़ाई ऑनलाइन माध्यम से चलती रही।

महाविद्यालय का प्रथम वर्ष बड़ा ही अच्छा बीता। मुझे आज भी वह दिन याद है जब मैं उत्सुकता से कॉलेज आती-जाती थी। पहले वर्ष में हमारी पढ़ाई ऑनलाइन माध्यम से ही पूरी हुई और जैसे-जैसे दिन बीतते गए कोरोना का कहर भी कम होता चला गया और एक बार पुनः कॉलेज खुल गया। परंतु इस समय भी मेरी मनोदशा वैसे ही थी। धीरे-धीरे कॉलेज के शिक्षकों के साथ जान-पहचान होने लगी और कॉलेज में नए मित्र भी बनने लगे तो कॉलेज जाना अच्छा लगने लगा, अर्थात सारा डर और घबराहट समाप्त हो गई।

मैं कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना से भी जुड़ी और मैंने उसमें होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना शुरू किया। मैंने लोकनृत्य और अन्य नृत्य-प्रस्तुतियों में अपना कौशल दिखाया और मेरे अच्छे नृत्य-प्रदर्शन से अध्यापक और विद्यार्थी बहुत प्रसन्न हुए थे। अच्छे नृत्य के कारण कॉलेज में मेरी एक अलग पहचान बन गई थी।

अब बात आती है कॉलेज के दूसरे वर्ष की। दूसरा वर्ष पहले वर्ष से भी ज्यादा अच्छा बीता, क्योंकि कॉलेज में मेरी बहुत अच्छी पहचान बन गई थी। एक तो नृत्य की वजह से और दूसरे मैंने प्रथम वर्ष की परीक्षा में अपनी कक्षा में पहला स्थान प्राप्त किया था। दूसरे वर्ष भी मैंने राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के अंतर्गत होने वाले कार्यक्रमों में भाग लिया। हमारे महाविद्यालय से प्रतिवर्ष युवा महोत्सव समूह तीन की प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया जाता था और मेरे लिए यह बहुत सुखद था कि इस वर्ष महाविद्यालय से युवा महोत्सव के लिए मेरा भी चयन हुआ। इस वर्ष यह उत्सव गौतम ग्रुप ऑफ कॉलेज हमीरपुर में आयोजित हुआ। इस प्रतियोगिता में हम तेरह लड़कियों और दो अध्यापकों का समूह हमीरपुर गया। हमारे साथ महाविद्यालय के अध्यापक डॉ० रोहित मोकटा तथा तबला-वादक श्री जगदीश जी भी हमीरपुर गए थे। इस वर्ष हमने युवा महोत्सव समूह तीन में नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जो हम सभी प्रतिभागियों, हमारे महाविद्यालय परिवार और पूरे क्षेत्र के लिए गौरवशाली उपलब्धि थी। मेरे लिए यह क्षण बहुत ही अविस्मरणीय था। इन सारी गतिविधियों में भाग लेने के बाद भी मैंने अपनी पढ़ाई पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ने दिया, क्योंकि मैंने अक्सर देखा है कि कुछ विद्यार्थी पढ़ाई को छोड़कर खेलों तथा दूसरी गतिविधियों में ज्यादा व्यस्त रहते हैं और पढ़ाई में पिछड़ जाते हैं, लेकिन मैंने ऐसा नहीं होने दिया। इसी प्रकार द्वितीय वर्ष भी परीक्षाओं के साथ समाप्त हुआ। मेरे जीवन में कॉलेज के द्वितीय वर्ष के बहुत यादगार पल हैं, जो मुझे हमेशा जीवन भर याद रहेंगे।

अब हमारे द्वितीय वर्ष का परीक्षा परिणाम भी घोषित हो गया था और इस वर्ष भी मैंने अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था और साथ ही साथ पूरे महाविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था, जो मेरे लिए बहुत ही गर्व और आनंद की बात थी। अब बात करते हैं महाविद्यालय के तीसरे और अंतिम वर्ष की। यह वर्ष मेरे लिए अब तक के जीवन का सबसे यादगार वर्ष है, क्योंकि इस वर्ष ने मेरे जीवन में अनेक परिवर्तन लाए। इस वर्ष मुझे महाविद्यालय के केंद्रीय छात्र संघ की उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया, यह नियुक्ति मेरिट लिस्ट के आधार पर की गई थी। हमें महाविद्यालय परिवार द्वारा ब्लेजर और बैज प्रदान किया गया और मैंने भी संघ के अन्य सदस्यों के साथ शपथ ग्रहण की। यह पल मेरे जीवन का सबसे अच्छा पल था, क्योंकि यह मुकाम मैंने अपनी मेहनत से प्राप्त किया था। इसी के साथ इस वर्ष फिर से मेरा चयन युवा महोत्सव समूह तीन के अंतर्गत होने वाली लोकनृत्य प्रतियोगिता के लिए हुआ। इस वर्ष यह प्रतियोगिताएँ सरदार पटेल विश्वविद्यालय मंडी में आयोजित की गईं। परंतु इस वर्ष हमारे कॉलेज को युवा महोत्सव में कोई भी स्थान प्राप्त नहीं हुआ, जिससे मुझे तथा पूरे महाविद्यालय परिवार को निराशा हुई। परंतु इस निराशा से भी मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

मुझे इस महाविद्यालय में गुरुजनों के रूप में बहुत महान व्यक्ति मिले हैं। महाविद्यालय के सभी अध्यापक बहुत ही सहायक और प्रेरक है। मेरे जीवन में सभी गुरुजनों ने नई ऊर्जा और रोशनी लाई है। पढ़ाई के साथ-साथ अन्य चीजों में भी मुझे शिक्षकों ने पूरा सहयोग और प्रेरणा दी। आज इस महाविद्यालय में मेरी जो भी पहचान है, उसमें मेरे माता-पिता तथा अध्यापकों की प्रेरणा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रोफेसर रवि प्रकाश शर्मा तथा मैडम सपना तांटा, जो मेरे हिंदी के शिक्षक हैं, वे इस महाविद्यालय में मेरी प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। उन्होंने हमेशा ही मेरा मार्गदर्शन किया है, चाहे वह पढ़ाई का क्षेत्र हो या कोई भी सांस्कृतिक या अन्य क्षेत्र हो। इसी तरह महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० प्रेम प्रकाश चौहान जी ने भी हमेशा मुझे प्रेरणा तथा मार्गदर्शन दिया है। संगीत के अध्यापक डॉ० रोहित मोकटा ने सदैव ही मुझे सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा अन्य क्षेत्रों में प्रोत्साहित किया है। इस महाविद्यालय के सभी अध्यापकों ने सदैव मेरा मार्गदर्शन किया है तथा मेरा मनोबल बढ़ाया है। मैं अपने शिक्षकों और अपने महाविद्यालय की जितनी भी तारीफ करूँ वह कम ही होगी, क्योंकि इस महाविद्यालय में मुझे विशेष पहचान मिली और मुझे अपनी प्रतिभा का पता चला।

इस महाविद्यालय में मेरी बहुत अच्छी स्मृतियाँ हैं तथा कुछ बुरी स्मृतियाँ भी हैं, परंतु मैंने कभी भी बुरी चीजों से निराश होना नहीं सीखा। इस महाविद्यालय में मेरे व्यक्तित्व पर यह सबसे बड़ा प्रभाव पड़ा कि अब मैं जीवन के दोनों पलों खुशी और दुख में स्वयं को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करना और संभालना सीख गई हूँ। इस महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की मैं जीवन भर ऋणी रहूँगी। कॉलेज के यह तीन वर्ष न जाने कैसे बीत गए, परंतु इन तीन वर्षों में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला, जो भावी जीवन में मेरे काम आएगा।

पल्लवी धृजटा

कला स्नातक, तृतीय वर्ष।

सरस्वती नगर महाविद्यालय में दो वर्षों का अनुभव

मेरा नाम महक है। मैं कला स्नातक द्वितीय वर्ष की छात्रा हूं। मेरे गांव का नाम डोडरा है। मैंने वर्ष 2021 में महाविद्यालय में प्रवेश लिया। जब मैंने पहले दिन महाविद्यालय में प्रवेश लिया, तब मुझे बहुत घबराहट हो रही थी। मैं सोच रही थी कि कॉलेज का माहौल कैसा होगा और वहां पर भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग होंगे, मेरी कोई दोस्त बनेगी या नहीं। लेकिन मुझे खुद को इस माहौल में ढालने के लिए काफी समय लग गया था, पर मैं कॉलेज के बहुत से विद्यार्थियों के साथ घुलमिल गई थी। तभी मुझे पता लगा कि मेरे गांव के पड़ोसी गांव क्वार, जांगलिख, जशकुन आदि गाँवों से भी कुछ छात्र-छात्राएँ यहां पढ़ने आए हैं, तो मैं फूली नहीं समा रही थी। हालाँकि मैं उनको नहीं जानती थी, लेकिन मेरे लिए यह बहुत बड़ी बात थी कि हमारे डोडरा-कवार से बहुत बच्चे यहां पढ़ने आए हैं। मैंने उन सब से मुलाकात की और धीरे-धीरे हम लोगों में दोस्ती हो गई। हम लोग साथ में कॉलेज जाते, कक्षाएं लगाते और खाली समय में फेसबुक, इंस्टाग्राम में रील्ज़ बनाते, मौज मस्ती करते और महीने में एक बार हाटेश्वरी माता के मंदिर जाते।

कक्षाएँ सुचारू रूप से चल रही थीं। धीरे-धीरे समय बीतता गया और इसके बाद दिसंबर में हमारे मिड टर्म के पेपर शुरू हो गए। पेपर खत्म होने पर कॉलेज में छुट्टियाँ हो गईं और सारे छात्र-छात्राएँ अपने घर चले गए। एक महीने की छुट्टी में मैंने अपने गांव में खूब मौजमस्ती की और बर्फ का आनंद लिया। एक महीना कब खत्म हुआ पता ही नहीं चला। पाँच फरवरी से कॉलेज खुल गए और कक्षाएं प्रारंभ हो गईं। मई में हमने प्रथम वर्ष के अंतिम पेपर दिए, जिनका परिणाम आना बाकी था।

हम लोगों को अगली कक्षा में प्रवेश लेना पड़ा, क्योंकि द्वितीय वर्ष की कक्षाएँ शुरू हो गई थीं। 14 सितंबर 2022 को हमारे कॉलेज में हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। इसमें कई विद्यार्थियों ने भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन, कविता पाठ, संगीत, नृत्य आदि गतिविधियों में भाग लिया था। पहले तो मैं भाषण प्रतियोगिता में भाग नहीं ले रही थी, लेकिन हमारे हिंदी के अध्यापक ने मुझे समझाया कि यह मौका बार-बार नहीं मिलेगा, इसलिए मुझे इस में भाग लेना चाहिए। हमारी हिंदी की अध्यापिका ने भी कहा कि तुम कर सकती हो, डरो मत। मैंने भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया और सर तथा मैम के इस प्रोत्साहन के कारण मुझे भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। मेरे लिए बहुत हर्ष की बात थी कि मैंने सर और मैम का भरोसा बनाए रखा। मैं रवि प्रकाश सर और सपना मैम का धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने मुझे सही मार्ग दिखाया और मेरे डर को मिटाया है।

इसी प्रकार कॉलेज में कई कार्यक्रम हुए। 10 मार्च को वार्षिकोत्सव मनाया गया, जिसमें हमारे शिक्षा मंत्री श्री रोहित ठाकुर जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने 166 छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इन छात्र-छात्राओं की सूची में मेरा नाम भी था, मेरे लिए यह खुशी की बात थी कि मुझे भी शिक्षा मंत्री द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। ये इस सत्र का अंतिम कार्यक्रम था। इसके बाद 4 अप्रैल से हमारी द्वितीय वर्ष की परीक्षाएँ शुरू हो गई थीं।

कॉलेज के दो साल किस तरह गुज़र गए, इसका अहसास ही नहीं हुआ। वक्त कितनी जल्दी निकल जाता है। आए थे यहां अनजान बनकर और अब यहां यादें बन गईं। जब देखा अब पन्ना पलट कर मज़ेदार था वह दो वर्ष का सफर। अतः किसी ने ठीक ही कहा था कि 'नो नॉलेज विदाउट कॉलेज'। यह बात सच्ची सिद्ध हुई है। मुझे कॉलेज जाकर पता चला कि हमारे जीवन में कॉलेज जाना कितना ज़रूरी है, क्योंकि कॉलेज में आने के बाद हमें अच्छे-बुरे, सही-गलत कई चीज़ों का अनुभव होता है, विभिन्न लोगों से विभिन्न बातें सीखने को मिलती है और हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। इस प्रकार कॉलेज में मेरा दो वर्षों का अनुभव अत्यंत उत्साहवर्धक एवं आनंदपूर्ण रहा। यह मेरे जीवन का चिरस्मरणीय अनुभव था।

महक नेगी
कला स्नातक, द्वितीय वर्ष

कॉलेज के तीन वर्ष : स्मृतियों का एक चित्राधार

मेरा नाम नीतिका है। मैं कला स्नातक तृतीय वर्ष की छात्रा हूं। मैंने वर्ष 2020 में राजकीय लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय सरस्वती नगर में प्रवेश लिया। मेरे कॉलेज के तीन वर्षों का अनुभव बहुत अच्छा है। कॉलेज के तीन साल कैसे गुजरे इसका पता ही नहीं चला। जिस वर्ष मैंने महाविद्यालय में प्रवेश लिया था, उस दौरान भारतवर्ष में कोरोना महामारी फैल चुकी थी, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोविड-19 नाम देकर महामारी घोषित किया। अगले एक वर्ष तक कोरोना महामारी ने हमारे जीवन को हर प्रकार से प्रभावित किया। इसके कारण सभी कॉलेज, स्कूल और अन्य सभी दफ्तर बंद हो गए। लॉकडाउन के कारण सभी कार्य ऑनलाइन होने लगे। पढ़ाई भी ऑनलाइन होने लगी। ऑनलाइन कार्य कैसे होते हैं इसके बारे में मुझे ज्यादा जानकारी नहीं थी, किंतु कोरोना ने सब सिखा दिया। ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाई होती रही और मुझे धीरे-धीरे ऑनलाइन पढ़ाई समझ में आने लगी। ऑनलाइन में नेटवर्क की समस्या होती थी, लेकिन फिर भी ऑनलाइन कक्षाएँ हम सभी की मजबूरी थी।

वर्ष 2021 में स्थिति नियंत्रण में आने लगी और लंबे समय बाद स्कूल, कॉलेज, दफ्तर खुलने लगे। वर्ष 2021 में जब मैं पहली बार कॉलेज गई तो मेरे मन में कॉलेज को लेकर बहुत घबराहट थी और मुझे खुद को कॉलेज के माहौल में ढालने के लिए काफी समय लग गया। मैं कॉलेज में हिंदी और दर्शनशास्त्र की छात्रा थी। कॉलेज में सन 2021 और 2022 में 14 सितंबर को हिंदी दिवस धूमधाम से मनाया गया, जिसमें मैंने भी प्रतियोगिताओं तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लिया। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं कि मुझे मेरे हिंदी के शिक्षकों का अत्यधिक सहयोग मिलता रहा। वह मुझे हर तरह के कार्य के लिए प्रोत्साहित करते हैं। मैं हिंदी के शिक्षकों की ऋणी रहूंगी, क्योंकि उन्होंने सदैव ही मुझे मेरे माता-पिता की तरह निर्देशित किया और दोस्तों की तरह मेरा साथ दिया। इस कारण मेरे दिल में उनका एक विशेष स्थान है, जो जीवन भर रहेगा।

मैं हिंदी के साथ दर्शनशास्त्र की छात्रा भी हूं। दर्शनशास्त्र की कक्षा में तो हम सभी छात्राएं हैं और शिक्षक भी महिला ही हैं, जिस कारण हम सभी कक्षा में खुलकर अपने विचार रखते हैं और पढ़ाई के साथ-साथ मनोरंजन भी करते हैं। जब मैं अंतिम वर्ष में थी तो महाविद्यालय में नैक पियर टीम का आगमन हुआ। नैक टीम को महाविद्यालय के बच्चों का स्वभाव अत्यंत शांतिपूर्ण और संयमित लगा। बच्चों का व्यक्तित्व सादगी से परिपूर्ण था। महाविद्यालय के सभी शिक्षकों का बच्चों के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार, उनको प्रेरित करना, उनका भविष्य उज्जवल बनाने का प्रयास इस महाविद्यालय की एक और विशेषता है। महाविद्यालय के सभी शिक्षक और विद्यार्थी एक परिवार की तरह रहते हैं। मेरे तीन साल का महाविद्यालय का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा। मैंने महाविद्यालय में किसी न किसी कार्यक्रम में कोई न कोई भूमिका अवश्य अदा की। मैंने दर्शन समागम में अनेक गतिविधियों में भाग लिया, किंतु उनमें से एक गतिविधि अत्यंत महत्वपूर्ण एवं समाज को प्रेरित करने वाली तथा समाज में फैली बुराइयों पर थी। मैंने और मेरी सहेलियों ने धर्म नामक विषय पर सामूहिक चर्चा की थी। इसमें हमने हिंदू और मुस्लिम धर्म में फैली बुराइयों और अच्छाइयों पर प्रकाश डालने की कोशिश की। हमारा यह प्रयास सभी को बहुत अच्छा लगा।

कॉलेज के तीन वर्षों में हर छोटे-बड़े कार्यक्रम, हर गतिविधि और हर घटना से मैंने कुछ न कुछ सीखा। मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि मुझे बहुत अच्छे शिक्षक मिले, जिन्होंने मुझे सहयोग दिया और अच्छे मार्ग पर चलने की शिक्षा दी। मुझे एक बेहतर विद्यार्थी बनाने के लिए मैं अपने शिक्षकों का बहुत धन्यवाद करती हूं। जिस समय में यह लेख लिख रही हूं, यह ऐसा समय है जब मेरे कॉलेज के कुछ ही दिन बचे हैं और उसके बाद परीक्षाओं के साथ ही मेरे कॉलेज का जीवन पूर्ण हो जाएगा। उसके बाद हम सभी विद्यार्थी किसी न किसी नए रास्ते पर चल देंगे और किसी मंज़िल की तलाश करने लगेंगे, लेकिन सरस्वती नगर महाविद्यालय में बिताए गए दिन और यहां पर सीखी गई बहुत सी बातें हम सभी को जीवन भर याद रहेंगी और हमें मार्गदर्शन देती रहेंगी।

मैं आशा करती हूं कि जो नए विद्यार्थी इस महाविद्यालय में पढ़ने आएंगे, उन्हें यहां पर वैसा ही अच्छा वातावरण मिलेगा और शिक्षकों का स्नेह और मार्गदर्शन भी वैसे ही मिलेगा जैसे हमें मिला था। यहां आने वाले विद्यार्थी महाविद्यालय में किसी न किसी कार्यक्रम, गतिविधि या आयोजन में भाग लेंगे और हमारी तरह नए अनुभव प्राप्त करेंगे, जो उनका जीवन बेहतर बनाएंगे।

नीतिका रमसेठ, कला स्नातक, तृतीय वर्ष।

सरस्वतीनगर महाविद्यालय : एनएसएस और मैं

2020 एक ऐसा वर्ष था, जिसमें सभी लोग परेशान और बेचैन थे। कोरोना वायरस के कारण फैली महामारी ने सारी मानवता को निराश कर दिया था। ऐसे में हम सभी को अपने सपने टूटते नज़र आ रहे थे, लेकिन बड़ों का कहना है कि जहां चाह वहां राह। मैं हूं सिमरन, सरस्वती नगर महाविद्यालय में अंतिम वर्ष की छात्रा हूं। बारहवीं की परीक्षा विज्ञान संकाय से उत्तीर्ण करने के बाद मैंने आईटीआई जुब्बल में एक वर्ष के लिए प्रवेश लिया और उसमें इलेक्ट्रिशियन का डिप्लोमा प्राप्त किया। हालाँकि आईटीआई में प्रवेश मैंने बड़े ही अनमने भाव से लिया था, मगर फिर भी वहां पर मैंने अपने विषयों में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। आईटीआई मैं निर्देशक के तौर पर कार्यरत श्री देविंदर नरगेटा ने मुझे प्रोत्साहित किया कि मुझे कॉलेज जाकर अपनी पढ़ाई को फिर से आरंभ करना चाहिए।

मैंने सन 2020 में कॉलेज में प्रवेश ले लिया। हालांकि इस वर्ष कोरोना की वजह से ऑनलाइन माध्यम से ही थोड़ी-बहुत पढ़ाई होती रही। मैंने विज्ञान संकाय को छोड़कर कला संकाय में प्रवेश लिया था, इसलिए मेरे सामने बहुत सी चुनौतियाँ थीं। इसके साथ-साथ मैंने महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना यानी एनएसएस इकाई में भी अपना पंजीकरण करवा लिया था। 2020 में एनएसएस का सात दिवसीय शिविर की सभी गतिविधियाँ दिन में ही संपन्न हुई। इस शिविर में मैंने बहुत कुछ हासिल किया। इस शिविर में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मैंने नृत्य आदि किया, जिसके कारण मेरी अलग पहचान बनने लगी और साथ-साथ मैं तकनीकी तौर पर भी अच्छा कार्य कर लेती थी, जैसे वीडियो बनाना पीपीटी बनाना, कोलाज बनाना, रिपोर्ट लिखना आदि। इन सबके कारण मुझे एक अलग स्थान मिल गया। सभी विद्यार्थी और अध्यापक मुझे पहचानने लगे।

इसके बाद अगले वर्ष महाविद्यालय में राज्य स्तरीय आत्मरक्षा तकनीक शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें मैंने जीतोड़ मेहनत की और मुझे शिक्षकों से बहुत सराहना मिली। इसी बीच हमारी कार्यक्रम अधिकारी प्रोफेसर संधीरा का तबादला हो गया और उनकी जगह प्रोफेसर प्रीति पांटा आई। प्रीति मैम का व्यवहार और उनका सकारात्मक दृष्टिकोण हम सभी को बहुत पसंद आया। उन्होंने मुझे हर तरह से सहयोग दिया। साल 2022 में मुझे एनएसएस इकाई का सचिव नियुक्त किया गया और 12 सितंबर से नारकंडा में आयोजित नेशनल एडवेंचर कैंप में भी मुझे भेजा गया। वहां पर मैंने अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति को आज़माया और बहुत से रोमांचक कार्य किए। मुझे वहां पर कोच से बहुत ज्यादा प्रशंसा मिली। मेरी वजह से कॉलेज का नाम भी रोशन हुआ। मैं सोचने लगी थी कि कहां तो मैं यह सोच कर आई थी कि मेरा कॉलेज का अनुभव न जाने कैसा रहेगा और कहां मुझे कॉलेज में बहुत प्रशंसा और प्रसिद्धि प्राप्त हो गई थी।

महाविद्यालय में केंद्रीय छात्र संघ का जब गठन किया गया तो मुझे समाज सेवा के अंतर्गत सदस्य नामित किया गया। इसी दौरान नैक टीम ने महाविद्यालय का दौरा किया और हमारी एनएसएस यूनिट के कार्यों की उन्होंने खूब सराहना की। मेरे शिक्षकों ने मुझे शाबाशी देते हुए कहा कि इस उपलब्धि में तुम्हारा बहुत बड़ा योगदान है। इन सब से मैंने यह सीखा कि हर एक व्यक्ति को चाहिए कि वह स्वयं को आगे लेकर आए और अपने लिए स्वयं एक मंच बनाए। यदि हम खुद को महत्त्व नहीं देंगे, आगे लेकर नहीं आएंगे तो हम केवल भीड़ का हिस्सा बनकर रह जाएंगे। इसी दौरान 2023 में जनवरी के महीने में 12 से 16 तारीख तक हुबली, धारवाड़, कर्नाटक में राष्ट्रीय युवा महोत्सव मनाया गया, जिसमें मुझे भी प्रतिनिधि के तौर पर भाग लेने का मौका मिला। मैंने पहली बार इतना लंबा सफर किया था। जुब्बल से दिल्ली और दिल्ली से कर्नाटक पहुंचने में काफी समय लग गया था। लेकिन धारवाड़ पहुंचने पर हमारा भव्य स्वागत किया गया। वहां पर अलग-अलग प्रदेशों से आए विद्यार्थियों से मिलने का मौका मिला, जिसके कारण मुझे विभिन्न संस्कृतियों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। वहां पर हमने अपने प्रदेश और अपने कॉलेज का नाम रोशन किया। कर्नाटक से श्रीलंका भी बहुत नज़दीक लग रहा था। वहां पर हमें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, श्री अनुराग ठाकुर और कर्नाटक के स्थानीय नेताओं से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। यहां से हम गोवा घूमने भी गए। 18 जनवरी को मैं वापस आ गई। दिल्ली रुक कर मैंने वहां पर संसद, राष्ट्रपति भवन और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा की। यह सब मेरे लिए अविस्मरणीय अनुभव थे।

इन यात्राओं से निपट कर मैं घर पहुंची। जब मैं कॉलेज गई तो मुझे प्राचार्य महोदय द्वारा सम्मानित किया गया। एनएसएस के कार्यक्रम अधिकारियों प्रोफेसर पवन कुमार और प्रोफेसर प्रीति पांटा ने भी मेरी बहुत सराहना की और अन्य शिक्षकों तथा गैर-शिक्षकों ने भी मुझे बहुत स्नेह और आशीर्वाद दिया। 2023 में ही मार्च महीने में आयोजित वार्षिकोत्सव में भी मुझे शिक्षा मंत्री श्री रोहित ठाकुर द्वारा सम्मानित किया गया। मेरे क्षेत्र के लोगों के लिए अब मैं वह सिमरन नहीं रही, जो पहले हुआ करती थी। मेरा एक अलग स्थान बन गया है और मुझे इस बात की खुशी है कि मेरी वजह से मेरे माता-पिता तथा परिवारजनों का शीश गर्व से ऊँचा हो गया है। यह मेरे लिए बहुत हर्ष का विषय है।

मैं अनुभव करती हूं कि जिंदगी एक खूबसूरत कहानी है, जिसमें सुख-दुख दोनों आएंगे, लेकिन हमें अपने आप को इस काबिल बनाना चाहिए कि हम दुख के पलों को भी उसी संयम और अनुशासन से झेलें, जिस तरह से हम सुख के पलों का स्वागत करते हैं।

मैं अपने तीन वर्षों के कॉलेज के अनुभवों को थोड़ी से पन्नों में नहीं समेट सकती। एनएसएस ने मुझे वह मुकाम प्रदान किया है, जो हर किसी को नहीं मिलता। मैं आशा करती हूं कि सरस्वती नगर महाविद्यालय इसी तरह शिक्षा तथा अन्य गतिविधियों और कार्यक्रमों में दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करता रहेगा। इस कॉलेज में बिताए गए सभी पल मुझे जीवन भर याद रहेंगे और मेरा जीवन बेहतर बनाएंगे।

सिमरन खेउटा

कला स्नातक, तृतीय वर्ष।

कलयुग का आगमन

वर्षों से चली आ रही है कालचक्र की माया
सतयुग, त्रेता, द्वापर और फिर कलयुग है आया
आया वो ऐसे कि धर्म हो गया धूल
मानव अपने ही रिश्तों को मानो जैसे गया हो भूल।
बात यह है उस वक्त की जब कृष्ण ने त्यागे प्राण
रोने लगी पृथ्वी देवी जब सीने पर लगे अधर्म के बाण
जब लगा सताने कलयुग पृथ्वी और धर्म को
तब पांडवों का वंशज परीक्षित गुज़र रहा था राह से
दोनो की ऐसी हालत देखी न जाए राजा से
उठाया अपना धनुष बाण और तान दिया था कलयुग पर
लगा माँगनेगने माफी कलयुग आ गिरा पैरों पर
माफी दे दी परीक्षित ने, बोला - "जाओ मेरी सरहद से दूर!"
पर कलयुग ने किया उन्हें विनती करके मजबूर
राजा ने सोच-समझ कर उसे रहने को दिए चार स्थान -
झूठ, हिंसा, परस्त्रीगमन और मद्यपान
लालच बढ़ा कलयुग का, विनती की राजा से
और पाया स्वर्ण में स्थान
पाकर स्थान सोने में मंद-मंद मुसकाया वो
पल भर में ही बैठ गया राजा के स्वर्ण मुकुट में वो
मिला श्राप फिर राजा को
कुछ दिन में प्राण निकल गए
और कलयुग पृथ्वी पर ही रह गया।
समय का पहिया चलता रहा
कलयुग और ताकतवर होता रहा
असत्य का बोलबाला बढ़ा
स्त्री का होने लगा अपमान
क्रोध आना आम बात बन रही
त्राहि-त्राहि मच रही हर जगह
उन्मुक्त भोग ही मानो जैसे जीने की हो एक वजह
कैसा ये वक्त आ गया है कि पाप पुण्य पर भारी है
अभी तो सिर्फ कलयुग है, बाकी अभी घोर कलयुग की बारी है।
चोरी, डकैती, प्रताड़ना, बढ़ रहे हैं बलात्कार
ख़ून-खराबा, मारपीट, हो रहा है भ्रष्टाचार
आएगा फिर वो वक्त भी
जब कृष्ण लेंगे कल्कि अवतार
उद्धार होगा पृथ्वी का, बस जाएगा उजड़ा संसार।

-- आशा चौहान
कला स्नातक, द्वितीय वर्ष।

माँ डाँटती है दिल से कहाँ

हाँ, माँ डाँटती तो है दिल से कहाँ
तुम्हें प्यार भी तो करती है न माँ,
गिरते तुम हो चोट भी तुम्हें लगती है
फिर भी दर्द महसूस करती है न माँ।
तुम चाहो दूर कितने भी चले जाओ
परवाह भी तो करती है न माँ,
हाँ, माँ डाँटती तो है दिल से कहाँ।

माँ से लड़ते तुम हो झगड़ते तुम हो
फिर भी मनाती तो है न माँ,
माँ को हर समय चिंता होती है बच्चों की
अपने हाथ से खाना भी तो खिलाती है न माँ।
जब हम जन्म लेते हैं चलना भी तो सिखाती है माँ
हाँ, माँ डाँटती तो है दिल से कहाँ।

-- विकी करासटा
कला स्नातक, तृतीय वर्ष।

महिला सशक्तिकरण

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किसी समय कहा था कि लोगों को जगाने के लिए महिलाओं का जागृत होना ज़रूरी है। यह सच है कि एक बार जब महिला अपने कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है। भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों का हनन करने वाली प्रथाओं को नष्ट करना ज़रूरी है ल, जैसे दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, वेश्यावृत्ति, मानव तस्करी आदि। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है, जो देश को पीछे की ओर धकेलता है।

भारत के संविधान में उल्लिखित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली उपाय है। अनेक प्रकार की बुराइयों को मिटाने के लिए, महिला सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इसके प्रति जागरूकता हर एक परिवार में बचपन से प्रचारित और प्रसारित करनी चाहिए। यह ज़रूरी है कि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रुप से मजबूत हों। आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता-पिता की अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी की वजह से कम उम्र में विवाह और बच्चे पैदा करने का चलन है। महिलाओं को मज़बूत बनाने के लिए महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिए सरकार अनेक कदम उठा रही है।

प्रिया चाज़टा
कला स्नातक, प्रथम वर्ष।

English Section

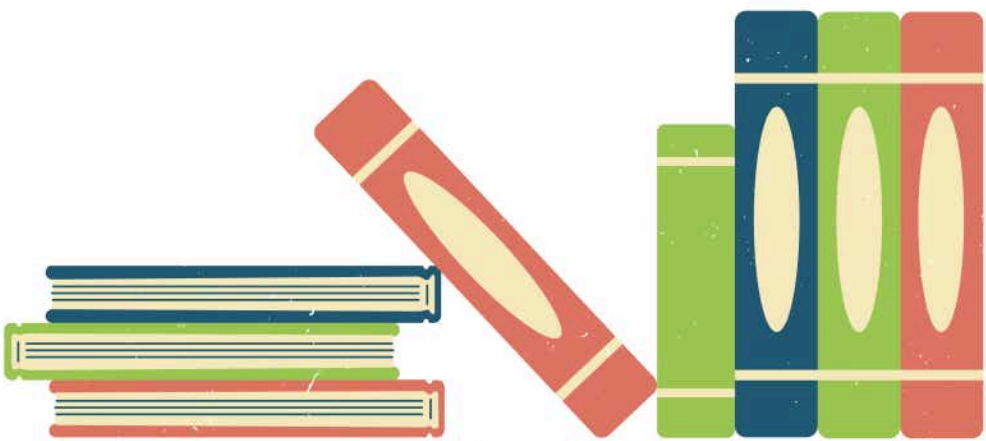

Teacher's Editorial

It gives me an immense pleasure to bring forth this English Section of the college magazine Hatkeshwari for the session 2022-23. I would extend heartfelt congratulations to all the student contributors and editorial team of Hatkeshwari. College magazine portrays thoughts, ideas, dreams, creative writings and aspirations of young minds. It is a platform that provides exposure to students to exhibit their talents, along with freedom to express their views. This section consists of articles from diverse streams of knowledge which showcases creative potential of our youth. Our editors have left no stone unturned to polish works of students to give them presentable form. Hatkeshwari is such an effort to display wisdom, knowledge and intelligence of the students. The primary purpose of this section has been to channelise the ideas of students in their conscious efforts to express their thoughts, ideas in a lucid and beautiful manner.

As a sectional editor, I appreciate the efforts of my entire team and student contributors in bringing out this section successfully in spite of other regular commitments. I would also like to thank teachers from English department: Dr. Lalita Rawat, Head of the Department and Prof. Vijay Laxmi, without whose encouragement and mentorship, this task would not be feasible. I, once again congratulate the Hatkeshwari team for all their endeavors. May we together explore new dimensions in teaching-learning process and in turn these learnings should benefit the society at large.

Dr. Harsh Bhardwaj
Teacher Editor,

Words from the Student Editor

I feel delighted to present this beautiful bouquet of ideas and creative spirit to all our readers. This section includes poems, articles, biography, jokes, facts, lores, to name a few. Our contributors have researched meticulously on different topics in the internet and library, and then brought forth their works. Although editing is a tedious task, but it was just a cakewalk to go through the writings of our students. There were hardly any errors to be found. I also thank our mentors, teachers of the department who have been guiding lights throughout. Without their mentorship, this effort would be futile. Any mistake on our part is regretted. Hope you have an enjoyable reading!!!

Aarti Rawat
Student Editor
BA III

Content

Sr. No.	Topic	Writer
1.	My Mother	Sakshi Rawat
2.	A Magnificent View from my House	Manish Dimta
3.	Digital Marketing	Palak
4.	Heart matters, not Complexion	Mukul Jilta
5.	Turning Point in Indian Cricket	Paras Birta
6.	Tongue Twisters	Rita
7.	Let's Laugh Together	Anita
8.	Interesting Facts about Himachal Pradesh	Hitesh
9.	Importance of Library	Mahak Sharma
10.	John Keats: An Introduction	Shavik Sharma
11.	Raja Rao: An Introduction	Saloni
12.	ESL (English as a Second Language)	Saurav
13.	Women Empowerment	Aarti Rawat

My Mother

My Mother is the most important person in my life. She is a Supermom because she is always there for me. She is an inspiration for me. God cannot be always with us, that's why they made Mothers. My mom motivates me to grow and achieve better things in my life. She takes care of the whole family. She is so hard-working, dedicated, and very kind to everyone. Whenever my friends come to my home, she makes delicious food for us. She helps me and my friends with my studies. She clears all my doubts and confusion in various aspects of life. She is very patient while explaining complicated topics. I do not have to worry about anything when my Mom is with me. My mother has done a lot of sacrifices for my happiness. Love and affection she gives me is infinite. I love her. I love my father too. I am luckiest to have such parents in my life.

By: Sakshi Rawat, BA 2nd year

A Magnificent View from my House

So many mixed sounds can be heard while I wake up in the morning
with a vigorous energy in my body.
Rays of sun straightly touch my eyes ,
At the moment i open the door of my room,
Birds are chirping and remain in flight.
Trees are blossoming and flowers are in the state of bloom.
I keep wandering for no reason here and there, as it gives me a feeling of immense joy.
Seeing such captivating view, the whole world for me becomes a piece of sphere,
Seems that birds are playing with flowers as a child with toys.
Then i start singing song in the same way as bird's chirping sound
I find myself as lost in music as I have been drowned.
Altogether it's somewhat an immense bounty of nature that makes me sometimes feel unbound.

By: Manish Dimta, BA 1st year

Digital Marketing

In the present age, Digital marketing has become an intrinsic part of everybody's life, right from personal use to professional use. Digital marketing is a playground for people to keep their lives updated as well as to network with potentiality which will help their business grow. India is the second largest country with over 462 million internet users. With massive surge in internet, mighty population becomes the opportunity for business owners to network with potential customers. This is one huge reason why Digital marketing has emerged as one of the most sought after profession not only in India but globally as well.

Digital marketing is a simple way to reach out to new customers. It carries out marketing activities. It can also be called online marketing. Digital marketing enables oneto reach more people in less time. It is a technologically developing area. Today, Digital marketing is one of the most important strategic initiatives for businesses. Many people turn to internet for information on businesses and products as consumers like to be educated about their purchases. Using different digital marketing strategies to promote one's business and products will help one to reach one's audience through the channels that they are already with.

By: PALAK, B.A 1st year

Heart matters, not Complexion

Beauty is not about having a pretty face , it is all about having a pretty heart . The outer beauty of the person tends to fade away with age but the inner beauty keeps getting better with age . The inner beauty has the potential to build a strong bond between people that lasts forever. If you have kindness, honesty, forgiveness and care, then people will love you automatically .

We should do everything with a good heart and expect nothing in return . Beauty is based on commitment and understanding towards each other. Beauty lies in the eye of the beholder. So let us behold the beauty through feelings and spreading immense happiness and love everywhere .

By: MukuL Jilta
BA 2nd year

Turning Point in Indian Cricket

They were the worst years for Indian cricket. They were the best years for Indian cricket. To nominate 2007 as the year of the most seminal turning point for the sport in the country will be no exaggeration. It was the year of the World Cups – the traditional 50-over version in the Caribbean in the summer, and an untested but potentially exciting 20-over variant in South Africa a few months later. India were expected to do well in one and not at all in the other. So it transpired, though few would have foreseen the turn of events that ushered Rahul Dravid's men out of the 50-over competition at the very first stage, and catapulted first-time captain Mahendra Singh Dhoni's young, unheralded bunch to the status of inaugural champions of the T20 World Cup.

Shame and humiliation in the West Indies played a massive part in steeling India for a spectacular, successful assault on the next ODI World Cup, in their own backyard in 2011. Glory in the land of the Protea, meanwhile, provided just the fillip the Indian Premier League, which kicked off with much fanfare in 2008, required in its avowed desire to become the world's most premier franchise-based T20 competition.

If Indian cricket is vibrant on and off the park in 2022, it's got much to do with the germination of the seeds sowed wittingly or otherwise a decade-and-a-half back. The financial health of the sport is a direct offshoot of the burgeoning popularity of IPL, which today commands sponsorship and broadcast rights in tens of thousands of crores. The cricketing outlook owes itself to a robust commitment to domestic and long-form cricket, thus ensuring that while there is tremendous investment in the white-ball, and specifically T20 game, the longest version continues to remain a prime focus area for indisputably the most influential cricketing nation globally.

A new management team is in place now, with all-format skipper Rohit Sharma fortunate to fall back on the wisdom and sagacity of head coach Dravid. Two World Cups lie in store over the next 15 months, and it isn't without reason that the followers of the Indian team believe the painstakingly long ICC drought will soon come to an end. That will be the immediate challenge for a side that has lorded bilateral series but has of late found global competitions a bridge too far.

By: Paras Birta
BA lll

Tongue Twisters

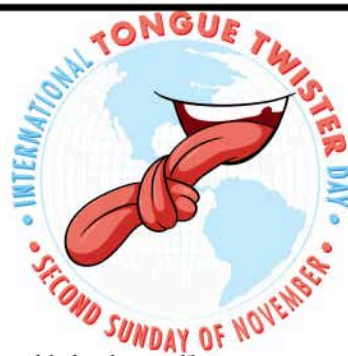

1. Peter Piper picked a peck of pickled peppers
A peck of pickled peppers Peter Piper picked
If Peter Piper picked a peck of pickled peppers
Where's the peck of pickled peppers Peter Piper picked?

2. Betty Botter bought some butter
But she said the butter's bitter
If I put it in my batter, it will make my batter bitter
But a bit of better butter will make my batter better
So 'twas better Betty Botter bought a bit of better butter

3. How much wood would a woodchuck chuck if a woodchuck could chuck wood?
He would chuck, he would, as much as he could, and chuck as much wood
As a woodchuck would if a woodchuck could chuck wood

4. She sells seashells by the seashore

5. How can a clam cram in a clean cream can?

6. I scream, you scream, we all scream for ice cream

7. I saw Susie sitting in a shoeshine shop

8. Susie works in a shoeshine shop.
Where she shines she sits, and where she sits she shines

9. Fuzzy Wuzzy was a bear. Fuzzy Wuzzy had no hair.
Fuzzy Wuzzy wasn't fuzzy, was he?

10. Can you can a can as a canner can can a can?

By: Rita BA II

Let's Laugh Together

1) A: I have the perfect son.
B: Does he smoke?
A: No, he doesn't.
B: Does he drink whiskey?
A: No, he doesn't.
B: Does he ever come home late?
A: No, he doesn't.
B: I guess you really do have the perfect son. How old is he?
2) A: He will be six months old next Wednesday.
Girl: You would be a good dancer except for two things.
Boy: What are the two things?
Girl: Your feet.
3) A family of mice were surprised by a big cat. Father Mouse jumped and and said, "Bow-wow!" The cat ran away. "What was that, Father?" asked Baby Mouse. "Well, son, that's why it's important to learn a second language."
4) My friend said he knew a man with a wooden leg named Smith.
So I asked him "What was the name of his other leg?"
5) The doctor to the patient: 'You are very sick'
The patient to the doctor: 'Can I get a second opinion?'
The doctor again: 'Yes, you are very ugly too...'
I use this joke for retelling in reported speech.

By Anita BA II

Interesting Facts about Himachal Pradesh

1.The word Himachal is a combination of the Sanskrit words, "Hima" and "Anchal", which means "snow" and "lap" respectively. It is no coincidence that the state is located in the lap of the Himalayas.

2.The integration of four districts, Mandi, Chamba, Mahasu, and Sirmour, with 30 princely states, led to the formation of Himachal Pradesh as a Union Territory in 1948. Eventually, in 1971, the province attained statehood and become the 18th state in India.

3.The area of Himachal Pradesh is 55,673 square kilometres.As per the 2011 census, the population of the state is 68,56,509.There are 68 assembly seats in Himachal Pradesh.There are 4 Lok Sabha seats in the state.The number of Rajya Sabha seats from Himachal Pradesh is 3.

4.The state has 5 national parks.

5.The principal languages spoken in Himachal Pradesh are Hindi and Pahari.

6.The animal symbol of Himachal Pradesh is snow leopard.

7.The bird symbol of Himachal Pradesh is Western Tragopan.

8.The flower symbol of Himachal Pradesh is Pink Rhododendron.

9.The Indian Cedar or Himalayan cedar is the tree symbol of Himachal Pradesh.

10.Majority of the local populace is employed in the agricultural sector. Agriculture provides direct employment to over 65% of the state's working population.Roughly 22% of the total state domestic product is attributed to income from agriculture and allied sectors.

11.The Kalka-Shimla Railway fondly known as the Toy train is a UNESCO World Heritage Site.The Kalka-Shimla Railway traverses the steepest slope (over 5800 ft) in least distance (roughly 95 kms). The train crosses over 800 bridges and 100 tunnels.

12.Followed by the southern state of Kerala, Himachal Pradesh is the least corrupt state in the nation.

13.Among India's greenest states, Himachal Pradesh has a staggering 37,033 square kilometres of forest area, which makes 66.52% of the total land area.

14.Himachal Pradesh is home to the largest glacier in Asia. The Shigri Glacier is located in the Lahaul – Spiti area and feeds the Chenab River.

15.The Manali – Leh National Highway is famed for being the highest motor able road in the world. Motorcycle enthusiasts flood the National Highway during summers for its picturesque landscape.

16.Located in Kullu, the Great Himalayan National Park is recognized as a UNESCO World Heritage Site. The park is spread across nearly 1200 square kilometres, and is home to a vast variety of flora and fauna.

17.At 22,360 feet above sea level, Reo Purgyil is the highest mountain peak in Himachal Pradesh.

By: Hitesh
BA lll

Importance of Library

The word library is derived from a French word "Librairie"; Latin "liber" = book. The library plays an important role in our academic and social lives. Library is an organized collection of information resources made accessible to a defined community for reference or borrowing and this collection of information may be in the form of books, newspapers, CD's, journals and research papers etc. library provides us physical or digital access to material, and may be a physical building or room, or a virtual space, or both containing collection of informative material. A library can be of different types like, school library, college library, office library or community library etc. and collection in a library may vary from books, periodicals, newspapers, manuscripts, films, maps, prints, documents, microform, CDs, cassettes, videotapes, DVDs, Blue-ray Discs, e-books, audio books, databases, and other formats. Libraries range in size from a few shelves of books to several million items.

Libraries offer free education and entertainment to the masses which can be a student, a work professional or a common person of a community. It doesn't matter what your economic status is, you can come in and have free access to books that can inform and transform you. Though the use of school/college and research libraries is limited only to the students of that particular school/college but state and community libraries are open for all and anyone can avail the benefits of these during working hours. It would not be wrong to say that a library is the store-house for books of all kinds and on all subjects under the one roof. A good modern library usually subscribes to practically all the important newspapers and periodicals so that these are made available to all those interested in these information sources.

Books, newspapers and periodicals are the main features of a library and they represent the endeavours, achievements and glory of writers, statesmen, scientists, philosophers and saints and one can learn a lot from these. A library can act as a local museum of sorts, displaying the type of information which simply can't be experienced on an online library through a computer or an I-pad. A library is not just a source for reading books and newspapers, in fact, it means a lot more than that. It should be a repository for local history, currently collected in a haphazard and voluntary manner by local groups who often lack the facilities to do so adequately. A library is a soul-nourishing place for people of any age, and a natural focal point for the meeting of minds.

By: Mehak Sharma, BA lll

John Keats: An Introduction

John Keats was one of England's greatest poets. He was born in London on 31 October 1795. His father Thomas Keats was an innkeeper. His mother was called Frances. The couple had 5 children. In 1803 John Keats went to Clarke's School in Enfield. However, in 1804 tragedy struck when his father was killed by falling off a horse. His mother quickly remarried. However, she soon separated from her new husband. John Keats then went to live with his grandmother. John was reconciled with his mother by 1809 but by then she was ill. She died in 1810.

In 1810 John left school and in 1811 he was apprenticed to a surgeon and apothecary in Edmonton. As a teenager, Keats became passionately fond of poetry and when he was about 18 he wrote his first poem, one entitled 'Imitation of Spenser'.

In 1815 John became a student at Guy's Hospital in London. But he continued to write poetry. In 1816 he had a poem published for the first time, in a magazine called The Examiner. It was a sonnet called 'O Solitude!'. Also in 1816, Keats passed his exams. Then in 1817, he published a book called 'Poems'. However, it was not a success, attracting little interest.

Nevertheless, Keats continued writing. His epic poem Endymion was published in 1818. During 1818-1819 Keats continued to write great poems including 'Ode to a Nightingale', 'Hyperion', 'The Eve of St Agnes', and 'Ode to Autumn'. However, in 1820 Keats fell ill with tuberculosis. He went to Italy in the hope that the climate might help. Nevertheless, John Keats died in Rome on 23 February 1821. He was only 25. Keats was buried in the Protestant cemetery.

By: Shavik Sharma BA lll

Raja Rao: An Introduction

Raja Rao was one of the most prominent writers in 20th-century India, known for his novels and short stories. The critic Ivar Ivask said his "greatest achievement [was] the perfection of the metaphysical novel."

Rao was born in Hassan (now Karnataka), South India in 1908. His family were Kannada Brahmins, and his father was a professor of the Kannada language in Hyderabad. Rao went to the University of Madras for undergraduate studies and France's Montpellier University to study literature for postgraduate. He also studied the French language at the Sorbonne.

He began publishing his first stories in magazines and journals in 1931, with his first novel, Kanthapura, coming out in 1938. When he returned to India the next year, he became involved in the nationalist movement. He labored alongside Jawarhal Nehru and Indira Gandhi, and sought his guru, Sri Atmananda, whom he met in Trivandrum, Kerala.

From 1966 to 1983, Rao lived in the United States and taught Indian philosophy at the University of Texas, Austin. Rao's works, all written in English, include the novels The Serpent and the Rope (1960), The Cat and Shakespeare (1965), and The Chessmaster and His Moves (1988), and short stories such as "A Client" (1934), "The Cow of the Barricades" (1938), "The Policeman and the Rose" (1963), "Jupiter and Mars" (1954), and "The Writer and the Word" (1965). He won the Neustadt prize in 1988 and the Sahitya Akademi award in 1992. In 1996, he published a series of his nonfiction writing on various topics, entitled The Meaning of India. In 2000, with his approval, the Samvad Undia Foundation, a nonprofit charitable trust, created the "Raja Rao Award for Literature" in order to "recognize writers and scholars who have made an out standing contribution to the Literature and Culture of the South Asian Diaspora." The award was bestowed seven times between 2000-2009, then discontinued. Rao died at the age of 92 on July 8, 2006. He married three times, the last being in 1986, and had one son.

By: Saloni BA ll

Women Empowerment

India is a country where a woman is always considered weak and scared. It is a mindset, not a reality. Women are special which is true but they do not need any support for anything. They are also capable of starting a business or doing something new. People have a mindset that girls always need help or they cannot travel alone. They are called technically weak. But the point is, ever one has certain qualities and abilities. There is no field where women have not flagged her name. Still, we have to discuss about women empowerment.

Even in this modern era, we are discussing women empowerment, this automatically triggers the importance of the topic. It is the uneven treatment, which leads to the wire on this topic even today.

A woman is enough capable of doing things on her own, still, people call her weak. Either the empowerment is regarding education, politics, space, sports, etc. they have earned fame everywhere. Still, they said to be incapable. Actually, they were never given a chance before. Our male-dominated society feels superior and more capable of taking any kind of decision. But they should change this mindset and give women equal opportunities. And the most important thing is to just believe in them and treat them equally.

Women have been victimized for centuries in our societies. They were not allowed to attend schools, were not allowed to take decisions, travel alone, etc. all of these were imposed by the patriarchal society.

It is not true that a woman cannot do such things, but the truth is she was not allowed to do such things. A woman is always considered inferior to a man. Which is not the reality because both are identical creatures created by God. They only bear some biological differences. Although there is no field where a woman has not left her impression, still there are certain places and people, who do not allow girls for schools. Girls are only meant for household work and to fulfill the need of a man. Either it is in terms of a house cleaner or something else. Women should be given equal opportunity to read, to do whatever she wants. Just trust her once and see what else she can do. She will never disappoint you.

By: Aarti Rawat BA lll

ESL (English as a Second Language)

English as a second or foreign language is the use of English by speakers with different native languages. Language education for people learning English may be known as English as a second language (ESL), English as a foreign language (EFL), English as an additional language (EAL), English as a New Language (ENL), or English for speakers of other languages (ESOL). The aspect in which ESL is taught is referred to as teaching English as a foreign language (TEFL), teaching English as a second language (TESL) or teaching English to speakers of other languages (TESOL). Technically, TEFL refers to English language teaching in a country where English is not the official language, TESL refers to teaching English to non-native English speakers in a native English-speaking country and TESOL covers both. In practice, however, each of these terms tends to be used more generically across the full field. TEFL is more widely used in the UK and TESL or TESOL in the US.

The term "ESL" has been seen by some to indicate that English would be of subordinate importance; or example, where English is used as a lingua franca in a multilingual country. The term can be a misnomer for some students who have learned several languages before learning English. The terms "English language learners" (ELL), and, more recently, "English learners" (EL), have been used instead, and the students' native languages and cultures are considered important.

By- Saurav BA lll

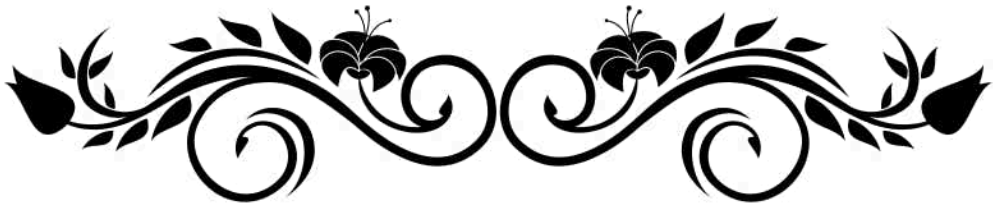

Science Section

EDITORIAL

"Science is the systematic classification of experiences"

Dear Readers

The purpose of the institution is to develop skills and intelligence of the students at the same time they are also prepared for life by developing their emotional intelligence and making them resilient, caring, adaptive, reflective and open minded to adjust to new situations.

Science is a systematic enterprise that builds and organizes knowledge in the form of testable explanations and predictions about the universe. I feel immense pleasure in presenting the Science Section of College Magazine to our viewers. It is a place that ignites thought, encourages curiosity, and cultivates conversations. The college magazine provides an opportunity for all the enthusiastic and keen learners to showcase their creative ideas and explore their hidden talents. We have been fortunate enough to be backed by very motivated and dedicated students who are always there to explore themselves in all possible ways. I congratulate all the students for their involvement and willingness they have expressed to take on completion of tasks beyond their comfort zones. I am sure that this creative pursuit has encouraged the students to express their inherent scientific temperaments. I wish all the students to be confident, independent and progressive citizens.

Dr Punam Chauhan
Staff Editor
Science Section

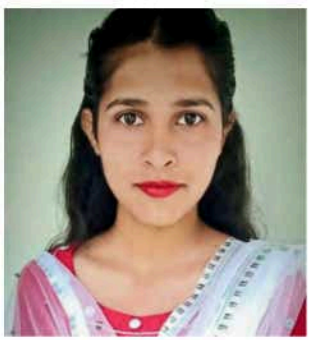

FROM EDITOR'S CORNER

Dear Readers

With great pleasure, I welcome you all to the special edition of LBS Govt. PG. college Saraswati Nagar magazine 'Hatkeshwari'. A college magazine is itself an institution which prepares its contributors to actively participate in whatever is going around them, which affects their lives. They learn to express themselves confidently as their expression is given rightful exposure. This section includes interesting articles, amazing facts and achievements of eminent scientists. We hope you enjoy reading this magazine as much as we have enjoyed making it.

Happy reading.....

Kiran Lata
Student Editor
BSc Final Year

Content

Sr. No.	Topic	Writer
1.	EVERY TIME WE MOVE OUR MUSCLES, WE ARE GIVING OURSELVES AN INTRAVENOUS DOSE OF HOPE	Tejasvini Singh
2.	MENSTRUATION	Aastha Friwanta
3.	ZERO BUDGET NATURAL FARMING(ZBNF)	Ritik Sharma
4.	REASONS WHY PLASTIC SHOULD BE BANNED	Riya
5.	FATHER OF ATOMIC BOMB	Ankit Dholta
6.	GLOBAL WARMING	Shalu Soni
7.	MENTAL HEALTH	Shalu Soni
8.	WHITE DWARFS & PLANETARY NEBULAS	Kiran Lata
9.	HOW DO WE KNOW HOW OLD THE SUN IS?	Vatsal Sharma
10.	LITHIUM RESERVES FOUND IN JAMMU AND KASHMIR	Hemant Masta
11.	MAKING PIG LIVERS HUMAN LIKE IN QUEST TO EASE ORGAN SHORTAGE	Priyanshi Shaktate
12.	PAPER THIN SOLAR CELLS	Priyanshi Shaktate
13.	ETHANE IN THE SKY	Snehal Rawat
14.	INTERESTING FACTS ABOUT THE PLANETS	Rahul Sistta
15.	QUANTUM PHYSICS	Himanshu Sharma
16.	WHAT IS PYORRHEA AND HOW IT IS TREATED?	Muskan Broata
17.	THE FUTURE IS AI	Mridul Steta
18.	Mars	Mohit Kumar
19.	PARTICLE PHYSICS	Abhay Dharta
20.	IF THE EARTH IS SPINNING, WHY CAN'T I FEEL IT?	Parikshit Nazta
21.	A NEW BIOMATERIAL HEALS HEART ATTACK DAMAGE IN ANIMALS HUMANS COULD BE NEXT….	Aanchal Zinta

"EVERY TIME WE MOVE OUR MUSCLES, WE ARE GIVING OURSELVES AN INTRAVENOUS DOSE OF HOPE"

Lots of us are experiencing an unsettling absence of hope right now, on some level. It's more important than ever to become guardians of our mental health.

I bring good news…

Scientists have found that whenever we move a muscle (anywhere in our body), we produce 'hope molecules'. During movement, proteins called myokines are released into our bloodstream. These pass through the blood-brain barrier to change the structure of the brain and have an antidepressant effect, which makes us more resilient to stress and trauma.

The good news is that all muscles can produce myokines. Whether you lift weights or run a marathon, regardless of your age, gender and level of fitness, it's never too late to start moving.

According to Kelly McGonigal, PhD, "Our muscles are like an endocrine organ. When you contract your muscles in any type of movement, they are secreting chemicals into your bloodstream that are really good for every system of your body; they're great for your heart health, your immune function, and some of them can kill cancer cells. All the stuff we know exercise is good for. But a big part of these proteins and chemicals that are being released by your muscles, which are called myokines, has profound effects on the brain. You go for a walk, or a run, or you lift weights, your muscles contract, and they secrete these proteins into your bloodstream. They travel to your brain, they cross the blood-brain barrier, and in your brain they can act as an antidepressant, like niacin can. They can make your brain more resilient to stress, they increase motivation, they help you learn from experience, and the only way you get these chemicals is by using your muscles. It's part of how we become our best selves. We have to use our muscles. The scientists call them hope molecules."

Tejasvini Singh

B.Sc. III

MENSTRUATION

Menstruation occurs when the lining of the uterus sheds, turning into blood. This blood then flows out of the body through the vagina. It is also known as a period. Periods happen due to the menstrual cycle. This is the rise and fall of hormones, such as estrogen and progesterone, that influence female fertility over the course of around 21–35 days. Fertility peaks roughly halfway through the cycle with ovulation, which is when the ovaries release an egg. This causes the uterine lining to thicken in preparation for a potential pregnancy. If no sperm fertilizes the egg, the uterus sheds this lining, and the cycle begins again. The length of someone's cycle, duration of their periods, and the day they ovulate vary from person to person. Sometimes, it also varies from cycle to cycle.

When do periods start?

A person's first period indicates that the menstrual cycle has begun. Doctors refer to this as menarche. For most females, it occurs between the ages of 9–15, with the average age being 12.4 years. A period is one of the signs of puberty, which is the beginning of a journey toward sexual maturity. This likely means that it is possible to get pregnant. However, a person can become pregnant from the first time they ovulate, which means it is possible to get pregnant before the first period.

Signs and symptoms

In addition to bleeding, people who are about to menstruate can experience a collection of symptoms known as premenstrual syndrome (PMS). These can act as signs that a period is about to begin.

PMS can vary, and not everyone experiences it. If they do, they may have any of the following:

- cramping and pain
- diarrhea
- bloating
- breast swelling, soreness, or tenderness
- headache
- fatigue
- mood changes
- food cravings
- lower back pain

It is important to note that extreme pain during a period is not normal, and may signal an underlying health condition. Similarly, severe mood changes or depression that only occurs before a period is also not typical for PMS. A person should consult a doctor if either occurs.

Period products

There are a variety of ways to manage menstruation with various products people can use to catch or absorb the blood. They include:

Disposable menstrual products:

Sanitary pads or napkins: These are thin, absorbent pads or napkins that someone places inside their underwear, changing regularly. They come in different shapes, sizes, and thicknesses to suit someone's needs.

Tampons: These are cylindrical wads of absorbent material that a person inserts into the vagina. These also come in different sizes and absorbencies.

Reusable menstrual products:

Cloth pads: These are similar to sanitary pads but consist of fabric such as cotton or flannel. A person fastens them inside their underwear and changes them in the same way as sanitary pads, but rather than disposing of them, a person can wash and reuse them month to month.

Reusable underwear: These garments are similar to regular underwear, but have an inbuilt absorbent layer of material. People can wash them in the same way as their usual underwear and reuse them. They are also known as "period panties".

Menstrual cups: Menstrual cups are small, silicone cups that a person inserts into the vagina. Instead of absorbing blood, the cup catches the blood. A person then pours the blood away and reinserts. When a period finishes, they can sterilize the cup and reuse it for the next period.

Blanket: These are large pieces of cloth that people place between the legs during sleep. People can wash and reuse them each cycle.

Aastha Friwanta
B.Sc. III

IZERO BUDGET NATURAL FARMING(ZBNF), SCOPE, IMPORTANCE, SCHEMES AND TECHNIQUES AND FUTURE CONCERN WITH ZBNF

Zero Budget Natural Farming (ZNBF) is the practice of growing crops without the use of any external inputs, such as pesticides and fertilisers. The phrase "Zero Budget" refers to all crops with zero production costs. The farmers' revenue is increased as a result of ZBNF's guidance towards sustainable farming methods that help to maintain soil fertility, assure chemical-free agriculture, and ensure a cheap cost of production (zero cost). Simply said, ZBNF is a farming technique that emphasises cultivating crops in harmony with the environment. Under the specific programme known as Paramparagat Krishi Vikas Yojana (PKVY), the government has been encouraging organic farming. This programme supports all different types of chemical-free agricultural methods, including Zero Budget Natural Farming.

Principles of ZNBF are follows as:

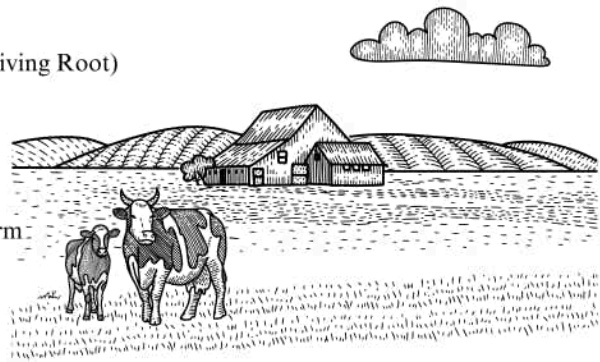

- Zero external inputs
- Crops to cover the soil for 365 days (Living Root)
- Soil disturbance at a minimum
- Bio-stimulants as essential catalysts
- Utilize native seed for mixed farming
- Mixed cropping
- The incorporation of trees onto the farm
- Conservation of moisture and water
- Bring animals into farming
- More organic debris in the soil
- Using plant extracts to control pests
- No artificial pesticides, herbicides, or fertilisers

Below are some of the major benefits of Zero Budget Natural Farming:

- For all crops, ZBNF methods use between 50 and 60 per cent less water and electricity compared to non-ZBNF methods.
- Through multiple aerations, ZBNF greatly lowers methane emissions.
- By using mulching, it is also possible to prevent the burning of residue.
- In ZBNF, cultivation costs are lower.
- The primary reason for debt and suicide amongst farmers is the rising expense of external inputs (seeds, fertilisers, pesticides, and herbicides). Over half of all farmers are in indebtedness, and nearly 70% of households in the agricultural sector spend more than they make, according to data from the National Sample Survey Office (NSSO).
- The cost of production could be decreased and agriculture could be turned into a "zero budget" endeavour since under ZBNF there is no requirement of spending money or taking out loans for external inputs.
- ·This will enable many small farmers to escape the debt cycle and pave the way for the income of farmers to double.
- As ZBNF is a completely chemical-free technique, it is environmentally friendly and produces organic yields which fetch the farmers higher profits than from normal agricultural yields.
- It suits all crops in all agro-climatic zones.

What are the uses of Zero Budget Natural Farming?

Apart from the least cost incurred in this type of farming, Zero Budget Natural Farming also promotes:

- Soil aeration Minimal watering Intercropping Bunds and Topsoil mulching

Intensive irrigation and deep ploughing are not promoted in Zero Budget Farming.

Is Vermicomposting used in Zero Budget Natural Farming?

No, Vermicomposting which is a method of using earthworms as a means to enhance organic waste conversion; is not supported in Zero Budget Natural Farming.

Palekar mentioned that European Red Wiggler (The most common composting Earthworm) that is used in vermicomposting absorb toxic metal and poisons the soil.

Which is India's state to roll out a plan to become the first state to practice 100 percent natural farming by 2024? - Andhra Pradesh

Zero Budget Natural Farming and Farmers' Income

- The major characteristic of Zero Budget Natural Farming is that the cost of production is zero and farmers do not have to buy any inputs to initiate this method of farming.
- Against the conventional methods, the Zero Budget Natural Farming used only 10 percent of the water that is used in the former method.
- As it promotes the use of the Indian local breed of the cow for 30 acres of land, it makes it possible for farmers to earn profits earlier than expected.
- Palekar suggested that with Zero Budget Farming One can make an income of ₹6 lakh an acre in irrigated areas and ₹1.5 lakh in non-irrigated areas.
- As the Zero Budget Natural Farming covers all kings of agro-climatic areas, it is mentioned to be suitable for all kinds of crops
- Farmers can get more yields in the first year only giving them a benefit
- The Zero Budget Farming is also seen to ease out the debt pressure on the farmers as they don't have to take loans to buy any inputs for their farming
- Farmers are expected to earn more money per acre and the chances of migration from villages to cities can also lessen.Zero Budget Natural Farming – Criticism
- The concept of Zero Budget Natural Farming is not well-accepted by the scientific community. National Academy of Agricultural Sciences scientists mentioned that India cannot rely on Zero Budget Natural Farming as there is no scientific validation of the techniques used in Zero Budget Farming.
- As against the name suggests, the farming method does bear a minimum input cost
- The maintenance of the local cow breed is difficult as against those that are used currently
- Organic certification of the crops planted by the Zero Budget Natural Farming will face another hurdle and it might lead to a difficulty in selling the products to the organic brands.
- Zero Budget Farming – Conclusion
- It is a farming method that Prime Minister Narendra Modi mentioned in the United Nations Conference on Desertification (COP-14) while stating that India is focusing on this method. The farming method offers resilient food systems. Through two of their initiatives:
- Paramparagat Krishi Vikas Yojana (PKVY)
- Rashtriya Krishi Vikas Yojana (RKVY)

By - Ritik Sharma Class: B.Sc. III

REASONS WHY PLASTIC SHOULD BE BANNED

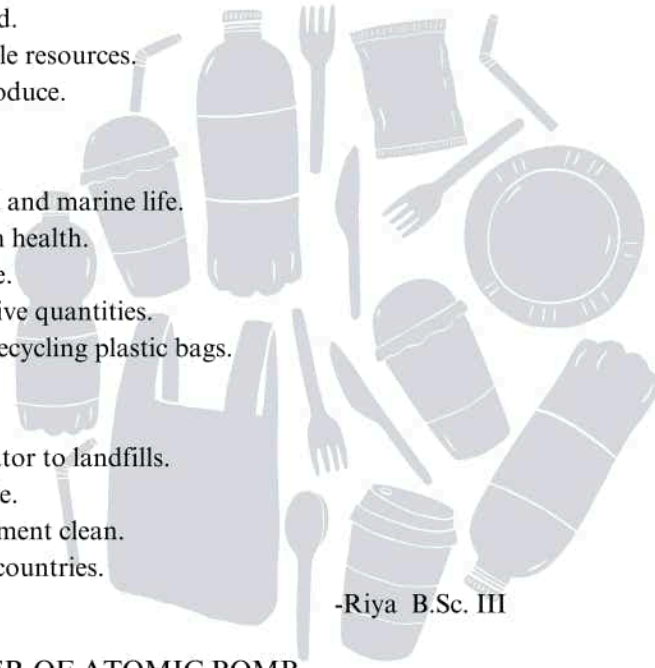

1. Plastic bags pollute water and land.
2. They are made from non renewable resources.
3. They require a lot of energy to produce.
4. Plastic bags are toxic.
5. They don't degrade.
6. Plastic bags are dangerous to wild and marine life.
7. Plastic bags are harmful to human health.
8. Plastic bags are not easy to recycle.
9. Plastic bags are produced in massive quantities.
10. Consumers are reluctant about recycling plastic bags.
11. Plastic bags are disposable.
12. Plastic bags clog storm drains.
13. Plastic bags are a major contributor to landfills.
14. Bans can reduce plastic bag waste.
15. A ban can help keep the environment clean.
16. It is a proven approach in some countries.
17. A ban will raise awareness.

-Riya B.Sc. III

FATHER OF ATOMIC BOMB

Julius Robert Oppenheimer was an American scientist. He studied physics and played an important role in the development of the first atomic bomb. He was the son of a wealthy German immigrant who imported textiles. Oppenheimer attended Harvard University, where he excelled in Latin, Greek, physics, and chemistry. He also published poetry. Oppenheimer graduated in 1925. He then traveled to England and worked as a research assistant at the University of Cambridge for a short time. He continued on to the University of Göttingen in Germany. There he studied with important physicists and received a doctorate in 1927. Oppenheimer later returned to the United States. He taught physics at the University of California at Berkeley and the California Institute of Technology. In the 1920s the new quantum and relativity theories were engaging the attention of science. That mass was equivalent to energy and that matter could be both wavelike and corpuscular carried implications seen only dimly at that time. Oppenheimer's early research was devoted in particular to energy processes of subatomic particles, including electrons, positrons, and cosmic rays. He also did groundbreaking work on neutron stars and black holes. Since quantum theory had been proposed only a few years before, the university post provided him an excellent opportunity to devote his entire career to the exploration and development of its full significance. In addition, he trained a whole generation of U.S. physicists, who were greatly affected by his qualities of leadership and intellectual independence. In the early 1930s, the Nazi Party came to power in Germany. Many scientists, including Albert Einstein, were forced to flee the Nazis. A few years later, during World War II, these scientists warned the U.S. government that Germany was attempting to make a nuclear, or atomic, bomb. In 1942 the U.S. Army organized the Manhattan Project—a research

program to develop an atomic bomb. Oppenheimer was made the director of a laboratory that was part of the Manhattan Project. The lab, in Los Alamos, New Mexico, produced the first atomic bomb in 1945.The theoretical work of how the atomic bomb would function had to be converted into a practical weapon that could be dropped from an airplane and explode above its target ,has been done by Oppenheimer. On July 16, 1945, in a remote desert location near Alamogordo, New Mexico, the first atomic bomb was successfully detonated.The first atomic bomb detonated over a populated area occurred on August 6, 1945 at 8:15 AM over the Japanese city of Hiroshima. The bomb name was Little Boy. The second bomb, named Fat Man, was dropped on Nagasaki from the Bockscar, also a B-29 bomber, at 11:02 AM on August 9, 1945.More than 200000 people died in the attack. According to many scholars, Oppenheimer had internalised the core message of the Gita, a thumbed copy of which he famously kept handy by his work desk. He was known to gift its English translation to his friends and others. Oppenheimer learned Sanskrit in 1933 and first read the Gita in the original language. As he witnessed the first detonation of a nuclear weapon on July 16, 1945, a piece of Hindu scripture ran through the mind of Robert Oppenheimer: "Now I am become Death, the destroyer of worlds". It is, perhaps, the most well-known line from the Bhagavad-Gita, but also the most misunderstood. In 1963 Oppenheimer was awarded the Enrico Fermi Award. This is one of the highest awards in science and technology given by the U.S. government. Oppenheimer died of throat cancer on February 18, 1967, in Princeton. He is known as the father of atomic bomb.

Ankit Dholta

B.Sc. III

GLOBAL WARMING

Global warming or climate change has today become a major threat to the mankind. The Earth's temperature is on the rise and there are various reasons for it such as greenhouse gases emanating from carbon dioxide (CO_2) emissions, burning of fossil fuels or deforestation. Impact of Greenhouse Gases The rise in the levels of carbon dioxide (CO_2) leads to substantial increase in temperature. It is because CO_2 remains concentrated in the atmosphere for even hundreds of years. Due to activities like fossil fuel combustion for electricity generation, transportation, and heating, human beings have contributed to increase in the CO_2concentration in the atmosphere. Global Warming: A Gradual Phenomenon Recent years have been unusually warm, causing worldwide concern. But the fact is that the increase in carbon dioxide actually began in 1800, due to the deforestation of a large chunk of North-eastern American, besides forested parts of the world. The things became worse with emissions in the wake of the industrial revolution, leading to increase in carbon dioxide level by 1900. Cause of Concern According to the Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC), global temperature is likely to rise by about 1-3.5Celsius by the year 2100. It has also suggested that the climate might warm by as much as 10 degrees Fahrenheit over the next 100 years. Impact of Global Warming The sea levels are constantly rising as fresh water marshlands, low-lying cities, and islands have been inundated with sea water. There have been changes in rainfall patterns, leading to droughts and fires in some areas, and flooding in other areas. Ice caps are constantly melting posing a threat to polar bears as their feeding season stands reduced. Glaciers are gradually melting. Animal populations are gradually vanishing as there has been a widespread loss of their habitat. Conclusion As per Kyoto protocol, developed countries are required to cut back their emissions. There is a need to reduce coal- fired electricity, increase energy efficiency through wind and solar power, and also high efficiency natural gas generation.

Shalu Soni

B.Sc. III

MENTAL HEALTH

What is mental health? Mental health is all about how people think, feel, and behave. Mental health specialists can help people with depression, anxiety, bipolar disorder, addiction, and other conditions that affect their thoughts, feelings, and behaviors. Mental health can affect daily living, relationships, and physical health. However, this link also works in the other direction. Factors in people's lives, interpersonal connections, and physical factors can contribute to mental ill health. Looking after mental health can preserve a person's ability to enjoy life. Doing this involves balancing life activities, responsibilities, and efforts to achieve psychological resilience. Stress, depression, and anxiety can all affect mental health and disrupt a person's routine. Although health professionals often use the term mental health, doctors recognize that many psychological disorders have physical roots.

Shalu Soni, B.Sc. III

WHITE DWARFS & PLANETARY NEBULAS

White dwarfs are among the dimmest stars in the universe. Even so, they have commanded the attention of astronomers ever since the first white dwarf was observed by optical telescopes in the middle of the 19th century. One reason for this interest is that white dwarfs represent an intriguing state of matter; another reason is that most stars, including our Sun, will become white dwarfs when they reach their final, burnt-out collapsed state.

Red Giant Sun

A star experiences an energy crisis and its core collapses when the star's basic, non-renewable energy source - hydrogen - is used up. A shell of hydrogen on the edge of the collapsed core will be compressed and heated. The nuclear fusion of the hydrogen in the shell will produce a new surge of power that will cause the outer layers of the star to expand until it has a diameter a hundred times its present value. This is called the "red giant" phase of a star's existence.

Cats Eye Nebula

A composite image of the Cat's Eye from Chandra (purple) and HST (red & green) shows where the hot, X-ray emitting gas appears in relation to the cooler material seen in optical wavelengths. A hundred million years after the red giant phase all of the star's available energy resources will be used up. The exhausted red giant will puff off its outer layer leaving behind a hot core. This hot core is called a Wolf-Rayet type star after the astronomers who first identified these objects. This star has a surface temperature of about 50,000 degrees Celsius and is furiously boiling off its outer layers in a "fast" wind traveling 6 million kilometers per hour. The radiation from the hot star heats the slowly moving red giant atmosphere and creates a complex and graceful filamentary shell called a planetary nebula. X-ray images reveal clouds of multimillion degree gas that have been compressed and heated by the fast stellar wind. Eventually the central star will collapse to form a white dwarf star.

Kiran Lata

B.Sc. III

DARK MATTER

A term used to describe matter that can be inferred to exist from its gravitational effects, but does not emit or absorb detectable amounts of light.

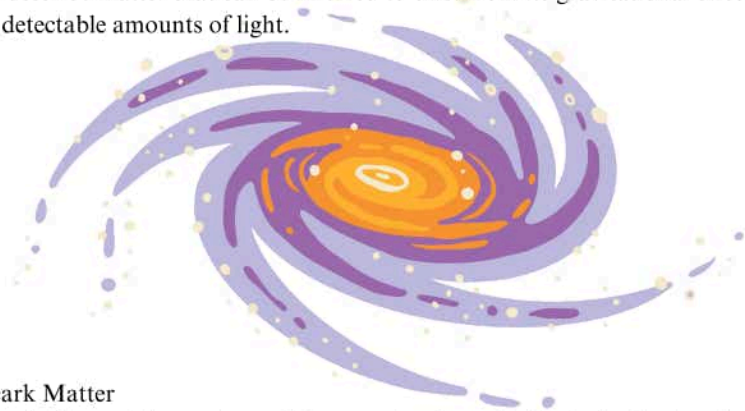

Evidence for Dark Matter

Evidence for Dark Matter Observations of the rotational speed of spiral galaxies, the confinement of hot gas in galaxies and clusters of galaxies, the random motions of galaxies in clusters, the gravitational lensing of background objects, and the observed fluctuations in the cosmic microwave background radiation require the presence of additional gravity, which can be explained by the existence of dark matter.

Amount of Dark Matter

The evidence suggests that the mass of dark matter in galaxies, clusters of galaxies, and the universe as a whole is about five or six times greater than the mass of ordinary light-emitting matter that makes up stars, planets, gas and dust.

Alternatives to Dark Matter

One possibility, considered unlikely by most astrophysicists, is that a modification of the theory of gravity can explain the effect attributed to dark matter.

What is Dark Matter?

What is Dark Matter The nature of dark matter is unknown. A substantial body of evidence indicates that it cannot be baryonic matter, i.e., protons and neutrons. The favored model is that dark matter is mostly composed of exotic particles formed when the universe was a fraction of a second old. Such particles, which would require an extension of the so-called Standard Model of elementary particle physics, could be WIMPs (weakly interacting massive particles), or axions, or sterile neutrinos.

Detection of Dark Matter Particles (Dwarf Galaxy)

Various types of experimental searches for dark matter candidates are being pursued by a number of investigators: the direct detection of dark matter particles using innovative new detectors; the detection of X-rays or gamma-rays from the decay or annihilation of dark matter particles; and the detection of dark matter particles created by colliding beams of high energy protons.

Kiran Lata
B.Sc. III

HOW DO WE KNOW HOW OLD THE SUN IS?

Scientists estimate that our Sun is about 4.57 billion years old. They're surprisingly confident about that number, too, which opens up an immediate question: how do we know that? The short answer is "a lot of science and math", but I have a feeling you're not here for the short answer.

The first approach is to search for the oldest thing in the solar system. The technique scientists use is called nucleocosmochronology, and when you're done unpacking the Greek prefixes you'll find that this strategy involves using nuclear radioactivity to determine the age of things in space.

To make this work, scientists look for elements that can come from the radioactive decay of other, more unstable elements. One example is iron-60, a version of iron with a total of 60 protons and neutrons in its core. Making iron-60 is incredibly hard and is usually only produced in the shock waves found after supernova explosions. After just a few million years iron-60 decays into nickel-60, which is stable and hangs around forever.

Scientists have found nickel-60 scattered all throughout the solar system, especially inside meteorites, which are the leftover bits and pieces from when the solar system first formed. By measuring the amount of nickel-60, astronomers can run the clock backward and figure out when the solar system was first flooded with iron-60.

Vatsal Sharma
B.Sc. III

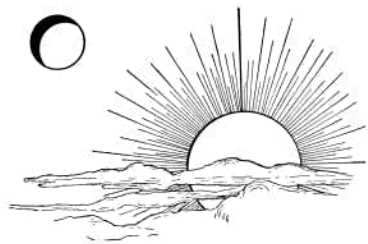

APJ ABDUL KALAM

Avul Pakir Jainulabdeen Abdul Kalam, born on October 15, 1931 is an Indian scientist who worked as an Aerospace engineer with Defence Research and Development Organisation (DRDO) and Indian Space Research Organisation (ISRO). Kalam started his career by designing a small helicopter for the Indian Army. Kalam was also part of the INCOSPAR committee working under Vikram Sarabhai, the renowned space scientist. In 1969, Kalam was transferred to the Indian Space Research Organization (ISRO) where he was the project director of India's first indigenous Satellite Launch Vehicle (SLV-III) which successfully deployed the Rohini satellite in near earth's orbit in July 1980. He also served as the 11th President of India from 2002 to 2007. Kalam advocated plans to develop India into a developed nation by 2020 in his book India 2020. He has received several prestigious awards, including the Bharat Ratna, India's highest civilian honour. Known for his love for children, did you know that Kalam had set a goal of meeting 100,000 students in the 2 years after his resignation from the role of scientific adviser in 1999?

May he continue to inspire millions.

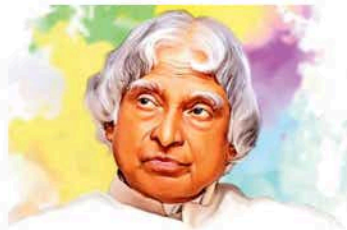

Hemant Masta
B.Sc. III

LITHIUM RESERVES FOUND IN JAMMU AND KASHMIR

The government on Thursday, February 9, 2023, said lithium reserves have been found for the first time in the country in Jammu and Kashmir.Lithium is a non- ferrous metal and is one of the key components in EV batteries. For the first time, lithium reserves have been discovered and that too in Jammu and Kashmir, Mines Secretary Vivek Bharadwaj said.Upon exploration by the Geological Survey of India (GSI), lithium reserves have been found in Reasi district of Jammu and Kashmir.

Earlier, the Mines Ministry had said that to strengthen the critical mineral supply chain for emerging technologies, the government was taking several proactive measures to secure minerals, including lithium, from Australia and Argentina. Currently, India is import-dependent for many minerals like lithium, nickel and cobalt. Speaking at the 62nd Central Geological Programming board meeting here, Mr. Bharadwaj also said that whether it is a mobile phone or a solar panel, critical minerals are required everywhere. In order to become self-reliant, it is very important for the country to find out critical minerals and also process it, he said. He also said that if gold imports are reduced, then we will become aatmanirbhar (self-reliant).

Hemant Masta, B.Sc. III

MAKING PIG LIVERS HUMAN LIKE IN QUEST TO EASE ORGAN SHORTAGE

Scientists are working on transforming pig's livers to look and act like human ones in a bid to ease the organ transplant shortage. The pig's liver is gradually transformed to look and act like human ones in quest to ease the nation transplant shortage by bioengineering replacement organs. The first step for the workers in the lab is to shampoo away the pig cells that made the organ do it's work it's colour is gradually faded as the cells dissolve and flush out. What's left is a rubbery scaffolding, a honeycomb structure of the liver, its blood vessels now empty. Next human liver cells — taken from donated organs unable to be transplanted — will be oozed back inside that shell. Those living cells move into the scaffolding's nooks and crannies to restart the organ's functions. Researchers would place a pig-turned-humanlike liver next to a hospital bed to temporarily filter the blood of someone whose own liver suddenly failed. And if that novel "liver assist" works, it would be a critical step toward eventually attempting a bioengineered organ transplant — probably a kidney. This is probably more of the near future than xenotransplantation," or directly implanting animal organs into people. More than 105,000 people are on the U.S. waiting list for an organ transplant. Thousands will die before it's their turn. Thousands more never even get put on the list, considered too much of a long shot. That's why scientists are looking to animals as another source of organs. A Maryland man lived two months after receiving the world's first heart transplant from a pig last January — an animal genetically modified so its organs didn't trigger an immediate attack from the human immune system. Bioengineering organs is markedly different — no special pigs required, just leftover organs from slaughterhouses. As long as enough cells still are functioning when donation groups offer up an organ, Miromatrix biologists isolate usable cells and multiply them in lab dishes. From one rescued human organ the company says it can grow enough cells to repopulate several pig liver or kidney scaffolds, cells responsible for different jobs. "If you can just get over the hump, then you might actually recover" — because the liver is the only organ that can repair itself and regrow, said Mount Sinai's Florman. It's not clear how soon that testing can begin.

Priyanshi Shaktate, B.Sc. III

PAPER THIN SOLAR CELLS (Can Turn Any Surface To Power Source)

Researchers at MIT have developed an ultra-thin and ultra-light solar cell that can be used to turn almost any surface into a solar power source. The flexible solar cells are much thinner than human hair and are glued to a lightweight fabric to make it easier to install them on any fixed surface. The present version of new lightweight photovoltaic (PV) cells is not as efficient in power conversion as silicon PVs but they weigh much less. In the short run, they can be used to provide power where silicon PVs cannot be easily installed and to deliver solar electricity in places that are hard to reach like in remote villages. Solar PV systems generate electricity by absorbing sunlight and using that light energy to create an electrical current. Conventional photovoltaic solar cells are fragile, which is why they are encased in heavy glass and metal framing. This puts great limits on where such solar cells can be installed and

deployed. The MIT researchers tested the durability of the new devices they developed, and found that the cells retained more than 90 per cent of their initial power generation capabilities even after the fabric was rolled and unrolled more than 500 times. However, they would still need to be encased in another material to protect them from the elements. Once the packaging technology is developed, the researchers envision many uses for the material. For example, it can be installed on the sails of a boat to provide power at sea. It can also be used on tents and tarps used during disaster recovery operations, or even on drones to extend their range.

Priyanshi Shaktate
B.Sc. III

ETHANE IN THE SKY

On March nights, we were treated to the glorious spectacle of Hyakutake spreading across the sky. Astronomers from all over the Earth turned to look at the comet. They were well rewarded. The Hubble Space Telescope got the first-ever look from the earth at the icy nucleus that inside a comet. (It is just around 2 kilometers in size.) For the first time, a comet was seen giving off X-rays faint, but because Hyakutake passed only 15 lakh kilometers from the earth. They were caught by an X-ray telescope. Other astronomers have been busy looking the spectrum of the comet. This usually gives a lot of information about the compounds that are in the comet (Jantar Mantar, Sep-Oct '95). Michael Mumma and Michael Di Santi found methane in the comet, forming almost 1% of the comet's ice. Until now, methane has only been found in the planets (such as Saturn) and their moons (like Titan). Happy at their success, Mumma and DiSanti then looked even more carefully at the spectral then even more carefully at the spectral lines of the comet. They found the lines of ethane, a compound which has not been found in space before. Ethane is another 1% of the comet's ice. They are looking at the lines again. Who knows, they might even find something like naphthalene!

Snehal Rawat, B.Sc. I

INTERESTING FACTS ABOUT THE PLANETS

1. Mercury is hot, but not too hot for ice

The closest planet to the Sun does indeed have ice on its surface. That sounds surprising at first glance, but the ice is found in permanently shadowed craters — those that never receive any sunlight. It is thought that perhaps comets delivered this ice to Mercury in the first place. In fact, NASA's MESSENGER spacecraft not only found ice at the north pole, but it also found organics, which are the building blocks for life. Mercury is way too hot and airless for life as we know it, but it shows how these elements are distributed across the Solar System.

2. Venus doesn't have any moons, and we aren't sure why

Both Mercury and Venus have no moons, which can be considered a surprise given there are dozens of other ones around the Solar System. Saturn has over 60, for example. And some moons are little more than captured asteroids, which may have been what happened with Mars' two moons, for example. So what makes these planets different? No one is really sure why Venus doesn't, but there is at least one stream of research that suggests it could have had one in the past.

3. Mars had a thicker atmosphere in the past

What a bunch of contrasts in the inner Solar System: practically atmosphere-less Mercury, a runaway hothouse greenhouse effect happening in Venus' thick atmosphere, temperate conditions on much of Earth and then a thin atmosphere on Mars. But look at the planet and you can see gullies carved in the past from probable water. Water requires more atmosphere, so Mars had more in the past. Where did it go? Some scientists believe it's because the Sun's energy pushed the lighter molecules out of Mars' atmosphere over millions of years, decreasing the thickness over time.

4. Jupiter is a great comet catcher

The most massive planet in the Solar System probably had a huge influence on its history. At 318 times the mass of Earth, you can imagine that any passing asteroid or comet going near Jupiter has a big chance of being caught or diverted. Maybe Jupiter was partly to blame for the great bombardment of small bodies that peppered our young Solar System early in its history, causing scars you can still see on the Moon today. And in 1994, astronomers worldwide were treated to a rare sight: a comet, Shoemaker-Levy 9, breaking up under Jupiter's gravity and slamming into the atmosphere.

5. No one knows how old Saturn's rings are

There's a field of ice and rock debris circling Saturn that from afar, appear as rings. Early telescope observations of the planet in the 1600s caused some confusion: does that planet have ears, or moons, or what? With better resolution, however, it soon became clear that there was a chain of small bodies encircling the gas giant. It's possible that a single moon tore apart under Saturn's strong gravity and produced the rings. Or, maybe they've been around (pun intended) for the last few billion years, unable to coalesce into a larger body but resistant enough to gravity not to break up.

6. Uranus is more stormy than we thought

When Voyager 2 flew by the planet in the 1980s, scientists saw a mostly featureless blue ball and some assumed there wasn't much activity going on Uranus. We've had a better look at the data since then that does show some interesting movement in the southern hemisphere. Additionally, the planet drew closer to the Sun in 2007, and in more recent years telescope probing has shown some storms going on. What is causing all this activity is difficult to say unless we were to send another probe that way. And unfortunately, there are no missions yet that are slated for sure to zoom out to that part of the Solar System.

7. Neptune has supersonic winds

While on Earth we are concerned about hurricanes, the strength of these storms is nowhere near what you would find on Neptune. At its highest altitudes, according to NASA, winds blow at more than 1,100 miles per hour (1,770 kilometers per hour). To put that in context, that's faster than the speed of sound on Earth, at sea level. Why Neptune is so blustery is a mystery, especially considering the Sun's heat is so little at its distance.

8. You can see Earth's magnetic field at work during light shows

We have a magnetic field surrounding our planet that protects us from the blasts of radiation and particles the Sun sends our way. Good thing, too, because such flare-ups could prove deadly to unprotected people; that's why NASA keeps an eye on solar activity for astronauts on the International Space Station, for example. At any rate, when you see auroras shining in the sky, that's what happens when the particles from the Sun flow along the magnetic field lines and interact with Earth's upper atmosphere.

Rahul Sistta

BSC III

QUANTUM PHYSICS

What is quantum physics? Put simply, it's the physics that explains how everything works: the best description we have of the nature of the particles that make up matter and the forces with which they interact.

Quantum physics underlies how atoms work, and so why chemistry and biology work as they do. You, me and the gatepost – at some level at least, we're all dancing to the quantum tune. If you want to explain how electrons move through a computer chip, how photons of light get turned to electrical current in a solar panel or amplify themselves in a laser, or even just how the sun keeps burning, you'll need to use quantum physics.

The difficulty – and, for physicists, the fun – starts here. To begin with, there's no single quantum theory. There's quantum mechanics, the basic mathematical framework that underpins it all, which was first developed in the 1920s by Niels Bohr, Werner Heisenberg, Erwin Schrödinger and others. It characterises simple things such as how the position or momentum of a single particle or group of few particles changes over time.

But to understand how things work in the real world, quantum mechanics must be combined with other elements of physics – principally, Albert Einstein's special theory of relativity, which explains what happens when things move very fast – to create what are known as quantum field theories.

Three different quantum field theories deal with three of the four fundamental forces by which matter interacts: electromagnetism, which explains how atoms hold together; the strong nuclear force, which explains the stability of the nucleus at the heart of the atom; and the weak nuclear force, which explains why some atoms undergo radioactive decay.

Over the past five decades or so these three theories have been brought together in a ramshackle coalition known as the "standard model" of particle physics. For all the impression that this model is slightly held together with sticky tape, it is the most accurately tested picture of matter's basic working that's ever been devised. Its crowning glory came in 2012 with the discovery of the Higgs boson, the particle that gives all other fundamental particles their mass, whose existence was predicted on the basis of quantum field theories as far back as 1964.

Conventional quantum field theories work well in describing the results of experiments at high-energy particle smashers such as CERN's Large Hadron Collider, where the Higgs was discovered, which probe matter at its smallest scales. But if you want to understand how things work in many less esoteric situations – how electrons move or don't move through a solid material and so make a material a metal, an insulator or a semiconductor, for example – things get even more complex.

The billions upon billions of interactions in these crowded environments require the development of "effective field theories" that gloss over some of the gory details. The difficulty in constructing such theories is why many important questions in solid-state physics remain unresolved – for instance why at low temperatures some materials are superconductors that allow current without electrical resistance, and why we can't get this trick to work at room temperature. But beneath all these practical problems lies a huge quantum mystery. At a basic level, quantum physics predicts very strange things about how matter works that are completely at odds with how things seem to work in the real world. Quantum particles can behave like particles, located in a single place; or they can act like waves, distributed all over space or in several places at once. How they appear seems to depend on how we choose to measure them, and before we measure they seem to have no definite properties at all – leading us to a fundamental conundrum about the nature of basic reality.

This fuzziness leads to apparent paradoxes such as Schrödinger's cat, in which thanks to an uncertain quantum process a cat is left dead and alive at the same time. But that's not all. Quantum particles also seem to be able to affect each other instantaneously even when they are far away from each other. This truly bamboozling phenomenon is known as entanglement, or, in a phrase coined by Einstein (a great critic of quantum theory), "spooky action at a distance". Such quantum powers are completely foreign to us, yet are the basis of emerging technologies such as ultra-secure quantum cryptography and ultra- powerful quantum computing.

But as to what it all means, no one knows. Some people think we must just accept that quantum physics explains the material world in terms we find impossible to square with our experience in the larger, "classical" world. Others think there must be some better, more intuitive theory out there that we've yet to discover.

In all this, there are several elephants in the room. For a start, there's a fourth fundamental force of nature that so far quantum theory has been unable to explain. Gravity remains the territory of Einstein's general theory of relativity, a firmly non-quantum theory that doesn't even involve particles. Intensive efforts over decades to bring gravity under the quantum umbrella and so explain all of fundamental physics within one "theory of everything" have come to nothing. Meanwhile cosmological measurements indicate that over 95 per cent of the universe consists of dark matter and dark energy, stuffs for which we currently have no explanation within the standard model, and conundrums such as the extent of the role of quantum physics in the messy workings of life remain unexplained. The world is at some level quantum – but whether quantum physics is the last word about the world remains an open question.

Himanshu Sharma

B. Sc 3rd Year

WHAT IS PYORRHEA AND HOW IT IS TREATED?

The term pyorrhea comes from the Greek words Discharge of Pus. Pyorrhea, also known as periodontitis, is a multifactorial disease that directly affects oral gums and the bone. Yes, Pyorrhea affects the periodontium, that is, the organ that holds up the teeth and is made up of gingiva, bone, and ligament. Pyorrhea is bacterial in nature and is the result of advanced or untreated gingivitis.

Types of Pyorrhea

These are some of the most common types of Pyorrhea:

·Chronic Pyorrhea: This is the most common type of pyorrhea. It is caused by gradual plaque buildup, which then causes gum recession and bone deterioration. This can get worse or improve based on how soon it has been treated. This type of Pyorrhea is known to mostly affect adults, but in no way does it mean that children are immune to it. Children too can be prone to Chronic Pyorrhea if dental hygiene is neglected.

· Aggressive Pyorrhea: It is a hereditary type of Pyorrhea. And since it is hereditary, you would need your family to get checked for Pyorrhea too if you have been suffering from it. The reason it is called Aggressive Pyorrhea is, if it is left untreated, this destructive pyorrhea type will cause rapid progression of bone loss, eventually causing tooth loss or a fracture.

·Necrotizing Pyorrhea: This is the worst type of pyorrhea that involves the death of supporting bone, gum tissue and tooth ligaments caused by lack of blood supply, which eventually results in severe infection. Necrotizing Pyorrhea mostly affects people who have a weak immune system, which may be due to HIV infection or cancer treatment. Malnutrition and poor food habits can also be a cause.

What are the signs and symptoms of Pyorrhea?

As Pyorrhea progresses from gingivitis, it starts showing major signs and symptoms. A few of the major symptoms are as listed below:

·Swollen or puffy gums ·Bad breath

·Loose teeth or Gums that bleed easily ·Painful chewing

·Pus between the teeth and gums ·Tender and sensitive gums

·Bleeding when flossing or brushing

·Deep pockets form between the gums and the teeth

·Gums that recede, making your teeth look longer than normal
·Bleeding when eating fruits like Apple, Guava, etc.
·What are the causes of Pyorrhea?
·Lack of dental hygiene is the foremost reason. Besides this, inheriting it from your parents or family members is also possible as this is a hereditary disease.
Here are some common causes of pyorrhea:
·Poor dental habits: Irregular brushing and flossing allow bacteria to grow rapidly. Flossing should be a very important part of your dental hygiene as it helps in scraping the plaque and the remnants of rotting food in between the spaces of your teeth which are responsible for bacteria growth. When you're complacent with your dental habits to the point where the coating of plaque on your teeth becomes tartar, it leads to dental destruction causing Pyorrhea.
·Periodontal Destruction: Pyorrhea is caused by the destruction of the periodontium tissue that keeps the teeth anchored to the gums and jawbone. Improper dental hygiene is what kills this tissue. But although periodontal disease is initiated by bacteria, an intermediate mechanism that lies between bacterial stimulation and tissue destruction is the production of cytokines. The presence of cytokines in increased levels causes the destruction of periodontium tissue.
·Gingivitis or Periodontal Disease: Plaque, when left untreated causes gingivitis, which is the mildest form of periodontal disease. This condition is defined as inflammation and irritation of the gum around the base of the teeth. Gingivitis is reversible with good oral care and professional dental treatment. When you fail to treat gingivitis, it worsens and develops into pyorrhea or periodontitis.
·Diabetes and Pyorrhea: If you are a diabetic patient, your chances of developing Pyorrhea also increase. Diabetic patients are more likely to develop dental issues.
·Smoking: Smoking tobacco is also one of the causes of developing pyorrhea or periodontitis.
·Pyorrhea is reversible but that does not mean you can take your chances. While you have dental treatment options to save your teeth, remember if the disease reaches a point of no return you might not be able to save some or all of your teeth. Therefore, we keep emphasizing maintaining your oral hygiene and visiting your dentist regularly.
Here are ways you can prevent Pyorrhea:
·Brushing, flossing and using mouthwash
·Regular Dental Visit - Make sure to visit your dentist at least every 6 months, this aids in diagnosing the early signs and symptoms and treating them in their early stages to avoid further complications
·Scaling - To remove hard tartar, trapped food, and plaque which is the primary cause of bacteria growth
·Root Planing - This makes the rough teeth surfaces smooth and removes any subgingival bacteria. During the procedure, the dentist will also deep clean around and below the gums to remove plaque and tartar buildup.
·If left untreated, Pyorrhea can cause bone and tissue damage, where you can also lose teeth. Besides the loss of the tooth, the infection could cause other health complications.
·Thanks to modern dental technological advancements, Pyorrhea can be treated using laser treatment and hence becomes much easier to cure in a less invasive manner, unlike traditional
·surgical methods which are quite painful and invasive.
Muskan Broata, B.Sc 3rd Year

"THE FUTURE IS AI"

AI is the short form of Artificial Intelligence. It is the intelligence possessed by the machines under which they can perform various functions with human help. With the help of AI, machines will be able to learn, solve problems, plan things, think, etc. Artificial Intelligence, for example, is the simulation of human intelligence by machines. It is probably the fastest-growing development in the World of technology and innovation. Artificial Intelligence has applications in various fields. These fields can be military, law, video games, government, finance, automotive, art, etc. Hence, it's clear that AI has a massive amount of different applications. AI can greatly increase the rate of work in manufacturing. Manufacture of a huge number of products can take place with AI. Furthermore, the entire production process can take place without human intervention. Hence, a lot of time and effort is saved. So in a nutshell AI has a lot of advantages like error free processing, 24/7 availability, faster decision making, digital assistance, implementing AI in risky situations etc. Along with these pros it has cons as well i.e. High costs of creation, increased unemployment, lacking creativity, lacking improvement, no human replication. AI holds the key to unlocking a magnificent future where, driven by data and computers that understand our world, we will all make more informed decisions. These computers of the future will understand not just how to turn on the switches but why the switches need to be turned on.

Mridul Steta, B.Sc 3rd Year

MARS

Four and a half billion years ago, a rock was formed on Mars by some volcanic process. Half a billion years later, this rock was broken into smaller pieces by a meteorite impact nearby. Some ground water also entered the rock. 16 million years ago, an asteroid hit Mars somewhere near where this rock was. The impact threw pieces of the rock into space. One 2 kilogram piece of rock orbited the Sun until 13,000 years ago, when it came close to the Earth. This piece crashed onto an Antarctic glacier. Over 13,000 years, it reached the Allan Hills region of Antarctica, buried inside the ice. In 1984, this meteorite was discovered and named ALH84001. A large number of people worked out this history of the meteorite that we just narrated. This year, a team led by David McKay of the American space organization NASA, suggested that there seemed that there seemed to be signs that life may have existed on this rock in some bygone era: The meteorite has some organic molecules, of the same family as naphthalene (which is used in mothballs). When bacteria decay, such compounds are produced. Many meteorites do have such compounds. The meteorite has iron oxide (magnetite) of the sort which some bacteria on Earth secrete. It has iron sulphide, which is produced by some anaerobic bacteria (those that don't use oxygen). The meteorite has some balls of carbonate material, which may be formed by some material, which may be formed by some living thing. On the other hand, almost all earth bacteria are 100 times larger than this material. The meteorite may contain very small fossils (less than hundred millionth of a millimeter). Nanobacteria are this size. In 1961, another meteorite was found to have signs of life. But soon these were discovered to be grains of pollen and particles of furnace ash. The signs of life turned out to be from Earth itself. This could be the case for the Antarctic meteorite too. What makes scientist more hopeful is that some of these items mentioned are within cracks, and the cracks could only have been formed before the meteorite came to rest in Antarctica. So maybe, just maybe, the signs of bacterial life that we see are from when the rock was on Mars. In 1976, the Viking spacecraft failed to find any such bacteria on Mars. But maybe they landed in the lifeless part of Mars.

Mohit Kumar B.Sc 1st year

PARTICLE PHYSICS

Particle physics or high energy physics is the study of fundamental particles and forces that constitute matter and radiation. The fundamental particles in the universe are classified in he Standard Model as fermions (matter particles) and bosons (force-carrying particles). There are three generations of fermions, but ordinary matter is made only from the first fermion generation. The first generation consists of up and down quarks which form protons and neutrons, and electrons and electron neutrinos. The three fundamental interactions known to be mediated by bosons are electromagnetism, the weak interaction, and the strong interaction. Quarks cannot exist on their own but form hadrons. Hadrons that contain an odd number of quarks are called baryons and those that contain an even number are called mesons. Two baryons, the proton and the neutron, make up most of the mass of ordinary matter. Mesons are unstable and the longest-lived last for only a few hundredths of a microsecond. They occur after collisions between particles made of quarks, such as fast-moving protons and neutrons in cosmic rays. Mesons are also produced in cyclotrons or other particle accelerators. Particles have corresponding antiparticles with the same mass but with opposite electric charges. For example, the antiparticle of the electron is the positron (also known as an antielectron). The electron has a negative electric charge, the positron has a positive charge. These antiparticles can theoretically form a corresponding form of matter called antimatter. Some particles, such as the photon, are their own antiparticle. These elementary particles are excitations of the quantum fields that also govern their interactions. The dominant theory explaining these fundamental particles and fields, along with their dynamics, is called the Standard Model. The reconciliation of gravity to the current particle physics theory is not solved; many theories have addressed this problem, such as loop quantum gravity, string theory and supersymmetry theory. Practical particle physics is the study of these particles in radioactive processes and in particle accelerators such as the Large Hadron Collider. Theoretical particle physics is the study of these particles in the context of cosmology and quantum theory. The two are closely interrelated: the Higgs boson was postulated by theoretical particle physicists and its presence confirmed by practical experiments.

Abhay Dharta, B.Sc 3rd Year

If the Earth is Spinning Why Can't I Feel it

Congratulations: you're currently spinning at about 1,000 miles an hour without even trying! That's how fast the Earth has to turn to make a complete rotation every day. So why can't you feel it? Your stomach goes all topsy-turvy when you spin around on a merry-go-round, and that's a lot slower than 1,000 miles per hour.

You can't feel yourself spinning on Earth for the same reason that you can't feel yourself moving while you're on a train. That's because Earth and the train are both what physicists call "frames of reference." Frames of reference are kind of like perspectives. A person standing on a train has one perspective—one frame of reference—and a person standing on a station platform has another. If you were standing on the station platform, you would clearly see the surface was standing still while the train whizzed by. But from the inside, you'd feel like you were standing still while the world moved by. From either frame of reference, you feel like you're the one staying still. Onboard the train, the world moves. Standing on the platform, the train moves.

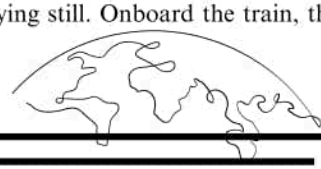

The same is true of Earth and space, but at bigger scales. From inside the Earth's frame of reference, we can't tell that we're spinning. But if we viewed Earth from the frame of reference of space, we would be able to see the twirling instantly.

And just like passengers seated on a train, we don't have any clues—like wind rushing through our hair—to make us realize how fast we're going. The air inside the train (and the atmosphere that surrounds our planet) moves along at the same speed we do.

There is one important difference between a train and Earth. When a train slows down or speeds up, we can feel the resulting force on our bodies. That's because of a basic law of physics: force = mass * acceleration. Your body is the mass, and when acceleration is zero—when the train is moving at a constant speed—there's no force on your body. You can't feel it. But when the train changes speed by either accelerating or decelerating, there's a force (and if you're standing up, it might just manage to knock you over).

Since most trains don't zip around without ever changing speed, we can actually tell we're in motion quite often. The Earth doesn't ever slow down or speed up. But if it did, oh boy would we feel it! And it would be the same sensation that you get on a slowing train.

Fortunately, our planet isn't going to suddenly slow down or speed up like that, which means we won't ever get that feeling that tells us we're moving.

But that doesn't mean we can't observe the Earth spinning from right here on the ground. The Sun and Moon rise in the east and set in the west because of the direction we're rotating in. If you set up a video camera pointed at the night sky, you'll be able to see the stars moving, too. From our frame of reference, it looks like those objects are sliding past us. Remember: that's just how we see it. From the Sun's point of view, we're all spinning in circles.

Parikshit Nazta, B.Sc 1st Year

A NEW BIOMATERIAL HEALS HEART ATTACK DAMAGE IN ANIMALS HUMANS COULD BE NEXT….

A new biomaterial delivered to the heart soon after a heart attack can heal damaged tissue from the inside out. Heart attacks kill cardiac muscle tissue, scarring the heart and leaving permanent damage after just six hours. The damage prevents the heart from functioning properly. If there was a way to begin healing damaged tissue soon after a heart attack, doctors could prevent scar tissue from developing. "In an ideal world, you treat a patient immediately when they're having a heart attack to try to salvage some of the tissue and promote regeneration," says Karen Christman, a bioengineer at the University of California, San Diego . Based on the nanoparticles' size, the team expected the mixture would slip through any gaps in cardiac blood vessels caused by the heart attack and adhere to the surrounding tissue. Once there, it would create a protective barrier while the heart healed.

Aanchal Zinta
B.Sc 1st Year

Commerce Section

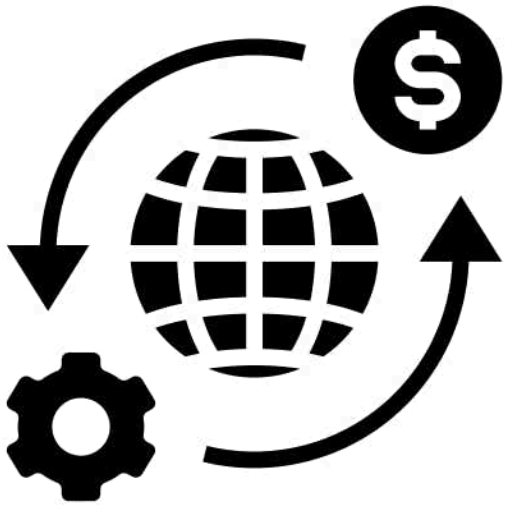

Editorial

The Commerce section of LBS Govt Degree College Saraswati Nagar is well known for its academic excellence and dedicated approach towards dissemination of knowledge in the academic area. In this section, we appreciate the role of innovative temperament in education and articles written are testimonials of such commitment to developing an inclination towards innovative aptitude in students.

In this regard, the commerce section of the magazine has taken the initiative to encourage students to put forth their ideas in a novel manner. It is expected that readers will appreciate and be inspired by hard work of our budding writers.

Prof. Sandeep Thakur
Editor, Commerce Section

Student Editor's Message

Dear Readers,

With great pleasure, I welcome you all to the new edition of LBS Govt. PG College Saraswati Nagar's magazine 'Hatkeshwari'. Publication of the magazine would not have been possible without the guidance of our teachers and Principle sir. With the help of this magazine many students have shared their amazing thoughts and ideas. I would also like to thank my teachers for giving me this opportunity to represent the Commerce section. It's a matter of joy and pride for me.

Happy Reading!

Aarti Thakur

Content

Sr. No.	Topic	Writer
1.	Warranty Buffet	Aarti
2.	What is E-Commerce	Shivani
3.	India's First Garbage Cafe	Vidushi
4.	Mutual Fund	Namya Sharma
5.	Challenges in Commerce Education	Sejal
6.	Crypto Currency	Priti Mehta
7.	Social Media : The Future of Marketing	Ranika
8.	Barter System	Poonam
9.	Amul	Palak Dilta

Warran Buffett

Warran Buffett is the biggest investor of the world .He is the chairman and CEO of Berkshire Hathaway. Warran Buffett was born on 30 August 1930 in Omaha Nebraska.He started his business career at an early age , selling chewing gum, coca - cola and newspaper door to door. By selling this item he purchases his first share in 1942 when he only 11 year old. Buffett started his education at the Wharton school at the university of Pennsylvania before moving back to go to the university of Nebraska, where he received an undergraduate degree in business administration. Buffett later went to the Columbia business school where he learned the value of investing principles of his mentor Benjamin Graham.In 1956 Buffett founded his first investment partnership , Buffett partnership Ltd. and achieved great success through his value investing approach. In 1965 he acquired a tactile manufacturing company called Berkshire Hathaway, which he transformed into a diversified holding company over the year. Buffett is known for his long term approach to investing and his ability to identify undervalued companies with strong fundamentals. He is also famous for his straightforward investment philosophy which he has shared through his annual letters to shareholders and in numerous interviews and public appearances. Buffett has pledged to donate the majority of his wealth to charity through the giving pledge a campaign he launched with Bill Gates in 2010 to encourage billionaires to give away their wealth to charity. Buffett has received numerous awards and honours throughout his career , including the Presidential Medal of Freedom, the highest civilian honour in the United States. Buffett is one of the richest person in the world he was ranked by Forbes as the 6th wealthiest person in the world with 102 Billion.

Name - Aarti

Class - B.com Final year

E-commerce

What is e-commerce ?

E-commerce (or electronic commerce) is the buying and selling of goods or services on the internet. It surrounded a wide variety of data, systems and tools for online buyers and sellers, including mobile shopping and online payment.

To fully understand, let us take a look at its history, growth, and impact on the business.

* History of e-commerce in India.

In 1979 Michael Aldrich invented electronic shopping (he is also considered as the founder or inventor of eCommerce). This was done by connecting a transaction processing computer with the modified TV through a telephone connection.It is originated in this standard for exchange of business document such as orders or invoices between suppliers and the business customers. The introduction of internet in India in 1995 mark the beginning of the first wave of commerce in the country.

*Types of e commerce.

There are 7 main models of eCommerce that business can categorised into.

1. B2C - business to consumer
2. B2B - business to business
3. C2C - consumer to consumer
4. D2C - direct to consumer
5. C2B - consumer to business
6. B2A - business to administration
7. C2A - consumer to administration.

*Let's dive into 3 example of what you can sell on online.

1. Sell Physical goods.
2. It helps small business and directly to customers.
3. Sell Digital goods.

*Example of e commerce.

Amazon, Flipkart, eBay, fiverr, up ways, olx.

*Advantages .

1. Faster buying for customer.
2. Store and product creation.
3. Cost reduction.
4. Faster response to buy and marke demands.

*Disadvantages.

1. Customers have concern about privacy and security.
2. The edit cost of operating online store.
3. Limited interaction with customers.

*Future of e-commerce.

Expert believe that : The Indian eCommerce market is expected to $170 billion by 2025 India's online shopping base is to reach nearly 500 to 600 million by 2030 and become the second largest globally (IBEF).

Name -Shivani
Class - B.Com (1st year).

India's First Garbage Cafe at Chhattisgarh (Ambikapur)

The country's first garbage cafe has been launched here in Chhattisgarh. Under this the municipal corporation will provide food to the poor and homeless in lieu of plastic waste. Ambikapur which has been selected as the second cleanest city after Indore, plans to use the plastic for construction of roads. The cafe will located in the city main bus stand. The budget provided Rs.5lakh for the garbage cafe scheme. There is a plan to provide free shelter to the homeless who collects plastic waste. The first such road in the state that has been made in the city by mixing 8lakh plastic bags. The road constructed by mixing plastic and asphalt is durable because the water does permeates through it and also recycling the waste plastic. Recycling of plastic is one part of the solution needed to create a circular economy for plastic. By turning waste into raw material, material are kept in use and the need for plastic is reduced.

Job *generator* :-. Recycling project tends to be a job generator putting more people in the local community to work. When employment rates go up businesses within the community benefits from the stronger economy as well. Most of these industries are micro, small and medium scale. These industries contribute Rs. 3.5 lakh crore to the country's economy. They also generated employment opportunities for more than 50000 people. About Rs. 35 thousand crore worth of plastic is exported from India.

Some of the economic benefits of upcycling and reusing waste includes , reducing the amount of waste in landfills, conserving natural resources, increasing financial security and saving energy.

Vidushi

B.com 3rd year

MUTUAL FUND

Mutual fund was started in 18th century in Netherland (Europe) formed by a Dutch merchant and a broker. The fund was called as "unit creates strength". In India mutual funds were introduced in 1963 with the launch of unit trust of India (UTI). The main objective of reserve Bank of India and Indian government is to attract retail investor. Mutual funds are considered as the major platform for investment. Mutual fund is a financial investment that collects money from different investors. The collected money is then invested in securities like stock, debt, equity, money market etc. Mutual funds are operated by professional fund manager. Mutual funds are paperless transaction and is trustworthy investment. There is a systematic investment plan (SIP) in mutual fund. In which every month a fixed amount is deducted from the investors bank account and invested in mutual fund. In SIP the risk of investor become nominal. In an actively manage mutual fund a fund manager actively manage the portfolio and decides which stock to buy sell or hold. In an active fund the manager aim is to generate maximum return. In an passively manage mutual fund the fund manager remains silent or passive they do not use their judgement or do not decide as to which stock to buy sell or hold.

Mutual funds spreads investment across multiple securities which categorise lower risk. Mutual funds are managed by professional fund manager who have expertise, experience and manage investment. There are many option to invest in mutual fund to meet your different needs. Mutual funds are low cost investment vehicle which contains less risk and give a better return on investment. The mutual fund industry is regulated by security exchange board of India (SEBI) they follow trick rules and regulations , investors protection.

How to get return on mutual fund ?

The mutual fund return are calculated by computing appreciation in the value of investment. Net asset value NAV indicate its price and used in calculating return from your mutual fund investment.

TOP MUTUAL FUND

#1 - UTI Nifty index fund #2 - UTI Nifty next 50 index fund #3 - Mirae asset large cap fund #4 - Canara Robeco Bluechip equity fund #5 - Quant mid cap fund

NAMYA SHARMA B.COM 1st year

A STUDENTS ON PROSPECTUS AND CHALLENGES IN COMMERCE EDUCATION

Introduction :: History

The Growth of industry and science in the recent past has demanded a specialized education in the field of commerce and industry. Education of commerce was started by private commercial institutions. To start with only book - keeping was taught. We find munims used to train junior munims under their apprenticeship. Later on private commercial institutes started teaching of book-keeping and accoutancy. If we see the history commerce in higher education is nearly 102 years old. For such an education, madras became a pioneer state where it started in 1886.The government of madras laid the foundation of commerce education by setting up commercial institutes in madras. Two other institutes were established during the next ten years (by,1896). Government of india also started commerce college at calicut and presidency college at calcutta. In India commerce education at university level made it's first beginning in 1913when sydenhan college of commerce and economic was established by bombay, since then there has been steady increase in commerce courses and it's related branches all over India, there is hardly any university or college which don't have commerce Department..

In the beginning of this century calcutta presidency college also introduced the teaching of commerce (1903). By about that time it was also introduced in Delhi,. One more commercial institutes was started in bombay in 1912.

A very rapid growth of commercial education institutions was observed during 1920-40.The Indian institutes of bankers was established in 1926,the institutes of chartered accountants of india was established in 1934.Later on in1944, institutes of works and cost accoutants of india was established. In 1955,the federation of insurance institutes was established..

Commerce Education:Understanding &Defintion

Commerce education is the area of education which develop the required knowledge, skills and attitude for the success handling of trade, commerce and industry. According to the needs of the business and society independent profession have emerged in the form of chartered accountants. Cost and work accountants, company secretary and business administration (MBA)

Commerce education, as a branch of knowledge impart experience of business world at s large in all its expression. Commerce education is directly concerned with the day to day life of the students. Even then it is necessary to define commerce education.

According to Cheesman Abian Herrick, "Commerce education is that form of instructions which both directly or indirectly prepare the business man for his calling. ""

The commerce education is primarily meant for providing the students in depth - knowledge of different functional area of business so as to prepare people required by the community for the purpose of trade, commerce and industry.

Name - Sejal

Class - B.Com, 3rd year

Crypto currency

Cryptocurrency is a digital or virtual currency that uses cryptography for security and operates independently of a central bank. Cryptocurrencies use decentralized technology, called blockchain, to enable peer-to-peer transactions and maintain a secure ledger of transactions.

The most popular cryptocurrency is Bitcoin, which was created in 2009 by an anonymous person or group of people using the pseudonym Satoshi Nakamoto. Since then, thousands of cryptocurrencies have been created, including Ethereum, Litecoin, and Ripple.

Here are some key details about cryptocurrencies:

Decentralized: Cryptocurrencies are decentralized, which means they are not controlled by any government or financial institution.

Blockchain: The technology behind cryptocurrencies is called blockchain, which is a decentralized ledger that records all transactions in a secure and transparent way.

Limited supply: Most cryptocurrencies have a limited supply, which means that there is a fixed amount of the currency that will ever exist. For example, Bitcoin has a maximum supply of 21 million coins.

Volatile: Cryptocurrencies are known for their volatility, meaning their value can change rapidly and dramatically. This makes them a high-risk investment.

Mining: Cryptocurrencies are created through a process called mining, where powerful computers solve complex mathematical equations to validate transactions and create new blocks on the blockchain.

Wallets: Cryptocurrencies are stored in digital wallets, which are software applications that allow users to send, receive, and store their cryptocurrency securely.

Security: Cryptocurrencies are secured through cryptography, which is the use of mathematical algorithms to protect data. This makes them more secure than traditional forms of payment, but they are still vulnerable to hacking and theft.

Overall, cryptocurrencies have gained popularity due to their decentralized nature, transparency, and potential for high returns. However, they are also high-risk investments that require careful consideration before investing.

Priti Mehta B.com First Year

Social Media -The Future Of Marketing

As time goes on it is clear that social media is involving rapidly by utilising virtual reality video chat and other technologies, Facebook was able to dominate nearly all other social media may undergo significant changes in the years to come.Accourding to a hubspot estimate social media is used by around one third of the world's population, millions of individual are using social media in form including Twitter, Facebook messenger, Instagram and Snapchat. the use of chatbots has increased in the approaching years due to this, more people are using mobile devices and sharing more interesting materials.

The goal of this article is to consider the future of social media in the context of consumer behaviour and marketing,since social media has become a vitual marketing and communication channel for business organisation and institution like including those in the political sphere social media helps to improve your brand engage the audience promote customer services study of competition and helps in the development of Marketing system and made the work easier.Now social media is the biggest source of fun generating income and for communication.Year by year development in social media will increase and can also help to the development of are country.

Ranika, B.Com 1st year

BARTER SYSTEM

Before the hard currency came into existence, the most common form of trade was bartering. Barter Systemdates back to the old time when there was no money. The only way to buy goods was to exchange them with personal belongings of similar value. For example- A farmer gives his cattle in exchange for some land, and so on.

In simple words, any exchange of goods and services for other goods and services without exchanging any form of money is known as the Barter system. Mesopotamia tribes are said to be the ones to introduce this system of exchange, where they exchanged goods for food, weapons, and other essential needs such as tea. Therefore, it is known as one of the oldest forms of commerce.

What is Barter System?

When the goods and services of equal value are exchanged between two or more parties without using any form of monetary exchange, this transaction is called the Barter System.

Although it is one of the oldest types of commerce, it is still used among individuals as well as companies to procure goods and services when there is not enough cash or money to buy things.

One of the most important factors of the barter system is having the equal value of the goods and services that are to be exchanged.

Benefits of Barter System

The benefits of Barter System can be listed as follows:

Budgeting: Barter System facilitates good financial budgeting as the less important goods can be exchanged for the prioritized services and goods, while on the other hand, the cash can be kept safe for the expenses that cannot be met through bartering. Therefore, it helps to budget all the expenses economically.

Better professional relationships: Bartering not only helps in to trade eve without cash but also helps in creating a good psychological understanding and relations among the traders as compared to the monetary transactions. Therefore, it helps to expand the business networks and relations.

Economic equilibrium: As in the Barter System, the exchange of goods and services having a similar value takes place, which leads to the proper allocation of resources in the economy. The exchange of goods equalizes the demand and supply and helps the economy to reach a state of equilibrium.

Other benefits: Other benefits of the Barter System includes fewer complexities due to small trade circles, exchange leads to the reuse of products that leads to no more overexploitation of resources.

Types of Barter:

Barter among individuals: When the two individuals or parties have the goods or can render services the other wants, without any exchange of money, both the parties decide upon and determine the value of the goods leading to the exchange of the decided amount.

Barter among companies: When the companies cannot afford to use cash or any form of money to buy goods or services, they exchange their goods and services with the others having an equivalent value. The most trending form of bartering among the companies today is B2B Bartering. For example: Exchanging products for advertisement.

Barter among countries: In order to manage debts, countries often exchange goods for the ones they need the most. For example, exchanging oil for food. This helps the countries to manage the trade deficits and thereby minimizing the debts as much as possible.

Modern Bartering: Barter System might have its roots in a time when there was no money, but it is still very much in trend. Small businesses took upon the online barter trades to combat the financial crises. This helped the businesses by putting their unused stock to use and attracting more customers to their products, thus enjoying good future returns.

How can I barter?
To barter you firstly need to know your resources that you can exchange for something you need estimate its value, search for the bartering partner who is willing to exchange goods with you, and now you can make a barter deal.

Disclaimer: This content is authored by an external agency. The views expressed here are that of the respective authors/ entities and do not represent the views of Economic Times (ET). ET does not guarantee, vouch for or endorse any of its contents nor is responsible for them in any manner whatsoever. Please take all steps necessary to ascertain that any information and content provided is correct, updated and verified. ET hereby disclaims any and all warranties, express or implied, relating to the report and any content therein.
Poonam
B.Com 1st year

COMPUTER AND TECHNOLOGY SECTION

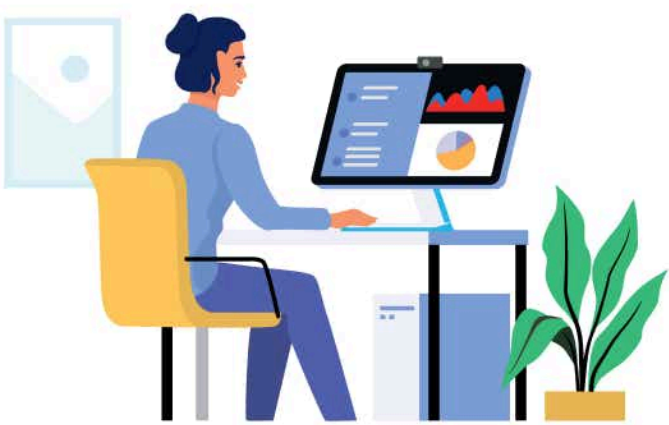

Editorial

Dear Readers,

It's a matter of immense pleasure and pride to present Computer Science Section of College Magazine. A magazine is itself an institution which prepares its contributors to actively participating in whatever is going on around them, which affects their lives. Students learn to express themselves confidently as their expression is given rightful exposure.

I can't resist myself praising my hardworking and enthusiastic students who are reservoir of strength which if properly channelized can prove to be a source of great power to the nation. I am sure that this creative pursuit has encouraged the students to express their scientific temperaments.

Thanks

Teacher Editor

Mr. Chandra Mohan

BCA Deptt.

Student Editor's Message

Dear Readers,

It's a matter of immense pleasure and pride to present Computer Science Section of College Magazine. I am thankful to my teachers for providing me the opportunity to represent the Computer Science Section on behalf of all my friends.

We have tried our best to give our readers some useful information, which is related and helpful to their real life. Students have made their full efforts to write their articles. We all are hope full that everyone is going to enjoy reading this section.

Thanks

Udit Sharma

BCA 3rd Year

Content

Sr. No.	Topic	Writer
1.	INTERNET OF THINGS (IOT)	Tanuja
2.	Computer Network	Nitika
3.	Toward More Flexible and Rapid Prototyping of Electronic Devices	Kashish
4.	Quantum computing	Anshika Bragta
5.	Next Generation of Mobile Processors	Aryan
6.	Cloud Computing	Rajkumari
7.	Global Positioning System	Divyanshi
8.	Computer Technology	Megha
9.	Generation of Mobile Services	Manisha
10.	Satellite	Tavishi Sood
11.	Web 3.0	Sanjay

INTERNET OF THINGS (IOT)

The Internet Of Things is a the network of physical object or things embedded with electronics, software, sensors and network connectivity,which enables these objects to collect and exchange data .

- Heart monitoring implants
- Biochip transponders on farm animals
- Automobiles with built-in sensors

•DNA analysis devices & other wearable etc. These device collect useful data with the help of various existing technologies and then autonomously flow the data between other devices.

It is also referred to as Machine-to Machine ,skynet or Internet Of Everythings .

Name: -Tanuja

Class:-BCA 2nd semester, Roii no:- 2204006

Computer Network

A computer network is any group of interconnected computing devices capable of sending or receiving data. A computing device isn't just a computer—it's any device that can run a program, such as a tablet, phone, or smart sensor

Building a network

There are many ways to connect a computer to network.

Personal Area Network (PAN) ...

Local Area Network (LAN) ...

Wireless Local Area Network (WLAN) ...

Campus Area Network (CAN) ...

Metropolitan Area Network (MAN) ...

Wide Area Network (WAN) ...

Storage-Area Network (SAN) ...

System-Area Network (also known as SAN)

Name- Nitika

Rollno-2204003

Class-BCA, 2nd sem

Toward More Flexible and Rapid Prototyping of Electronic Devices

FlexBoard is a flexible breadboard that enables rapid prototyping of objects with interactive sensors, actuators, and displays on curved and deformable surfaces.

Alex Shipps | MIT CSAIL

The breadboard's design consists of a thin plastic that connects two pieces of the same material to enhance flexibility. This "living hinge pattern" can be found in the caps of condiment bottles and the spines of plastic disc cases, holding together FlexBoard's electronic components. The design can be replicated by an off-the-shelf 3D printer, fabricating FlexBoards that can be sewn to an item or attached using epoxy glue or Velcro tape.

This convenient design opens the door to more rapidly customizable interfaces. "A fundamental development in our modern world is that we can interact with digital content everywhere and anytime, which is enabled through ubiquitous interactive devices," says research author Michael Wessely, a recent postdoc at the MIT Computer Science and Artificial Intelligence Laboratory (CSAIL).

"FlexBoard supports the design of these devices by being a versatile and rapid interaction prototyping platform. Our platform also enables designers to quickly test different configurations of sensors, displays, and other interactive components, which might lead to faster product development cycles and more user-friendly and accessible designs.

Kashish

BCA 2nd semester Roll no.-2204009

Quantum Computing

Quantum computing is a rapidly-emerging technology that harnesses the laws of quantum mechanics to solve problems too complex for classical computers.

Today, IBM Quantum makes real quantum hardware -- a tool scientists only began to imagine three decades ago -- available to hundreds of thousands of developers. Our engineers deliver ever-more-powerful superconducting quantum processors at regular intervals, alongside crucial advances in software and quantum-classical orchestration. This work drives toward the quantum computing speed and capacity necessary to change the world.

These machines are very different from the classical computers that have been around for more than half a century. Here's a primer on this transformative technology.Quantum computers are elegant machines, smaller and requiring less energy than supercomputers. An IBM Quantum processor is a wafer not much bigger than the one found in a laptop. And a quantum hardware system is about the size of a car, made up mostly of cooling systems to keep the superconducting processor at its ultra-cold operational temperature.

A classical processor uses bits to perform its operations. A quantum computer uses qubits (CUE-bits) to run multidimensional quantum algorithms

Name:-Anshika bragta Class:-BCA 2nd sem Roll No:-2204004

Next Generation of Mobile Processors

The mobile technology industry has reached yet another milestone with the recent unveiling of an extraordinary generation of mobile processors. Developed by a renowned technology company, these cutting-edge processors are poised to redefine the landscape of mobile devices, offering unmatched performance, efficiency, and capabilities. This article delves into the remarkable features and advancements brought forth by these processors, shedding light on how they will shape the future of mobile technology and revolutionize the way we interact with our smartphones and tablet.

Integration of Artificial Intelligence (AI):

An exciting aspect of these mobile processors is their seamless integration of artificial intelligence (AI) capabilities. Harnessing the power of AI, these processors enable intelligent features and enhance user experiences in various ways. AI algorithms drive facial recognition technology, voice assistants, and smart camera functionalities, revolutionizing the way users interact with their devices.

Facial recognition technology powered by AI offers convenient and secure authentication methods, enabling users to unlock their devices effortlessly and securely. Voice assistants, backed by AI, provide natural language processing and contextual understanding, enabling users to interact with their devices using voice commands for tasks such as making calls, sending messages, and accessing information.

Security and Privacy Enhancements :Recognizing the growing concerns over security and privacy, these mobile processors prioritize the protection of user data. Robust security measures, including built-in encryption, secure boot mechanisms, and hardware-level safeguards, ensure that sensitive information remains protected.

By embedding security features directly into the processors, these advancements address vulnerabilities that may exist at the hardware level, providing an added layer of protection against potential threats. Users can rest assured that their data is safeguarded, making these processors an ideal choice for individuals seeking a secure mobile experience.

Aryan, BCA 1ST YEAR (2ND SEM)

Cloud Computing

In 1963, DARPA (the Defence Advanced Research Projects Agency) presented MIT with $2 million for Project MAC. The funding included a requirement for MIT to develop technology allowing for a "computer to be used by two or more people, simultaneously." In this case, one of those gigantic, archaic computers using reels of magnetic tape for memory became the precursor to what has now become collectively known as cloud computing. What is Cloud Computing Cloud computing technology gives users access to storage, files, software, and servers through their internet-connected devices: computers, smart phones, tablets, and wearable's. Cloud computing providers store and process data in a location that's separate from end users. Benefits of Cloud Computing 1. With cloud computing, time investments for getting the system up and running are minimal. Cloud providers handle the maintenance of physical components, as well as security and software updates. 2. With cloud computing, every person in your company has access from devices they already use, anywhere they need it. Your team is up to speed at all times, which ensures faster collaboration. 3. Cloud computing providers offer redundant storage (generally in multiple data centres), bolstered security, and faster recovery.

Name:- Rajkumari

Class:- BCA 2nd Year, Roll.No.:- 2104011

Global Positioning System

The Global Positioning System (GPS) is a navigation system using satellites, a receiver and algorithms to synchronize location, velocity and time data for air, sea and land travel. The satellite system consists of a constellation of 24 satellites in six Earth-cantered orbital planes, each with four satellites, orbiting at 13,000 miles (20,000 km) above Earth and travelling at a speed of 8,700 mph (14,000 km/h). While we only need three satellites to produce a location on earth's surface, a fourth satellite is often used to validate the information from the other three. The fourth satellite also moves us into the third-dimension and allows us to calculate the altitude of a device. There are five main uses of GPS:

- Location
- Navigation
- Tracking .
- Mapping
- Timing

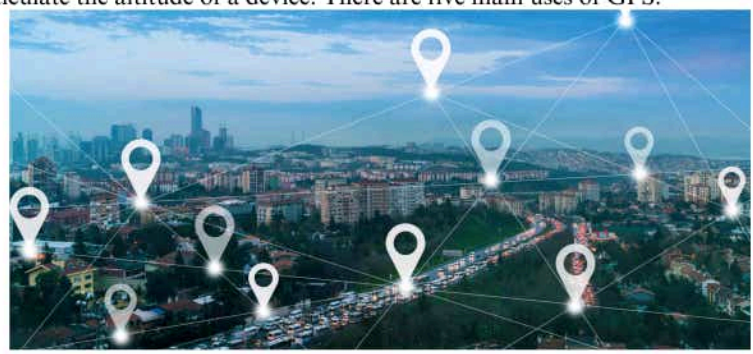

GPS provides the fastest and most accurate method for mariners to navigate, measure speed, and determine location. This enables increased levels of safety and efficiency for mariners worldwide. Here are some surprising things scientists have only recently realized they could do with GPS. 1. Feel an earthquake 2. Monitor a volcano 3. Probe the snow 4. Sense a sinking 5. Analyze the atmosphere

Divyanshi

Roll no. 2104005

BCA 4th semester

Computer Technology

Computing is any goal-oriented activity requiring, benefiting from, or creating computing machinery. It includes the study and experimentation of algorithmic processes, and development of both hardware and software. Computing has scientific, engineering, mathematical, technological and social aspects. Information and Computer Technology: -

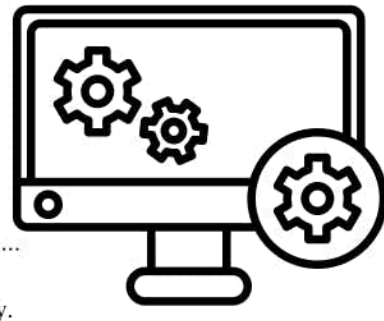

1. Telecommunications products (such as telephones)
2. Information kiosks and transaction machines.
3. World Wide Web sites.
4. Multimedia.
5. Office equipment such as copiers and fax machines.

Types of Technology:-

1. Artificial Intelligence. ...
2. Information Technology. ...
3. Space Technology. ...
4. Entertainment Technology. ...
5. Medical Technology. ...
6. Operational Technology. ...
7. Assistive Technology. ...
8. Communication Technology.

Name:- Megha

Class:- BCA 4th sem. Roll no.:-2104002

Generation of Mobile Services

1G. Technology: -It is the first generation of wireless mobile communication where along singles It was were used to transmit data. • It was introducing US in early 1980's and designed exclusively for voice communication.

❖ 2G. Technology: - it is second generation of mobile telephone which used digital singles of first time. • It was launched in Finland in 1991. Characteristics ✓ Speed is up to 2.4kb. ✓ Large phones with limited battery life. ✓ It is a poor voice quality. ✓ It is very big in size. ✓ Speed is up to 64bit. ❖ 3G. TECHNOLOGY: - Third generation mobile telephone began whit the start of new millennium & offer the major advantages

❖ 4G. TECHNOLOGY: - Keeping up the trend of a new mobile generation easy decade, it was introduced in 2011. ❖

5G. TECHNOLOGY: - The fifth generation was started from late 2010. • Complete wireless communication with almost no limitation • It is highly supported to www(world wide web) Characteristics ✓ Data speed of 144kilo bits to 2MBPS ✓ 3D gamming ✓ Hight speed web browsing ✓ Easy transfer of audio and video ✓ Speed of 100MBPS ✓ Cloud computing ✓ Mobile web access ✓ IP telephony The basic term used to describe 4G id "MAGIC". M---MOBILE MULTIMIDIA A---ANY TIME ANY WHERE G---GLOBAL MOBILITY SUPPOT ✓ High speed ,high capacity ✓ TV. Programs with HD quality's faster ✓ providing large broadcasting of data in gigabits ✓ Data transmission large phone memory clarity in audio or video etc .

MANISHA BCA-2nd year Roll no. ---2104004

Satellite

A satellite is a moon, planet or machine that orbits a planet or star. For example, Earth is a satellite because it orbits the sun. Likewise, the moon is a satellite because it orbits Earth. Usually, the word "satellite" refers to a machine that is launched into space and moves around Earth or another body in space Earth and the moon are examples of natural satellites. Thousands of artificial, or man-made, satellites orbit Earth. Some take pictures of the planet that help meteorologists predict weather and track hurricanes. Some take pictures of other planets, the sun, black holes, dark matter or faraway galaxies. These pictures help scientists better understand the solar system and universe. Why Are Satellites Important? The bird's-eye view that satellites have allows them to see large areas of Earth at one time. This ability means satellites can collect more data, more quickly, than instruments on the ground. Satellites also can see into space better than telescopes at Earth's surface. That's because satellites fly above the clouds, dust and molecules in the atmosphere that can block the view from ground level. Before satellites, TV signals didn't go very far. TV signals only travel in straight lines. So they would quickly trail off into space instead of following Earth's curve. Sometimes mountains or tall buildings would block them. Phone calls to faraway places were also a problem. Setting up telephone wires over long distances or underwater is difficult and costs a lot. With satellites, TV signals and phone calls are sent upward to a satellite. Then, almost instantly, the satellite can send them back down to different locations on Earth.

Name :- Tavishi Sood

Class :- BCA 4th Semester Roll No. :- 2104001

Web 3.0

Web 3.0 also known as the Semantic Web, is the next generation of the internet. It aims to make the internet more intelligent, intuitive, and connected than ever before. Unlike the current web, which is largely focused on linking documents and pages, Web 3.0 is designed to link data and concepts.

Web 3.0 is a vision of the future where machines are able to understand and interpret the vast amounts of data on the internet, making it easier for humans to find and use information. This new web will allow machines to communicate with each other, share information, and work together in new and exciting ways.

Web 3.0 promises to be a more intelligent, intuitive, and connected version of the internet, where machines work together seamlessly to help humans find and use information more efficiently. While it is still in the early stages of development, Web 3.0 is an exciting vision of the future of the internet that holds tremendous potential for innovation and progress.

Sanjay

BCA 2nd year Roll. No 2104012

पहाड़ी अनुभाग

संपादकीय

ए बौड़े आच्छे बात ऐ कि म्हारै लालबहादुर शास्त्री राजकीय महाविद्यालय सरस्वती नगरअ री 'हाटकेश्वरी' पत्रिकै रे नौवे किस्त छौपे लागे। एज़ी बेरे बी म्हारै कॉलेजअ रै छोटी-छोरूऐ खूब मेहनत करिअ आर्टिकल लिखै और छापणै खी दीणै। पहाड़ी बोली दै आर्टिकल थोड़ै कम ऐ। ऐबकै जमानै रै लोकड़ै आपड़ी बोली थोड़ी कम बोलौ। आपड़ी बोली दै आर्टिकल लिखनै दे और टाइप कौरनै दे बी बौड़े मुश्किल हअ। तौंई बी म्हारै होनहार छोटी-छोरूऐ बढ़िया कोशिश कीए और आर्टिकल तैयार कीऐ। एज़ी बेरकी पत्रिकै दो पहाड़ी अनुभाग जोड़नै री तैंई संपादक महोदय रो खूब धन्यवाद और छात्र-संपादक हृतिक कुमारअ खी खूब शाबाशे और आशीर्वाद। आशा ऐ कि म्हारै पाठक एज़ी बेरकी हाटकेश्वरी बी पसंद कौरौलै।

डॉ० रोहित मोकटा (शिक्षक संपादक)
सहायक आचार्य, संगीत विभाग

छात्र संपादक का संदेश

एज़ी बौरशौ रे नौवे 'हाटकेश्वरी' पत्रिका तामू सबी आगू पेश ऐ। इयंअ पत्रिकै दै कॉलेजअ रै नवै-नवै लेखक और लेखिकै रै लेख, कवितै, निबन्ध, कहाणी बगैरा छौपौ। आछकाली नवै जमानै रै छोटी-छोरू आपडी बोली थोड़ी कम ई जाणअ, पर तौंइ बी कुछ नौजवान दोस्तै पहाड़ी बोली दै आर्टिकल लिखणै रे खूब बड़िया कोशिश किये। एथै एक फायदा एजा बी हुवा कि छोटी-छोरूऐ आपड़ी माटी, आपड़ी बोली और आपड़ी पहाड़ी संस्कृति रै बारै दो बी सूँचो और तैअखू जुड़नै रे कोशिश बी किए। म्हारै रीति-रिवाज, म्हारा चाल-चौलन, म्हारै लोकगीत, नाच-गाणा, खाणा-पीणा, देबी-देबतै, रिश्ते-नातै, म्हारी बोली रै नवै-पुराणै शब्द - ए सब कुछ म्हारी नवी पीड़ी रै ई बचाऊणो। एजी बेरै री पत्रिकै री तैंई छोटी-छोरूऐ आर्टिकल लिखणै दे खूब मैहनत किए। पहाड़ी अनुभाग रै सब आर्टिकल तामू सबी खै आछै लागौलै, म्हारै इणे आशा छाड़ेदे।

हृतिक कुमार
कला स्नातक, तृतीय वर्ष

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना का शीर्षक	रचनाकार
1.	मेरै गाँव रा मेला	कुलदीप मंगनेटा
2.	म्हारो हिमाचल	वर्षा शमेट
3.	हिमाचलअ रा नज़ारा	हृतिक कुमार

मेरै गाँव रा मेला

मेरै गाँव रो नाम छाजपुर औसौ। ईच्छे कौई तरह रै मेले मनाये जाओ पर तिन्दा एक प्रसिद्ध मेला हो दखडान मेला। छाजपुर ए बड़े धूमधाम रा मनाया जाओ। दखडान मेला छाजपुर देव महासु महाराज रा मेला औसौ। दुई दुसौ रे मेले दे पहले दुस देवता सभाडसु महाराज आओ और मेले रा आरम्भ कौरौ तेति बासिये हो हमारा मेला शुरू। हिमाचल प्रदेश रै बड़े बड़े पहाड़ी कलाकार हो एस मेले दे बोदेदे और हिमचलो री हर जागे दु लोग इन देखदे आयेदे हो। गाँव रै जु लोग हो एजे दुस बड़े खुश हो होयेदे।

कुलदीप मंगनेटा
बीए द्वितीय वर्ष

म्हारो हिमाचल

हिमाचल प्रदेश एक पहाड़ी इलाका औसा। देवी-देवताओं रे भूमे औसा। इआ रौने आले भोले-भाले लोग आपणी कला कौशल, संस्कृति खी पूरे संसार दे विख्यात औसा। हिमाचल प्रदेशो री पहाड़ी बोली कविता, नाटक, निबंध और अनुवाद रे क्षेत्र दे सराहनीय भूमिका औसा। पहाड़ी बोली रै विकासौ री तेई हमारे माहाविद्यालयो री पत्रिका छापे लागे जैयरा मुख्य उद्देश्य आपणी संस्कृति और रीति-रिवाज रा मान-सम्मान करुणा ओसा। आजकालौ रे लोग आपणी रीति-रिवाज भूली गोये। ऐ बड़ी शरमों री बात औसा। आज कालके लोग बाहरी रीति-रिवाज के महत्व ज्यादा देआ। ऐजे कारणें खू हमारे संस्कति और रीति-रिवाज जडी खू खत्म होए लागा।

हमारे जुब्बलों से इलाको एक सुन्दर इलाको आसो अर इलाके रे आपणी पहचान औसा। एसरी पहचान औसा कि इंदे मेले और अनेक त्यौहार बड़ी धूमधाम कौरे मनाई। हमारे इलाके रे लोग आपणी पूरानी संस्कृति रीति-रिवाज रखना रो प्रयास कौरा।

आज-काला रे विद्यार्थी रो काम केवल पढ़ना-लिखनो ही नहीं होणो चाई, तिनरो काम आपणी संस्कृति रो ख्याल रखणे भी औसा। जैबे आमें विद्यार्थी लोग ही आपणी पुरानी संस्कृति भुली दे लेगे, तैबे कुण जीवित छाडा लो। आमे आपणी संस्कृति से प्रचार पूरा इलाका दे कौरणे चांई।

वर्षा शमेट
बीए द्वितीय वर्ष

हिमाचलअ रा नज़ारा

म्हारा हिमाचल बड़ा शोभाला ऊंचटी धारों रा देश औसो,
घोणे जंगलों और बोंदी नदियां ऐथेरी प्रकृति री पहचान औसो,
देवी-देवते रा वास ऐनोरे मेले ऐथेरी आस्था रा प्रतीक मानो।

देखते जोगा मुलुक म्हारा, साथी रिती रिवाज़ पुराणा,
बांकी वेशभूषा सीदा सादा बाणा,
निछले जियो रे लोग एथे मिलिजुलियो आपणा कारोबार देखो।
खेतों दे म्हारे कोदा चौलाई, क्यारों दै धानो टमाटरों लाओ,
बागो दा डाला सेबों रा चेंई, आपणी मेहनत अपीये खाओ।

माई रेणुका, तारा देवी, हाटेश्वरी, ज्वालामुखी,
भीमकाली रे गुण गाओ
साथी देवते महासु, बिज़टो, शिखड़, लांकड़ा, शिरगुलो री
सुखना दे दुरो दूरी दू भग्तो आओ।

पशुओं री हामें सेवा करणी घीवे- दूधे रोटी खाणी
साज़े संग्रादिये आपमें इष्टो खे रोट चढ़ाओ।
आच्छे माड़े वकते हामे एकी दूजे रा संभाला राखणा,
दूरो- दूर रे यात्री बोलो "हिमाचलो रा नज़ारा" देखणा ।

हृतिक कुमार
बीए तृतीय वर्ष

युवा महोत्सव और अंतर-महाविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लेते सरस्वती नगर महाविद्यालय के विद्यार्थी

चित्रांकन -प्रियांशी